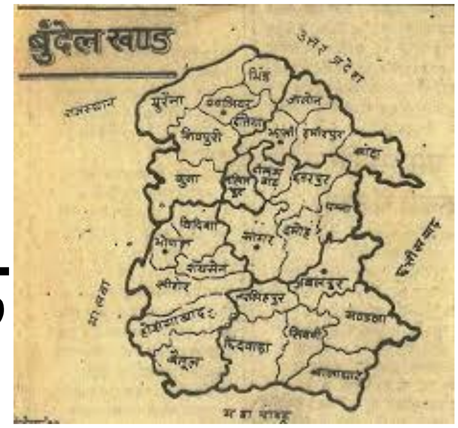
अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





लोक कहावतें व मुहावरे
Folk ProverbSayings Idioms

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

लोक कहावतें व मुहावरे **Folk ProverbSayings Idioms**

अध्याय शीर्षक	लोक कहावतें व मुहावरे
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन/ ISBN	978-93-5906-820-6
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण/मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ/साभार/सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Folk ProverbSayings Idioms**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – लोक कहावतें, लोकोक्तियां व मुहावरों का संक्षिप्त वर्णन

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

लोक कहावतें व मुहावरे

हर काल में, हर देश में और हर भाषा में लोक साहित्य पाया जाता है। अधिकतर लोक साहित्य उस समय उत्पन्न हुआ जब लिखने और पढ़ने के पर्याप्त साधन उपलब्ध नहीं थे। तब लोक साहित्य का प्रसार अधिकतर मौखिक रूप से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हुआ करता था।

लोक साहित्य के विविध रूप

प्रत्येक सभ्यता में लोक कथाएं, किम्वदन्तियां व जनश्रुतियां किसी न किसी रूप में पाई जाती हैं। दादी नानी की कहानियां भी लोक कथाएँ होती हैं जो किसी समय बच्चों के लिए अत्यधिक आकर्षण का केन्द्र हुआ करती थीं। मनोरंजन के बहुत से साधन सहज ही उपलब्ध होने के कारण अब बच्चों के लिए उनका कोई महत्व नहीं रहा। चुटकुले और पहेलियां भी एक प्रकार का लोक साहित्य है, जिन का प्रचार व प्रसार आजकल सोशल मीडिया के द्वारा बहुत अधिक हो रहा है। लोकगीत एक ऐसी विशिष्ट विधा है जिसमें लोक साहित्य व लोक संगीत का अनुपम मिश्रण देखने को मिलता है। लेकिन इन सबसे इतर लोक साहित्य में सबसे विशिष्ट स्थान कहावतों का है। कहावत का शाब्दिक अर्थ है –ऐसी बात जो बार बार कही जाए। कहावत या लोकोक्ति में कोई अनुभव की बात बहुत संक्षेप में सरल लोक भाषा में कुछ ऐसे ढंग से कही जाती है कि जिस में मनोरंजन भी हो और कुछ सीख भी मिले।

कहावते या मुहावरे हिंदी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है ''कही हुई बातें'' यदि हम इसके अर्थ पर विचार करते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक कही हुई बात कहावत नहीं होती बल्कि जिस कहावत में जीवन के अनुभव का सार व संक्षेपण चमत्कृत ढंग से प्रस्तुत किया जाए, उसे कहावत कहा जाता है।

परिभाषा

जिस शब्द समूह या वाक्य द्वारा जीवन के अनुभव का संक्षेपण सुन्दर और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जाता है, उस शब्द समूह या वाक्य को कहावत कहते हैं। उदाहरण के तौर पर कोई कहता है कि मैं अकेला ही कुआं खोद लूंगा, इस पर सभी ने उसे व्यक्ति के हंसी उड़ाते हुए कहा कि व्यर्थ की बातें करते हो। ''अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता'' यहां कहावत का प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ है एक व्यक्ति के करने से कोई कठिन काम पूरा नहीं होता।

कहावत को सूक्ति सुभाषित और लोकोक्ति भी कहते हैं। इनमें से कहावत शब्द ही उपयुक्त है क्योंकि सूक्ति या सुभाषित का अर्थ है सुन्दर युक्ति या बात। लोकोक्ति शब्द इसलिए उपयुक्त नहीं है क्योंकि लोकोक्ति का अर्थ ''लोक साधारण की युक्ति'' होती है।

कहावत और मुहावरों में थोड़ा सा अंतर है जो निम्न है।

मुहावरा	कहावत
मुहावरा एक वाक्यांश है।	कहावत एक वाक्य है।
मुहावरे का स्वतन्त्र रूप से प्रयोग होता है।	कहावत का स्वतन्त्र रूप से प्रयोग नहीं होता।
मुहावरे में उद्देश्य विधायक बन्धन नहीं होता लेकिन अर्थ के स्पष्ट से लिए इसका प्रयोग किया जाता है।	कहावत में उद्देश्य और विधायक का पूर्ण विधान होता है इसलिए अर्थ शास्त्र स्पष्ट हो जाता है।
मुहावरे किसी बात को कहने का विचार अथवा अनुभव का मूल है।	कहावत उसे कथन में व्यक्त किए गए तरीका अथवा पद्धति है।
मुहावरे में काल वचन तथा पुरुष के प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है।	कहावत में उसके रूप में किसी अनुरूप परिवर्तन हो जाता है।
मुहावरे का प्रयोग लाक्षणिक अर्थ अथवा अप्रस्तुत व्यंजना के लिए होता है।	कहावत का प्रयोग प्रायः अन्योक्ति व्यक्त करने के लिए होता है।

लोक कहावतें व मुहावरे **Folk ProverbSayings Idioms**

कहावतों में निम्न विशेषताएं पाई जाती हैं–

1 संक्षिप्तता

कहावत चाहे कविता के रूप में हो यह वाक्य रूप में अधिकतर कहावतें एक या दो पंक्ति की ही होती हैं। यदि कोई दोहा या चौपाई कहावत के रूप में प्रयोग हो रही हो तो भी आमतौर पर उसकी एक ही पंक्ति कहावत के रूप में प्रयोग करते हैं जैसे–प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं। जहां काम आवे सुई कहा करे तलवार इत्यादि।

2 भाषा

अधिकतर कहावतें तत्कालीन लोक भाषा में कही गई हैं। यही उनकी सर्वग्राह्यता का सबसे बड़ा कारण भी है और यही कारण है कि अधिकतर हिंदी कहावतें शुद्ध हिंदी में न होकर कबीरदास जैसी पंचमेल खिचड़ी भाषा में हैं।

3 लयात्मकता

अधिकतर पुरानी कहावतें तुकान्त कविता के रूप में कही गई हैं। इस गेयता के कारण कहावतों को याद करने और बोलने में बड़ी सहायता मिलती है।

4 शिक्षा

अधिकतर कहावतों में कुछ अनुभवी व सयाने लोगों द्वारा समाज के सामान्य व्यक्तियों को कुछ सीख दी गई है। यह कहावतों का सबसे सकारात्मक पहलू है और यही उनके व्यापक प्रयोग का सबसे बड़ा कारण भी है।

5 हास्य पक्ष व मनोरंजन

बहुत सी कहावतों में लोगों को सीख इस प्रकार दी गई है कि किसी को बुरा भी न लगे और सब का मनोरंजन भी हो जाए– जैसे– मुर्गा बांग न देगा तो क्या सवेरा न होगा। ऐसा कहकर मजाक में ही किसी को उसकी हैसियत बताई जा सकती है।

6 कहावतों का उद्‌गम

अधिकतर कहावतें जनता के बीच में उत्पन्न हुई हैं। उन कहावतों को सबसे पहले किसने कहा और किस संदर्भ में कहा यह अज्ञात है। कुछ कहावतें लोक कथाओं पर आधारित हैं– जैसे–

अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा।
सीख उसी को दीजिए जाको सीख सुहाए, सीख जो दीन्ही बांदरा, चिड़िया का घर जाए इत्यादि।

मुहावरे

1 मुहावरों की परिभाषा
2 मुहावरों की क्या विशेषताएँ हैं
3 मुहावरें कितने प्रकार के होते हैं
4 मुहावरों के कुछ उदाहरण– मुहावरे और उनके अर्थ वाक्य प्रयोग की सूची

1 मुहावरों की परिभाषा

ऐसे वाक्यांश, जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराये, मुहावरा कहलाता है।

दूसरे शब्दों में मुहावरा भाषा विशेष में प्रचलित उस अभिव्यक्तिक इकाई को कहते हैं, जिसका प्रयोग प्रत्यक्षार्थ से अलग रूढ़ लक्ष्यार्थ के लिए किया जाता है।

साधारण अर्थ में मुहावरा किसी भाषा में आने वाला वह वाक्यांश है, जो अपने शाब्दिक अर्थ को न बताकर किसी विशेष अर्थ को बताता है।

2 मुहावरो की विशेषता

2,1 मुहावरे का प्रयोग वाक्य के प्रसंग में होता है, अलग नही। जैसे– कोई कहे कि 'पेट काटना' तो इससे कोई विशेष अर्थ प्रकट नहीं होता है। इसके विपरीत, कोई कहे कि 'मैंने पेट काटकर' अपने लड़के को पढ़ाया, तो वाक्य के अर्थ में एक संकेत, सुन्दरता और एक लय प्राप्त हो जाती है।

2,2 मुहावरा अपना असली रूप कभी नही बदलता अर्थात उसे पर्यायवाची शब्दों में परिवर्तित नहीं किया जा सकता। जैसे–'कमर टूटना' एक मुहावरा है, लेकिन इसके स्थान पर 'कमर टूटने' के पर्यायवाची शब्द 'कटिभंग' जैसे– शब्द का प्रयोग गलत होगा।

2,3 मुहावरे का शब्दार्थ नहीं, उसका विशेष अर्थ ही ग्रहण किया जाता है; जैसे खिचड़ी पकाना'। ये दोनों शब्द जब मुहावरे के रूप में प्रयुक्त होंगे, तब इनका शब्दार्थ नहीं लिया जाता। लेकिन, वाक्य में जब इन शब्दों का प्रयोग होगा, तब विशेष अर्थ होगा– 'गुप्त रूप से सलाह करना'।

2,4 मुहावरे का अर्थ प्रसंग के अनुसार होता है। जैसे– 'लड़ाई में खेत आना'। इसका अर्थ 'युद्ध में शहीद हो जाना' है, न कि लड़ाई के स्थान पर किसी 'खेत' का चला आना।

2,5 हिन्दी के अधिकतर मुहावरों का सीधा सम्बन्ध शरीर के भिन्न–भिन्न अंगों से है। यह बात दूसरी भाषाओं के मुहावरों में भी पायी जाती है; जैसे– मुँह, कान, हाथ, पाँव इत्यादि पर अनेक मुहावरे प्रचलित हैं। हमारे अधिकतर कार्य इन्हीं के सहारे चलते हैं।

3 मुहावरों के प्रकार

मुहावरों को निम्नलिखित आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता है–

3,1) सादृश्य	पर आधारित
3,2) शारीरिक अंगों	पर आधारित
3,3) असंभव स्थितियों	पर आधारित
3,4) कथाओं	पर आधारित
3,5) प्रतीकों	पर आधारित
3,6) घटनाओं	पर आधारित

3,1) सादृश्य पर आधारित मुहावरे बहुत से मुहावरे सादृश्य या समानता पर आधारित होते हैं। जैसे– चूड़ियाँ पहनना, दाल न गलना, सोने पर सुहागा, कुंदन–सा चमकना, पापड़ बेलना आदि।

3,2) शारीरिक अंगों पर आधारित मुहावरे हिंदी भाषा के अंतर्गत इस वर्ग में बहुत मुहावरे मिलते हैं। जैसे– अंग–अंग ढीला होना, आँखें चुराना, अँगूठा दिखाना, आँखों से गिरना, सिर हिलाना, उँगली उठाना, छाती पर साँप लोटना, तलवे चाटना, दाँत खट्टे करना, नाक रगड़ना, पीठ दिखाना, मुँह काला करना आदि।

3,3) असंभव स्थितियों पर आधारित मुहावरे इस तरह के मुहावरों में वाच्यार्थ के स्तर पर इस तरह की स्थितियाँ दिखाई देती हैं जो असंभव प्रतीत होती हैं। जैसे– पानी में आग लगाना, पत्थर का कलेजा होना, जमीन आसमान एक करना, सिर पर पाँव रखकर भागना, हथेली पर सरसों जमाना, हवाई किले बनाना, दिन में तारे दिखाई देना आदि।

3,4) कथाओं पर आधारित मुहावरे कुछ मुहावरों का जन्म लोक में प्रचलित कुछ कथा–कहानियों से होता हैं। जैसे– टेढ़ी खीर होना, एक और एक ग्यारह होना, हाथों–हाथ बिक जाना, साँप को दूध पिलाना, रँगा सियार होना, दुम दबाकर भागना, काठ में पाँव देना आदि।

3,5) प्रतीकों पर आधारित मुहावरे कुछ मुहावरे प्रतीकों पर आधारित होते हैं। जैसे– एक आँख से देखना, एक ही लकड़ी से हाँकना, एक ही थैले के चट्टे–बट्टे होना, तीनों मुहावरों में प्रयुक्त 'एक' शब्द 'समानता' का प्रतीक है।

इसी तरह से डेढ़ पसली का होना, ढाई चावल की खीर पकाना, ढाई दिन की बादशाहत होना, में डेढ़ तथा ढाई शब्द 'नगण्यता' के प्रतीक है।

3,6) घटनाओं पर आधारित मुहावरे कुछ मुहावरों के मूल में कोई घटना भी रहती है। जैसे– काँटा निकालना, काँव–काँव करना, ऊपर की आमदनी, गड़े मुर्दे उखाड़ना आदि। उपर्युक्त भेदों के अलावा मुहावरों का वर्गीकरण स्त्रोत के आधार पर भी किया जा सकता है। हिंदी में कुछ मुहावरे संस्कृत से आए हैं, तो कुछ अरबी–फारसी से आए हैं। इसके अतिरिक्त मुहावरों की विषयवस्तु क्या है, इस आधार पर भी उनका वर्गीकरण किया जा सकता है। जैसे– स्वास्थ्य विषयक, युद्ध विषयक आदि। कुछ मुहावरों का वर्गीकरण किसी क्षेत्र विशेष के आधार पर भी किया जा सकता है। जैसे– क्रीडाक्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले मुहावरे, सेना के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले मुहावरे आदि।

यहाँ पर कुछ प्रसिद्ध मुहावरे, उनके अर्थ और वाक्य में प्रयोग सहित दिए जा रहे है

Bhagya
भाग्य

अन्त बुरे का बुरा। बुरे काम का बुरा नतीजा, अन्ते गति सो मति। मरते समय व्यक्ति के मन में जो भाव रहते हैं वैसी ही उस की गति होती है। एक ऋषि को वन में एक मृग शावक मिला जिसकी मां हिरनी उसे जन्म देते ही मृत्यु को प्राप्त हो गई थी। उन्होंने दयावश उसे अपने आश्रम में ला कर पाल लिया। उन्हें उस से इतना मोह हो गया कि अपने अंतिम समय पर भी वे उस की चिंता में ही डूबे रहे। इसके फलस्वरुप उन्हें हिरन की योनि में जन्म लेना पड़ा।

अनहोनी होती नहीं, होती होवनहार (अनहोनी होनी नहीं, होनी हो सो होय)। होनी बलवान है। जो नहीं होना है वह आपके लाख चाहने पर भी नहीं होगा और जो होना है वह हो के रहेगा।

मनुज बली नहिं होत है समय होत बलवान, भीलन लूटीं गोपियाँ वहि अर्जुन वहि बान। समय अच्छा हो तो मनुष्य बलवान हो जाता है। समय खराब आने पर वही मनुष्य निर्बल हो जाता है। भगवान कृष्ण के गोलोक गमन और यादव पुरुषों के मारे जाने के बाद अर्जुन द्वारिका की स्त्रियों की सुरक्षा के लिए उन को अपने साथ हस्तिनापुर ले कर जा रहे थे। रास्ते में भीलों ने उन पर आक्रमण कर के उन स्त्रियों को लूट लिया। अर्जुन का गांडीव और वाण कुछ नहीं कर पाए।

मार गुसैंया, तेरी आस। जब स्त्रियाँ पूरी तरह पति पर आश्रित थीं तो पति यदि उन्हें मारे पीटे तब भी यह कहती थीं, कि तू चाहें हमें मार ले तब भी तेरे ही आसरे हैं। मां जब बच्चे को मारती है तब भी वह यही कहता है। जब राजा और जमींदार जैसे लोग गरीब पर अत्याचार करते हैं तो वह भी ऐसा ही बोलता है। हमारे ऊपर जब भी कोई कष्ट आय हमें ईश्वर से यही कहना चाहिए।

खुदा मेहरवबान तो गधा पहलवान (किस्मत मेहरबान तो गधा पहलवान)। कोई पढ़ाई में पीछे रहने वाला बंदा यदि सिफारिश के बल पर अच्छी नौकरी पा जाए तो उससे ज्यादा काबिल लोग कुढ़ कर यह कहावत बोलते हैं।

घर की दाही वन गयी, वन में लागी आग। अभागा और प्रताड़ित व्यक्ति कहीं भी जाए दुर्भाग्य उस का साथ नहीं छोड़ता। दाही– जली।

दिन आया रावण मरे, राम मिले बनबास। सब समय की बात है बुरा समय आने पर रावण जैसा सर्वशक्तिमान व्यक्ति भी मारा गया।

दिन चोखे होवें व्यापार चले और न्यौते आवें, दिन आड़े होवें तो माल घटे और पाहुने आवें। अच्छे दिन होते हैं तो व्यापार भी चलता है, आमदनी होती है और निमंत्रण मिलते हैं। दिन बुरे होते हैं तो व्यापार भी नहीं चलता, घाटा होता है और घर में मेहमान भी आ जाते हैं जिन के ऊपर खर्च भी करना पड़ता है।

दो हाथ दो पाँव मिलें तो चौपाया भी बन सकते हैं और चतुर्भुज भी। दो लोग मिल कर काम करें तो महान काम भी कर सकते हैं (भगवान के समान चतुर्भज बन सकते हैं) और नीचता की पराकाष्ठा भी कर सकते हैं (पशुओं के समान चौपाए बन सकते हैं)

Bhojan
भोजन

रोटी कारन छोड़ कर कुटुम देस परिवार, लाख कोस जाकर बसें रोटी ढूंढनहार। रोटी कमाने के लिए आदमी क्या क्या नहीं करता। जीविका ढूँढने के लिए आदमी को परिवार, कुटुंब और देश को छोड़ कर दूर देश जा कर बसना पड़ता है।

रोटी कारन जाल में फंसे पखेरू आए, रोटी कारन आदमी लाखों पाप कमाए। भोजन के लालच में पक्षी जाल में आ कर फंसता है, पेट भरने के लिए आदमी क्या क्या पाप नहीं करता।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

रोटी कारन लश्करी रन में सीस कटाए, रोटी कारन रैन दिन गीत गवेसर गाए। जीविका के लिए सैनिक रणभूमि में शीश कटवाता है, जीविका के ही लिए गायक दिन रात गाना गाता है। लश्करी– लश्कर में रहने वाला सिपाही।

भटा भर्ता (बैगन का भर्ता) न खाए, तो दुनिया में काहे को आए। बुन्देलखंड में बैगन के भर्ते को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। वहाँ के लोगों का कहना है कि यदि बैंगन का भर्ता नहीं खाया तो मनुष्य का जन्म लेना बेकार है।

भूखे बेर, अघाने गाड़ा, ता ऊपर मूली का डांड़ा। भूखे पेट पर बेर खाना चाहिए, पेट भरने के बाद गन्ना और उसके ऊपर मूली का सेवन करना चाहिए।

खांड दही जो घर में होय, बांके नैन परोसे जोय, बा घर ही बैकुंठा होय। घर में बढ़िया खाद्य सामग्री हो और आग्रह कर के खिलाने वाली पत्नी हो तो घर में ही बैकुंठ धाम है

खाना पराया है पर पेट तो पराया नहीं है। मुफ्त का मिल रहा हो तो इस का अर्थ यह नहीं कि इतना खा लो कि बीमार हो जाओ।

खाइए मन भाता, पहनिए जग भाता। इंसान को खाना तो अपने मन का खाना चाहिए पर पहनना वह चाहिए जो दूसरों को उसके ऊपर अच्छा लगे।

खाकर आवे आलस, नहा के होवे चौकस। खाना खा कर आलस आता है और नहाने के बाद स्फूर्ति।

रोटी आधी कीजिए सब्जी को दोगुना, पानी तिगुना कीजिए हांसी को चौगुना। अच्छे स्वास्थ्य के लिए बहुत उपयोगी सुझाव है। रोटी जितनी खाते हैं उससे आधी खाएं और सब्जी दोगुनी खाएं, पानी तीन गुना पियें और खूब हंसें।

निन्ने पानी जे पियें, हर्र भूंज के खाय, दूदन ब्यारु जे करै, तिन घरै वैद ना जाय।

थोड़ा थोड़ा खाय, न मरे न मुटाय। थोड़ा थोड़ा खाने वाला मोटा भी नहीं होता और जल्दी मरता भी नहीं है। (क्योंकि कम खाने से बीमारियाँ कम होती हैं)।

खाकर हगे, कबहुं न अघे। कुछ लोगों की खाना खाते ही शौच जाने की आदत होती है। ऐसे लोगों का पेट कभी नहीं भरता।

देवदार औ चन्दन टोरा, खस का इत्र मिलावें, करें उबटनों देह लगा के गरमी में सुख पावें। देवदार, चंदन और खस को मिला कर उबटन करने से ठंडक पड़ती है।

खाके जल्दी चलिए कोस, मरिए आप दैव के दोस। खाना खाके फ़ौरन लम्बी दूरी चलना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। (ऐसा करने वाला व्यक्ति अपनी गलती से मरता है और ईश्वर को दोष देता है)।

खाज चली जाय, खुजाने की आदत न जाय। खुजली की बीमारी खत्म भी हो जाए तब भी ....
खाना कुखाना उपासे भला, संगत कुसंगत अकेले भला। (भोजपुरी कहावत) कुपथ्य खाने से भूखा रहना अच्छा है और बुरी संगत से अकेला रहना अच्छा है।

टेंटी बेर काल के मीत, खाएँ किसान और गावें गीत। टेंटी और बेर जैसे फल अकाल के दिनों में ग़रीबों के काम आते हैं।

खाय कै मूते सोवे बाऊँ, काय को वैद बसावे गाऊँ। स्वास्थ्य के विषय में बहुत से लोक विश्वास प्रचलित हैं जिन में से एक यह भी है– खाना खा कर तुरंत मूत्र त्याग करे और बायीं करवट सोए तो व्यक्ति स्वस्थ रहता है (फिर वह गाँव में वैद्य क्यों बसाएगा)।

ताता खाए छाँव में सोए, उस के पीछे बैद रोए। जो गर्म खाना खाता है और छाँव में सोता है वह बीमार नहीं पड़ता (इस कारण वैद्य को रोना पड़ता है)।

ठंडो नहावे तातो खावे, ऊ घर वैद कबहुं न जाय। जो ठंडे पानी से नहाए और गर्म खाना खाए, वह बीमार नहीं पड़ता।

खाय चना, रहे बना। चना खाने वाला लम्बे समय तक स्वस्थ रहता है।

डर तो अधिक खाने में है। कम खाने से आदमी कमजोर हो सकता है पर मरता नहीं है, अधिक खाने से तरह तरह की बीमारियाँ होती हैं और जल्दी मृत्यु हो सकती है।

घर में नारी आंगन सोवे, रन में चढ़ के छत्री रोवे, रात को सतुआ करे बियारी, घाघ मरे तिन्ह की महतारी। जो घर में पत्नी के होते हुए आंगन में सोता है, जो क्षत्रिय रण में रोता है, जो कोई रात में सत्तू का सेवन करता है, इन सब की माएं रो रो के मर जाती हैं।

खाय तो घी से, नहीं तो जाय जी से। दाल और रोटी में घी के बिना कोई स्वाद नहीं है। घी न मिले इस से तो अच्छा है कि जान चली जाए।

अन्न खाय मन भर, घी खाय दम भर। अन्न उतना खा सकते हो जितनी भूख हो पर घी उतना ही खाना चाहिए जितना पचा सको।

अन्न मुक्ता, घी युक्ता। अन्न को भरपेट (मुक्त हो कर) खाना चाहिए और घी को सोच समझ कर खाना चाहिए।

अन्न से मरे काम से न मरे। अधिक खाने से आदमी मर सकता है पर अधिक काम से कोई नहीं मरता।

चिवड़ा दही बारह कोस, पूड़ी अठारह कोस। पूड़ी के मुकाबले चिवड़ा दही जल्दी पच जाता है, इसलिए अगर अधिक दूर जाना है तो पूड़ी खा कर जाना चाहिए।

अन्न ही तारे, अन्न ही मारे। खाने से ही आदमी जिन्दा रहता है, और अधिक खाने से मरता भी है। अन्न को ले कर युद्ध भी होते हैं, जिनमें अनेक लोग मारे जाते हैं।

अन्न ही नाचे, अन्न ही कूदे, अन्न ही तोड़े तान। पेट भरा होने पर ही सब तरह की मस्ती सूझती है।

अमली मिसरी छांड़ि के खैनी खात सराह। अमली अमल (नशा) करने वाला, खैनी एक प्रकार का तम्बाखू। जिसको तम्बाखू की लत होती है वह मिश्री जैसी स्वादिष्ट चीज़ को छोड़ कर तम्बाखू को शौक से खाता है।

अल्पाहारी सदा सुखी। कम खाने वाला सुखी रहता है। (अधिक खाने से रोग होते हैं और घर का बजट भी बिगड़ता है)।

माँगना न आवे भीख, तो सुरती खाना सीख। तंबाखू खाने वाला कितना भी धनी हो तब भी तंबाखू मांग के खाना सीख जाता है, उसी पर व्यंग।

मर्द गया खटाई में, औरत गई ढिठाई में, दूकान गई ठठाई में। पहले के लोग मानते थे कि खटाई खाने से पुरुषों की यौनशक्ति कम हो जाती है इसलिए ऐसा कहा गया है कि मर्द ने खटाई खाई तो काम से गया, औरतें ढिठाई (हठ, त्रिया हठ) में जाती हैं और दूकान के बाहर यदि चार लोग खड़े हो कर हंसी ठठ्ठा करने लगें तो व्यापार चौपट हो जाता है।

अघाया ढोर जुगाली करे। सम्पन्न लोगों का मजाक उड़ाने के लिए, पान खाने वाले का मजाक उड़ाने के लिए।

हर्र बहेड़ा आंवला, घी शक्कर संग खाए, हाथी दाबे कांख में, साठ कोस ले जाए। लोक विश्वास है कि हरड़, बहेड़ा और आंवले को घी व चीनी के साथ खाने से बहुत ताकत आती है।

आँख में अंजन, दांत में मंजन, नितकर नितकर नितकर।
कान में तिनका नाक में उँगली मतकर मतकर मतकर। बच्चों को दी जाने वाली सीख

आंखन अंजन, दांतन नोन। भूखों राखें चौथो कोन।
ताजो खावे, बाएं सोय, ताको रोग कबहुं न होय।

चौथो कोन एक चौथाई। जो व्यक्ति आँखों में नित्य काजल डालता हो, दांतों में नमक से मंजन करता हो, भूख से पौना भोजन करे, ताजा खाना खाए और बाईं करवट सोए, वह बीमार नहीं पड़ता

आदमी पहले शराब पीता है, फिर शराब आदमी को पीती है। अधिकतर लोग पहले केवल शौक शौक में शराब पीते हैं। फिर वे उसके आदी हो जाते हैं और अपनी इज्जत, धन दौलत और स्वास्थ्य सब बर्बाद कर लेते हैं।

'खाबे कों मउआ, पैरबे कों अमौआ,
मउआ मेवा बेर कलेवा गुलगुच बड़ी मिठाई। इतनी चीजें चाहो तो गुड़ाने करौ सगाई। ।

गरीबी के कारण महुआ को मेवा, बेर को कलेवा (नाश्ता) और गुलगुच(महुआ का पका हुआ फल) को सर्वोत्तम मिष्टान्न का गौरव मिला है।

मउआ मोरें भुँजे धरे हैं, लटा धरे हैं कूट। ग्योंड़े होकें साजन कड़ गये, कौन बात की चूक।

अपने प्रियतम के आने का संदेश पाकर महुआ भूनकर रख लिए हैं और लटा कूट कर। भुने हुए महुओं को कूट कर उनमें गरी, चिरौंजी आदि मेवा मिलाकर छोटी रोटी (कुचैया) की तरह बनाया हुआ भोजन/खाद्य 'लटा' कहलाता है, जो इस अंचल का विशिष्ट भोजन रहा है। नायिका ने ऐसे ही विशिष्ट भोज्य बनाये थे, पर उसके साजन गाँव के पास से निकल गए और उसके घर नहीं आए–

चैत मीठी चीमरी, बैसाख मीठो मठा, जेठ मीठी डोबरी, असाढ़ मीठे लटा।
सावन मीठी खीर–खाँड़, भादों भुँजे चना, क्वाँर मीठी काँकरी ल्याव कोंरी टोर कें। ।
कातिक मीठी कुदई दही डारो मोर कें, अगहन खाव जूनरी भुर्रा नीबू जोर कें।
पूस मीठी खीचरी गुर डारो फोर कें, माँव मीठे पोंड़ा बेर फागुन होरा बालें। ।
समै–समै की मीठी चीजें सुगर खबैया खाबें। ।

चौत्र चना, वैशाखे बेल, जेठ शयन अषाढ़े खेल। चैत में चना, वैशाख में बेल खाने तथा जेठ की दोपहरी में सोने एवं आषाढ़ में खेलकूद करने से शरीर स्वस्थ और निरोग रहता है।

चैतै गुर, बैसाखै तेल, जेठै मउआ असाढ़ै बेल।
सावन भाजी भादों मही, क्वाँर करेला कातिक दही।
अघनै जीरो पूसै धना, माघै मिसरी फागुन चना।
इतनी चीजें खैहौ जभई, मरहौ नईं तो परहौ सही।

फागुन का मेह बुरो, बैरी का नेह बुरो, साला घर बीच बुरो, बिगड़ा भानेज बुरो (घर में साला बुरा और नाराज भांजा बुरा)।

चैत गुड, क्वार करेला , भादों मूली खाय, पैसा खरचौ गांठ को, रोग बिसावन जाय।
चैत में गुड, क्वार में करेला़ और भादों में मूली खाना हानिकारक है। पैसा खर्च होता है और रोग भी आते हैं।

मांस खाए, मांस बढ़े, घी खाए, खोपड़ी, दूध पिए तो चल पड़े, अस्सी बरस की डोकरी।
डोकरी– बुढ़िया। कहावत का अर्थ एकदम स्पष्ट है।

मूंगफली ऊपर पानी पी लो, खांसी हो जायेगी, काने से ब्याह कर लो हांसी हो जायेगी।

किसी लड़की की काने से शादी हो जाय तो वह सबकी हँसी का पात्र बन जाती है।

खीरा खाए फिर ओस में सोवे, ताको वैद कहां तक रोवे। खीरे को लोग ठंडी तासीर वाला मानते थे। कोई आदमी खीरा खा कर ओस में सो जाए तो बीमार पड़ेगा ही, वैद्य इसमें क्या कर सकता है।

खीरा सिर तें काटिए, मलियत नमक बनाय, रहिमन करुए मुखन को, चहिअत इहै सजाय।
खीरे का सर काट कर नमक लगा कर मलते हैं जिस से उसकी कड़वाहट दूर हो जाए। जो लोग कड़वा बोलते हैं उनके साथ भी ऐसा ही व्यवहार होना चाहिए।

खिचड़ी तेरे चार यार, घी, पापड़, दही, अचार।
खिचड़ी खाने का असली मज़ा इन चार चीजों के साथ है।

खिचड़ी की तारीफ़ की, दांतों में चिपक गई। किसी की तारीफ़ करने से वह गले पड़ जाए।

खिचड़ी खाते नीक लागे, बटुली माजत पेट फटे। (भोजपुरी कहावत) खिचड़ी खाते समय अच्छी लगती है और बरतन धोते समय बहुत परेशानी होती है। सुविधाएँ सब चाहते हैं पर काम कोई नहीं करना चाहता।

खावे पौना, जीवे दूना। कोई व्यक्ति जितना खा सकता है उससे पौना (तीन चौथाई) ही खाने की आदत डाल ले तो वह लंबे समय तक जियेगा।

खावे मोट, तोड़े कोट। मोटा अनाज खाने से अधिक ताकत आती है। कोट(किला) तोड़ देते हैं।

खावे जैसो अन्न, होवे तैसो मन्न। बेईमानी से पैदा किया हुआ अन्न खाओगे तो बुद्धि भ्रष्ट होगी और ईमानदारी की रोटी खाओगे तो मन निर्मल रहेगा।

कोदों का भात, किन भातों में, ममिया सास, किन सासों में।
कोदों एक घटिया अनाज माना जाता है। कोदों से बने भात की गिनती भातों में नहीं होती। इसी प्रकार ममिया सास जबरदस्ती की सास है, उसकी गिनती सासों में नहीं होती।

कोदों दे के नहीं पढ़े। कोदों जैसी घटिया चीज दे के पढ़े होते तो शिक्षक भी घटिया मिलता और शिक्षा भी घटिया मिलती।

कोदों दे के पूत पढ़ाए, सोलह दूनी आठ। कोदों जैसी घटिया चीज दे कर घटिया शिक्षा का घटिया फल।

कोदों परस के माठा मांगन गये। कोदों को पचाने के लिए मट्ठा आवश्यक होता है। कोई व्यक्ति कोदों को थाली में परस कर मट्ठा मांगने गया है। ऐसे लोग जो योजना बना कर काम नहीं करते।

कोदों में घी खोवे, मूरख से दुख रोवे। कोदों जैसे घटिया अनाज में घी डालना बेकार है और मूर्ख व्यक्ति से अपना दुःख कहना भी बेकार है,

कोदों सबा अन्न न, धी दामाद धन्न न। कोदों और सबा घटिया प्रकार के अनाज हैं, जिन्हें लोग अन्न की श्रेणी में नहीं मानते हैं। कहावत में तुकबन्दी कर के दूसरी बात और बताई गई है जो इस से सम्बंधित नहीं है। पुत्री और दामाद व्यक्ति का धन नहीं होते (बेटी को पराया धन कहा गया है), जबकि पुत्र एक प्रकार का धन है।

गुड़ कड़वा लगे तो जानो ज्वर का जोर। बिना बात मुँह कड़वा हो रहा हो तो बुखार ही है

घी गुड़ आटा तेरा, फूंक आग और पानी मेरा। बिना लागत लगाए साझा करने की कोशिश करना।

घी गुड़ मीठा या दुलहन। बरातियों को अच्छा खाना प्रिय है पर दूल्हे को दुल्हन ही अधिक प्रिय है।

चढ़ते पित्त उतरते बाय, ताते गोरख भूंज के खाय। भांग की महिमा बताई गई है। भांग चढ़ते समय पित्त को शांत करती है और उतरते समय वायु कोशांत करती है । बाय– वायु रोग, ताते– इस कारण से।

ज्यादा खाय, जल्द मरि जाय, सुखी रहे जो थोड़ा खाय। जो ज्यादा खाता है वह बीमार हो कर जल्दी मर जाता है, जो कम खाता है वह सुखी रहता है। आज की दुनिया में मोटापा सब से बड़ी बीमारी है।

तुर्कनी के पकाए में क्या कसर। मुसलमान स्त्रियाँ बीच–बीच में चख कर देख लेती है इसलिए उनके बनाए खाने में कोई कमी नहीं होती। पहले के समय में हिंदू स्त्रियां खाना बनाने के बाद पहले भगवान को भोग लगाते थीं और फिर घरवालों को खिलाती थीं। वे खाना बनाते समय बीच में चखती नहीं थीं जिससे खाना झूठा न हो जाए। इस कारण से यह संभावना रहती थी कि खाने में कोई कमी हो सकती है।

दारु तो हाथी को भी पटक देती है। हाथी जैसा ताकतवर प्राणी भी यदि शराब पी लेगा तो नशे में ढेर हो जाएगा। कहावत द्वारा शराब से बचने की सलाह दी गई है।

दाल भात चोखा, कबहुं न करे धोखा। दाल भात से यहाँ अर्थ है सादा और पौष्टिक भोजन। सादा भोजन सबसे अच्छा है, जिससे स्वास्थ्य अच्छा रहता है और उसे कमाने के लिए गलत काम भी नहीं करने पड़ते।

दोउ बेर जो घूमे फिरे, तीन बेर जो खाए, सदा निरोगी चंग रहे, जो प्रातः उठ न्हाए।
जो व्यक्ति सुबह शाम सैर को जाता है (अर्थात व्यायाम करता है), तीन बार से अधिक भोजन नहीं करता है और प्रातः उठ कर नहाता है वह सदा निरोगी रहता है।

पहले पिए जोगी, बीच में भोगी, पीछे रोगी। योगी लोग खाना खाने के पहले पानी पीते हैं और भोगी लोग बीच में। जो खाने के बाद पानी पीते हैं वे सदैव रोगी रहते हैं।

पानी पीजे, चार महीने डाल का, चार महीने पाल का, चार महीने ताल का।
पानी के लिए कहा गया है कि चैत, बैशाख, जेठ और आषाढ़ घड़े का पानी पीजिए (पाल का)। सावन, भादों, क्वार, कार्तिक नल का पानी पीजिए (डाल का) और बाकी चार महीने कुएँ या तालाब का पानी पीजिए (ताल का)। डाल का और पाल का ये शब्द आम तौर पर फलों के लिए प्रयोग करते हैं। डाल का फल अर्थात तुरंत का तोड़ा हुआ, पाल का मतलब रख कर पकाया हुआ।

भादों की छाछ जूतों / भूतों को, कातक की छाछ पूतों को। भादों में छाछ हानिकारक मानी जाती है और कार्तिक में गुणकारी (खाद्य पदार्थों के बारे में ऐसे बहुत से विश्वास/अंधविश्वास पहले के लोगों में भी पाए जाते थे और अब भी पाए जाते हैं)। जूतों के स्थान पर भूतों भी बोला जाता है।

सावन की छाछ भूतों को, जेठ की छाछ पूतों को। पुराने लोग मानते थे कि सावन के महीने में छाछ (मट्ठा) नुकसान करता है और जेठ में बहुत लाभ करता है।

भूख में किवाड़ पापड़ होते हैं। (भूख में गूलर ही पकवान)। बहुत भूख लगी हो तो जो भी खाने को मिले अच्छा लगता है।

भूख में चने बादाम, भूख में चना चिरौंजी, भूख में चने मखाने भूख में चना भी मेवा लगता है।

महुआ मेवा, बेर कलेवा, गुलगुच बड़ी मिठाई, इतनी चीजें चाहो तो गोंडवाने करो सगाई।
गुलगुच– महुए का पका फल। बुन्देलखंड के गोंडवाना क्षेत्र में महुआ और बेर के पेड़ बहुत हैं। वहाँ के लोगों को मजबूरी में ही सही, ये बहुत प्रिय हैं।

Byapar

रुपये को रूपया खींचता है। पूँजी से ही पूँजी पैदा होती है।

लेखा जौ जौ, बख्शी सौ सौ। कहावत का शाब्दिक अर्थ है कि जहाँ बात लिखत पढ़त की आती है वहाँ जौ का भी हिसाब रखना चाहिए, चाहे आप उस व्यक्ति को सैकड़ों रुपये बख्शीश में दे देते हों। तात्पर्य यह है कि आपस दारी में भी जब बात हिसाब किताब की आती है तो छोटी छोटी चीजों का भी पूरा हिसाब सही से रखना चाहिए। इस को इस प्रकार भी कहते हैं।– हिसाब बाप बेटे का, बख्शीश लाख की।

व्यापार अपने हुनर में हर आदमी चोर है। अपने अपने व्यवसाय में हर व्यक्ति कुछ न कुछ हेराफेरी करने का जुगाड़ कर लेता है, और मज़े की बात यह है कि वह इस को जायज भी ठहराता है।

गई नार जो घर घर डोले, गया घर जहं उल्लू बोले,
गया राज जहाँ माने गोले, गया वनिक जो कम कर तोले।
पराए घरों में डोलने वाली स्त्री का सम्मान नहीं होता, जिस घर में उल्लू बोले उस का सर्वनाश हो जाता है, जिस राजा के यहाँ गोलों(दासों) की चलती हो वह भी नष्ट हो जाता है, जो बनिया कम तोलता है उस की साख भी समाप्त हो जाती है। गया– नष्ट हो गया।

आओ मेरी हाट में, देऊं तेरी टाट में। लालची बनिया इस फ़िराक में रहता है कि कोई ग्राहक उसकी दूकान में आए और वह उसे ठगे।

धीरज बनिज, उतावल खेती। व्यापार में धैर्य की आवश्यकता होती है और खेती में जल्दी निर्णय ले कर पहले काम करने की।

मछली भले दे दूं पर मछली कहाँ से आई, ये न बताउं। अपनी आमदनी में से किसी की सहायता भले ही कर दो पर अपने व्यापार के भेद किसी को मत बताओ।

मझधार में नाव नहीं बदलनी चाहिए। कोई काम जब नाज़ुक मोड़ पर हो तो उस समय अपने साधन बदलने से बचना चाहिए। उदाहरण के लिए जब गंभीर मरीज आधा ठीक हो चुका हो तो डॉक्टर नहीं बदलना चाहिए।

माया गंठी, विद्या कंठी। पैसा वह काम आता है जो हमारे पास मौजूद हो (उधार में बंटा पैसा या बाद में मिलने वाला पैसा वक्त पर काम नहीं आता)। विद्या से भरी हुई कितनी भी पुस्तकें हमारे पास रखी हों, समय पर वही विद्या काम आएगी जो हमें याद हो। (विद्या कंठी दाम अंटी)।

मापा, कनिया और पटवारी, भेंट लिए बिन करें न यारी। (मापा– भूमि नापने वाला अमीन, कनिया– कानूनगो)। ये सभी सरकारी कर्मचारी बिना रिश्वत/रिश्वत/भेंट लिए काम नहीं करते।

मौत दीजो पर मंदी न दीजो। व्यापारी मंदी से सबसे अधिक घबराते हैं।

खेती कर कर हम मरे, बहुरे के कोठे भरे। किसान प्राण पण से खेती करता है और बदहाल रहता है। साहूकार और व्यापारी अपना घर भरते हैं।

गंधी बेटा टोटा खाए, डेढ़ा दूना कहीं न जाए। इत्र के व्यापार में कई गुना मुनाफा है। जब इत्र का व्यापारी यह कहता है कि उसे घाटा हुआ है तो इसका मतलब यह होता है कि उसे केवल डेढ़ दो गुना ही मुनाफा हुआ है।

खुशामद खरा रोजगार। खुशामद सबसे सच्चा व्यापार और सफलता का मन्त्र है।

खुशामद से ही आमद है, इसलिए बड़ी खुशामद है। खुशामद से सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं, इसीलिए खुशामद बड़ी चीज है। जो दूसरों की खुशामद करना जानते हैं वही जीवन में सफल होते हैं।

जो खुशामद करे खल्क, उससे सदा राजी है। सच तो यह है कि खुशामद से ही खुदा भी राजी है।

गंगा के मेले में चक्की खोदने वाले को कौन पूछे। जिस माल की जहाँ खपत हो वहीं उस का व्यापार करना चाहिए। चक्की के पाटों में छोटे छोटे गड्ढे बना कर उन को खुरदुरा बनाया जाता है तभी

पिसाई होती है। कुछ दिन चलाने के बाद पाट फिर चिकने होने लगते हैं तो उन्हें फिर खोदना पड़ता है। गंगा के मेले में लोग चक्की ले कर जाते ही नहीं हैं इसलिए वहां चक्की खोदने वाले का क्या काम।

नाज बौहरौ ले गयौ, भुस ले गयी बयार। फसल कटने पर अनाज तो सूदखोर ले जाता है और भूसा हवा में उड़ जाता है। बोहरा– उधार देने वाला बनिया। खेती करने वाले किसान को कुछ हाथ नहीं आता।

गहरा बोने वाला और रिश्वत/रिश्वत/भेंट देने वाला, घाटे में नहीं रहते। बीज को गहरा बोने में मेहनत अधिक लगती है लेकिन उपज अच्छी होती है इसलिए सब वसूल हो जाता है। हाकिम को रिश्वत/रिश्वत/भेंट देने में पैसा खर्च होता है लेकिन व्यक्ति उस से अधिक लाभ कमा लेता है।

चलनी चम्मा, घोड़ लगम्मा, कायस्थ गुलम्मा, ये तीनों नहिं कोऊ कम्मा। चमड़े की चलनी, घोड़े की लगाम और नौकरी करने वाला कायस्थ, ये तीनों किसी और काम के लायक नहीं होते।

चाल चपल, मुख चरपरा, निपट निर्लज्जा होय, नाक काट गुद्दी धरे, करे दलाली सोय। तेज चलने वाला, अधिक बोलने वाला और निर्लज्ज व्यक्ति ही दलाली कर सकता है।

पर घर नाचें तीन जन, कायस्थ, बैद, दलाल। कायस्थ (कचहरी में काम करने वाले पेशकार व अन्य मुलाजिम), वैद्य और दलाल ये दूसरों के धन पर ऐश करते हैं।

बिन बिचौलिया छिनाला नहीं। कोई भी गलत काम जैसे चोरी, डकैती, रिश्वत/रिश्वत/भेंट खोरी, वैश्या वृत्ति आदि दलालों के बिना नहीं होते।

तू तेली का बैल, तुझे क्या सैर, लगा रह घानी से। जो व्यक्ति दिन रात काम में पिसता रहता है उस का मजाक उड़ाने के लिए। घानी– कोल्हू।

तेल पिला कर घी निकाले। गाय भैंस से अधिक घी प्राप्त करने के लिए उन्हें तिल और बिनौले की खली खिलाई जाती है। जो व्यापार में लाभ प्राप्त करना चाहता है वह लागत भी लगाता है।

तेली का तेल गिरा हीना हुआ, बनिए का नून गिरा दूना हुआ। तेली का तेल जमीन पर गिर जाए तो बेकार हो जाता है, बनिए का नमक गिर जाए तो वह उस को उठा लेता है और धूल मिट्टी मिल कर नमक दूना हो जाता है। मतलब बनिया कभी नुकसान नहीं उठाता।

नामी बनिया का नाम बिकता है। जिस व्यापारी का नाम हो जाता है उस के नाम से माल बिकता है। आजकल के लोग तो खास तौर पर ब्रांड के पीछे पागल रहते हैं।

पड़िया के साथ भैंस मुफ्त। आम तौर पर किसी बड़ी चीज़ के साथ छोटी चीज मुफ्त मिलती है। जहाँ छोटे लाभ के साथ बड़ा लाभ स्वतः ही हो रहा हो वहाँ यह कहावत कही जाती है। भोजपुरी में इस कहावत को इस प्रकार कहते हैं– पड़िया मोल भैंस सुगौना

भागलपुर जाइए न, जाइए तो कुछ लाइए न, और लाइए तो रोइए न। कहावत में कहा गया है कि भागलपुर में मिलने वाला सामान घटिया होता है। सत्य मालूम नहीं क्या है।

रंडियों की खरची और वकीलों का खरचा पेशगी ही दिया जाता है। वेश्याएं और वकील अपनी फीस पहले ही ले लेते हैं क्योंकि बाद में लोग मुकर जाते हैं।

हज का हज, वनिज का वनिज। एक सयाना व्यक्ति हज करने गया। वहाँ से कुछ सामान ले आया जिसे उसने यहाँ आ कर बेच लिया और मुनाफ़ा कमा लिया। एक पन्थ दो काज।

Budha

बूढ़ा

अच्छी मति जो चाहो, बूढ़े पूछन जाओ। समझदारी भरी राय चाहिए हो तो बूढ़े लोगों के पास जाइए क्योंकि उन के पास लम्बा अनुभव होता है।

प्याज को जितना छीलो उतनी बदबू। पुरानी बातों को जितना उघाड़ो उतना ही मनमुटाव बढता है।

लुगाई बूढ़ी हो जावे तो भी पीहर की याद आवे। स्त्री बूढ़ी हो जाए तो भी मायके को याद करती है।

रवि हू की इक दिवस में तीन अवस्था होए। कोई कितना भी बड़ा आदमी क्यों न हो, उतार चढ़ाव सभी के जीवन में होते हैं। सब को प्रकाश देने वाले सर्वशक्तिमान सूर्य को भी एक ही दिन में तीन अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है।

रंडी मांगे रूपया, ले ले मेरी मैया, फक्कड़ मांगे पैसा, आगे बढ़ो भैया। वैश्या रुपये (अधिक धन) मांगती है तो ख़ुशी से दे देते हैं और भिखारी पैसा (छोटी सी राशि) मांगता है तो उसे टरका देते हैं।

पल पखवाड़ा, घड़ी महीना, चार घड़ी का साल। करजदार जब कल कहे तो ताको कौन हवाल।।

कर्जदार पैसा वापस करने की मियाद को टालता रहता है। वह एक पल कहता है तो पखवाड़ा निकाल देता है, एक घड़ी कह कर महीना बिता देता है और चार घड़ी कह कर साल निकाल देता है। अगर वह एक साल कह रहा है तब तो न जाने कभी देगा भी या नहीं।

पूत न माने अपनी डांट, भाई लड़े कहे नित बाँट।
तिरिया करकस कलही होय, नियरे बसें दुष्ट सब कोय।
मालिक नाहीं करें विचार, सबै कहें ये विपत अपार।

पाँच सबसे बड़े कष्ट इस प्रकार हैं– 1 पुत्र आपकी डांट न माने, 2 भाई सम्पत्ति बाँटने के लिए लड़े, 3 स्त्री कर्कशा हो, 4 आस पास दुष्ट लोग बसें और 5 मालिक आपकी परेशानी को न समझे।

बड़े लोगों की डांट दूध मलाई होती है। बुजुर्गों की डांट का बुरा बिल्कुल नहीं मानना चाहिए। इससे केवल हमारी भलाई ही होती है।

Dharma
धर्म

अन्न दान महा दान। किसी भूखे को खिलाना सबसे बड़ा पुण्य है।

अन्न देवता को माथे चढ़ा कर खाओ। अन्न को देवता मानना चाहिए। कभी अन्न का तिरस्कार नहीं करना चाहिए।

मरद तो जुबान बांका, कोख बांकी गोरियां। गाय तो दुधार बांकी, तेज बांकी घोडियाँ।।
बांके से अर्थ यहाँ श्रेष्ठ से है। पुरुष वही श्रेष्ठ है जो जुबान का पक्का हो, स्त्री वह जो श्रेष्ठ संतान को जन्म दे, गाय वह अच्छी है जो दूध अधिक दे और घोडी वह अच्छी है जो तेज चले।

मूंड़ मुंड़ा, जटा रखाए, नगन फिरें ज्यों भैंसा, खलड़ी ऊपर राख लगाए, मन जैसे को तैसा।

ढोंगी साधुओं के लिए। मूंछ मुंडाए हैं, जटाएं बढ़ाए हैं, भैंसे की तरह नंगे घूम रहे हैं, तन पर राख मल रखी है, पर मन शुद्ध नहीं है।

मैना जो मैं ना कहे, दूध भात नित खाए। बकरी जो मैं मैं करे, उलटी खाल खिंचाए।

मैना कहती है मैं ना (मैं कुछ नहीं हूँ), उसे दूध भात मिलता है। बकरी कहती है मैं मैं (मैं ही सब कुछ हूँ), उस की खाल खींची जाती है।

दस भाइयों की बहन कुँवारी डोले। ज्यादा भाई होते हैं तो एक दूसरे पर जिम्मेदारी डाल देते हैं। इस प्रकार की दूसरी कहावत है– सात बेटों की माँ गंगा न पावे।

दस भोला भाला, बीस बावला, तीस तीखा, चालीस चोखा, पचास पका,
साठ थका, सत्तर झूला, अस्सी लूला, नब्बे नागो और सौ भागो।

हर अवस्था के व्यक्ति की विशेषता बताई गई है। 10 वर्ष की आयु में भोला भाला, 20 वर्ष की आयु में जुनूनी, 30 वर्ष की आयु में तेजतर्रार और कड़क, 40 वर्ष की आयु में अनुभवी, 50 वर्ष की आयु में परिपक्व, 60 वर्ष की आयु तक थोड़ा थकने लगता है, 70 वर्ष में भूलना शुरू हो जाता है, 80 में चलना फिरना मुश्किल, 90 में अपनी देखभाल स्वयं नहीं कर सकता इसलिए नंगा रहता है और 100 वर्ष की अवस्था का मतलब अब संसार से कूच का समय आ गया।

पढ़े घर की पढ़ी बिल्ली। जिस खानदान में कुछ लोग पढ़ लिख जाते हैं उस घर के सभी लोग अपने को बहुत काबिल समझने लगते हैं। उनका मज़ाक उड़ाने के लिए।

पहले भोजन फिर स्नान, फिर टट्टी फिर सालिगराम। कायदे से हम पहले शौचादि से निवृत्त हो कर स्नान करते हैं, फिर भगवान की पूजा करते हैं और बाद में भोजन करते हैं। कहावत में आजकल की पीढ़ियों का जिक्र है जो सब काम उलटे करती हैं।

भर फगुआ बुढ़उ देवर लागेंले। होली के मौसम में इतनी मस्ती छाती है कि स्त्रियाँ ससुर से भी देवर के समान मजाक कर लेती हैं। फगुआ– फाग, होली।

भरी जवानी में बुढ़ापे का मजा। कोई जवानी में ढीला ढाला, कमजोर और आलसी हो तो उस का मजाक उड़ाने के लिए ऐसे बोलते हैं।

रामलली के तीन सौ, रामलाल के तीन। 1 रामलली कोई नर्तकी हैं जिनको देखने तीन सौ लोग आते हैं। रामलाल रामकथा सुनाते हैं जिस में तीन लोग आते हैं।

2 नर्तकी को तीन सौ रूपये मेहनताना मिलता है और कथावाचक को तीन रूपये। जिन्होंने प्रेमचन्द की कहानी 'रामलीला' पढ़ी है वे इस बात को भलीभांति समझ सकेंगे।

सब उस्तरे बांधो कोई तलवार न बांधो, कर दो ये मुनादी कोई दस्तार न बांधो।
दस्तार– पगड़ी। सिखों द्वारा कायर हिन्दू जातियों पर किया गया व्यंग्य।

Garibi
गरीबी

अमीर का उतार, गरीब का सिंगार। धनी व्यक्ति के लिए जो वस्तु अनुपयोगी हो जाती है वह भी गरीब के बहुत उपयोग में आ सकती है। विवाह में धनी व्यक्ति की नकल की जाती है।

अमीर की बकरी मरी गाँव भर रोया, गरीब की बेटी मरी कोई न आया। अर्थ स्पष्ट है।

आओ मित्तर जाओ मित्तर घर तुम्हारो है, चून होय तुम्हारे पास तो चूल्हा हमारो है।

अपने जोगी नंगा तो का दिए वरदान। जोगी खुद नंगे हैं तो किसी को क्या वरदान देंगे। जिसके पास खुद के लिए साधन ना हो वो आपको क्या देगा।

अंधरे के भैंस बियाए, सारा गाँव मटकी ले धाए।
(आंधर के गाय बियाइल, टहरी लेके दौरलन)। (भोजपुरी कहावत)

गरीब या अंधे आदमी की गाय भैंस बियाही है तो सारा गाँव मटकी ले कर दौड़ा चला आ रहा है। मजबूर आदमी की मजबूरी का सब फायदा उठाना चाहते हैं। टहरी– मटकी

अब्बर के हम जब्बर हैं, जब्बर के हम दास। निर्बल के ऊपर जोर जमाना और सबल की जी हुजूरी करना।

अन्हरे सियार के पिपरे मेवा। अंधे सियार को पीपल ही मेवा के समान है। मजबूर आदमी को जो मिल जाए वही उसके लिए बहुत है।

माघ नंगे, वैशाख भूखे। बहुत अधिक वंचित। (माघ की ठंड में भी जो नंगा रहे और बैसाख में नया गेहूँ आने के बाद भी भूखा रहे)।

मुर्दे को कफन और देना पड़ता है। गरीब के घर के किसी व्यक्ति की मृत्यु होना अपने आप में इतना बड़ा नुकसान है, ऊपर से उसके अंतिम संस्कार और मृत्यु भोज में और खर्च करना पड़ता है।

मौत, मांदगी, मुकद्दमा, मंदी, मांगनहार, ये पाँचों मम्मा बुरे, भली करे करतार।
मांदगी– बीमारी, मम्मा– 'म' अक्षर से आरम्भ होने वाले शब्द। अर्थ स्पष्ट है।

घर में चूहों की एकादशी। बहुत अधिक गरीबी। (चूहों तक को व्रत रखना पड़ रहा है)।

चुपड़ी और दो दो (मीठा और भर कठौती)। गरीब आदमी के लिए चुपड़ी रोटी एक नियामत है और वो भी दो मिल जाएं तो क्या कहने। कोई अच्छी चीज़ मिल रही हो और वह भी उम्मीद से अधिक तो यह कहावत कही जाती है।

पैसा आते भी दुःख देता है और जाते भी। पैसा कमाने के लिए बहुत से कष्ट उठाने ही पड़ते हैं, पैसा जब आ जाता है तो रखने की चिंता, और अगर चला जाए तब तो कष्ट ही कष्ट।

पैसा माँ, पैसा भाई, पैसे बिन न होय सगाई। सगाई माने आपसी प्रेम भी होता है और सगाई माने विवाह संबन्ध भी होता है। आज के युग में पैसा ही सब कुछ है। उसी पर सारे सम्बन्ध टिके हैं।

भील का घर टोकरी में। बहुत गरीब आदमी के पास इतना कम सामान होता है कि एक टोकरी में आ सकता है।

लछमी जाए तो लच्छन भी जाएं। धन जब तक रहता है व्यक्ति संभ्रांत माना जाता है, धन जाते ही वह घटिया लोगों की श्रेणी में मान लिया जाता है। (उस के व्यवहार में स्वाभाविक रूप से बदलाव भी आ जाता है)।

लड़ें लोह पाहन दोउ, बीच रुई जल जाए। लोहा और पत्थर टकराते हैं तो चिंगारी उपजती है जिस से रूई में आग लग जाती है। दो शक्तिशाली लोगों की लड़ाई में कमजोर लोग बेकार में मारे जाते हैं।

लहंगे का नाड़ा ढीला हो तो नाचना नहीं चाहिए।
जब अपनी हालत कमजोर हो तो इतराना नहीं चाहिए।

सब कुत्ते गया को जाएं तो पत्ते कौन चाटेगा। (सब बिल्लियाँ स्वर्ग को जाएं तो कढ़ाई कौन चाटेगा)।
सभी लोग बड़े और महत्वपूर्ण बन जाएँ तो छोटे काम कौन करेगा। बेराजगारी जरुरी

सब दाढ़ी वाले हों तो चूल्हा कौन फूंकेगा। चूल्हा फूँकने में दाढ़ी जलने का डर रहता है।

हंस बरन बैठक भई, सुआ बरन किलकोट,
सिंह बरन गर्जन भई, गधा बरन भई लोट। बरन– के समान।
कहावत में शराबियों की महफ़िल का वर्णन है– शुरुआत में हंसों की तरह शालीनता से बैठते हैं, फिर तोतों की तरह कोलाहल करते हैं, फिर और नशा चढने पर शेरों की तरह लड़ते भिड़ते हैं और अंत में गधों के समान लोट जाते हैं।

Jati
जाति

तीन कनौजिया तेरह चूल्हे। कनौजिया लोगों के बारे में कहा जाता है कि वे कभी मिल कर नहीं रह सकते। सब के चूल्हे अलग ही जलते हैं।

पंडित, सूर, सुजानवर, रूपवती तिय जान, जहाँ जहाँ ये पग धरें, वहाँ वहाँ सम्मान।
विद्वान व्यक्ति, शूरवीर, बुद्धिमान व्यक्ति और रूपवती स्त्री का हर जगह सम्मान होता है।

जल सूर बामन, रन सूर छत्री। कलम सूर कायस्थ, डर सूर खत्री।
ब्राह्मण ठन्डे पानी में रोज नहाता है (जल शूर), क्षत्रिय युद्ध करने (रण) में शूर होता है, कायस्थ कलम का वीर होता है और खत्री महा डरपोक होता है। खत्रियों से निवेदन है कि कहावत का बुरा न मानें।

जैसे को तैसा मिला, ज्यों बामन को नाई। इनने आशीर्वाद कही उन आरसी काढ़ दिखाई।

ब्राह्मण किसी को आशीर्वाद देते हैं तो बदले में दक्षिणा की आशा रखते हैं। नाई जब किसी को बाल काटते वक्त आरसी में मुँह दिखाता है तो बदले में इनाम की आशा करता है। ब्राह्मण देवता ने दक्षिणा की जुगाड़ में नाई को आशीर्वाद दिया तो नाई ने बदले में आरसी निकाल कर दिखा दी। दो कुटिल व्यक्ति एक से बढ़ कर एक।

गोत्र वाली गाली तो कुत्ते को भी बुरी लगे। जाति सूचक गाली सभी को बुरी लगती है (कुत्ते को भी)।

जाति अहीर मिताई कब करें जब सब मीत मरि जाइ। अहीर से दोस्ती तब करो जब सब दोस्त मर जाएँ।

अहिर मिताई बादर छाँई, होवे होवे नाहीं नाहीं। अहीर की दोस्ती बादलों की छाँव के समान क्षणिक होती है।

बन में अहीर, नैहर में जोय, जल में केवट, काऊ के न होय।
अहीर जब जंगल में हो, पत्नी अपने मायके में हो और केवट जल में नाव खे रहा हो, ये तीनों उस समय किसी के सगे नहीं होते।

तीन जात अलगरजी, नाऊ, धोबी, दर्जी।
हज्जाम, धोबी और दर्जी किसी की परवाह नहीं करते (स्वार्थी होते हैं)।

अनपढ़ जाट पढ़े बराबर, पढ़ा जाट खुदा बराबर।
अनपढ़ जाट खुदा बराबर, पढ़ा जाट गधा बराबर। जाटों की चालाकी पर व्यंग्य।

खातिन ईंधन को क्यूँ जाए, तेलिन रूखा क्यूँ खाए। खातिन– बढ़ई की पत्नी। बढ़ई को लकड़ी के छोटे टुकड़े और छीलन सहज ही उपलब्ध होती हैं और तेली को तेल की कमी नहीं होती।

अहिर, बानिया, पुलिस, डलेवर, नहीं किसी के यारी,
भीतरले में कपट राखल, मीठी बोली प्यारी। (भोजपुरी कहावत)
अहीर, बनिया, पुलिस और ड्राइवर लोग किसी के दोस्त नहीं होते, ऊपर से मीठी बोली बोलते है पर भीतर से कपट रखते हैं।

दगा किसी का सगा नहीं, कर के देखो भाई,
चिट्ठी उतरी बामन ऊपर, नाई नाक कटाई।
किसी को धोखा दे कर आप फायदा नहीं उठा सकते, इस आशय की एक कहानी कही जाती है। एक राजा किसी ब्राह्मण के ऊपर बहुत मेहरबान था। राजा के नाई को यह बहुत नागवार गुजरता था। नाई ने ईर्ष्यावश ब्राह्मण के खिलाफ राजा के खूब कान भरे। राजा उस के षड्यंत्र को नहीं समझ पाया और ब्राह्मण को सजा देने के लिहाज से राजा ने उसे एक बंद चिट्ठी और दो मोहरें दीं और कहा कि कोतवाल को चिट्ठी दे देना। चिट्ठी में लिखा था कि चिट्ठी लाने वाले की नाक काट लेना। सरल हृदय ब्राह्मण ने बाहर निकल कर नाई को बताया कि वह कोतवाल को

कोई महत्वपूर्ण संदेश देने जा रहा है। नाई ने उससे चिट्ठी ले ली और स्वयं ही देने चला गया और अपनी नाक कटा बैठा।

अहिरे के बिटिया के लुरबुर जीव, कब जइहें सास कब चटिहूं घीव।
अहीर की बेटी को घी खाने की आदत होती है। ससुराल में भी वह इसी जुगाड़ में रहती है कि कब घी चाटने को मिले।

अहीर अपने दही को खट्टा नहीं बताता। अपनी चीज़ की बुराई कोई नहीं करता।

अहीर का क्या जजमान, लप्सी का क्या पकवान। अहीर बहुत अच्छा जजमान नहीं है क्योंकि वह अधिक दक्षिणा नहीं दे सकता, उसी तरह जैसे लप्सी अच्छा पकवान नहीं है।

अहीर का पेट गहिर, बामन का पेट मदार।
अहीर का पेट गड्ढा है और ब्राह्मण का पेट ढोल, अर्थात दोनों अधिक खाते हैं।

अहीर खड़ा सामने मैं रूखा खाऊँ? जब सुविधाएं उपलब्ध हों तो मैं परेशानी क्यों उठाऊं।

अहीर, गड़रिया, पासी तीनों सत्यानासी। पुरानी कहावतों में कुछ जातियों के विषय में बातें कही गई हैं, उन में से एक।

अहीर देख गड़रिया मस्ताना। अहीर को पिए देख कर गड़रिए ने भी चढ़ा ली। दूसरे की बुराई का गलत अनुसरण करना।

बावन बुद्धि बकरिया में, छप्पन बुद्धि गड़रिया में। गड़रिये में बकरी से कुछ ही ज्यादा बुद्धि होती है।

अहीर साठ बरिस तक नाबालिग रहें। अहीर साठ साल की आयु तक भी समझदार नहीं होते।

अहीर से जब भेद मिले ज्यों बालू से घी। बालू से घी कभी नहीं निकल सकता इसी प्रकार अहीर से उसके काम का भेद कोई नहीं पा सकता।

धोबी अहीर की कौन मिताई, इनके गदहा उनके गाई।
दो अलग प्रवृत्ति या व्यवसाय वाले लोगों में मित्रता नहीं हो सकती इस बात को मजेदार ढंग से कहा गया है। धोबी के पास गदहा है और अहीर के पास गाय, इनमें मित्रता कैसे हो सकती है।

चार जात गावें हरबोंग, अहीर, डफाली, धोबी, डोम। अहीर, डफाली(डफली बजाने वाला), धोबी और डोम इन चार जातियों के लोग बेसुरा और बेतुका गाते हैं।

धोबी के घर पड़े चोर , वह न लुटा, लुटे ओर। धोबी के घर चोरी होगी तो नुकसान धोबी का नहीं उन लोगों का होगा जिनके कपड़े धोबी धोने के लिए ले कर आया है।

धोबी के घर में आग लगी, न हरष न बिषाद। धोबी के घर में आग लगी तो उसे कोई चिंता ही नहीं है, क्योंकि जो कपड़े जलेंगे वे उसके हैं ही नहीं।

धोबी के बसे या कुम्हार के, गधा तो लदेगा ही।
गरीब और असहाय आदमी कहीं भी रहे उस पर काम तो लादा ही जाएगा।

धोबी के ब्याह, गधे के माथे मोर। धोबी के घर में ब्याह है तो गधे को भी सजाया।

धोबी छोड़ भिश्ती किया, रही घाट के पास।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

धोबी घाट पर कपड़े धोता है और भिश्ती पानी भरता है। किसी स्त्री ने धोबी को छोड़ कर भिश्ती से शादी कर ली, तो भी उसे घाट पर ही रहना पड़ा। स्थान या व्यवसाय बदल कर भी किसी व्यक्ति की स्थिति न सुधरे तो यह कहावत कही जाती है।

आदमियों में नउआ, जानवरों में कउआ।
(नरों में नाई, पखेरुओं में काग, पानी में कछुआ, तीनों दगाबाज)।
जिस प्रकार जानवरों में कौए को धूर्त प्राणी माना जाता है उसी प्रकार मनुष्यों में नाई को चंट चालाक माना गया है। यहाँ नाई से तात्पर्य हज्जाम से नहीं बल्कि हिन्दुओं में रीति रिवाज़ कराने वाले नाई से है।

कोइरी की बिटिया के, न मैके सुख न ससुरारे सुख। कोइरी– सब्जी बोने वाला किसान। गरीब की बेटी को सभी जगह काम अधिक करना पड़ता है और सुख सुविधाएं कहीं नहीं मिलतीं।

कोइरी सिपाही न बकरी मरखनी। किसान योद्धा नहीं बन सकता जैसे बकरी मरखनी नहीं हो सकती।

मक्खी मारुं पंख उखाड़ूँ, तोड़ूँ कच्चा सूत, लात मार कर पापड़ तोड़ूँ, मैं बनिये का पूत।
बनियों की बहादुरी पर व्यंग।

जम से जबर बनिया।
बनिया अपने उधार की उगाही करने के मामले में यमराज से भी बढ़ कर होता है।

बावन बुद्धि बानिया, तरेपन बुद्धि सुनार, सबको ठगे बनिया, बनिया को ठगे सुनार।
बनिया जितना होशियार होता है, सुनार उससे भी अधिक चालाक होता है।

बनिए का लिखा बनिया बांचे। कारोबार के रहस्य दूसरा कारोबारी ही समझ सकता है।

बनिए की उचापत घोड़े की दौड़ सी। बनिए का उधार घोड़े की तरह तेज दौड़ता है।

बनिए की कमाई उसके चूतड़ों में होती है। बनिया गद्दी से चिपक कर बैठता है तभी कुछ कमा पाता है।

बनिए की सलाम बेगरज नहीं होती। बनिया अगर सलाम कर रहा है तो उस का स्वार्थ अवश्य होगा।

बनिक पुत्र जाने कहा गढ़ लेवे की बात। बनिए का बेटा किला खरीदने की बात नहीं सोच सकता। छोटी सोच रखने वाला व्यक्ति बहुत बड़ा काम नहीं कर सकता।

मसालची मरे तो जुगनू हो, यहाँ भी चमके वहां भी चमके।
मशालचियों के सम्बन्ध में कथन है कि वे मरने के बाद जुगनू बन के जन्म लेते हैं (पता नहीं यह तारीफ़ है या व्यंग)। जुगनू को पटबीजना भी कहते हैं।

माँ का पेट कुम्हार का आवा, कोई गोरा कोई काला रे। किसी माँ के कई बच्चों में कोई गोरा और कोई काला हो तो उन्हें समझाने के लिए। कुम्हार के आवे (बर्तन पकाने की भट्टी) में से भी कोई बर्तन पक कर सामान्य रंग का निकलता है, कोई काला हो जाता है।

चिकने गाल तिलनियाँ के, औ जरे भुजे भुरजनिया के।
तेली की औरत के गाल चिकने हो जाते हैं और भड़भूंजे की औरत के गाल काले हो जाते हैं अर्थात व्यक्ति जो काम करता है उसका असर उस के रंग रूप पर पड़ता है।

जो बिगड़ी बनावे सो बनिया।
बनिए जुगाड़ करने में बहुत तेज होते हैं। कोई सामान खराब हो रहा हो उस से भी पैसा कमा लेते हैं।

जान मारे बनिया, पहचान मारे चोर।
बनिया जानने वाले को चूना लगाता है और चोर पहचान की जगह पर चोरी करता है।

जिस का बनिया यार, उसे दुश्मन की क्या दरकार।
बनियों के बारे में कहा गया है कि वे अपने दोस्तों तक की जेब काट लेते हैं। इसी बात पर किसी ने कहा है कि जिस का बनिया दोस्त हो उसे दुश्मनों की क्या जरूरत।

ठग कसाई, चोर सुनार, खाऊ बामन, बली लुहार।
विभिन्न जातियों की विशेषताएं बताई गई हैं। कसाई लोगों को ठगता है, सुनार गहनों में से कुछ न कुछ चुराता जरूर है, ब्राह्मण खाता है और लोहार अत्यधिक बलशाली होता है।

जोड़ने में बनिया, पहनने में पठान, खाने में बामन, झेलने में किसान।
बनिया पैसा जोड़ने में, पठान कपड़े पहनने में, ब्राहण खाने में और किसान मुसीबतों को झेलने में सबसे माहिर होते हैं।

मेव का पूत बारह बरस में बदला लेता है। मेव– राजपूतों की ,की जाति जो अपनी वीरता और प्रतिहिंसक प्रवृत्ति के लिए प्रसिद्ध हैं। कहते हैं कि इस जाति में पिता की हत्या का बदला पुत्र बारह साल बाद भी ले सकता है।

गंगा बही जाय, कलारिन छाती पीटे। कलारिन– शराब बनाने वाली। कलारिन को इस बात की चिंता हो रही है कि सारा पानी बह गया तो शराब कैसे बनाएगी।

मेरे लला के कौन कौन यार, धुनिया, जुलहा और मनिहार।
एक माँ का कथन जो कि अपने पुत्र की घटिया मित्र मंडली से दुखी है।

मोची की जोरू और फटी जूती। जहाँ पर किसी चीज की बहुतायत होनी चाहिए, वहीं पर उस की कमी हो तो यह कहावत कही जाती है।

मोची की नजर जूते पर ही पड़ती है। मोची– जूते बनाने वाला। (आजकल इस नाम की एक बड़ी ब्रांड भी है)। जिसका जो काम होता है वह उससे सम्बन्धित चीजों पर ही गौर करता है।

गगरी दाना, सूत उताना। सूत– शूद्र। गगरी में अनाज होने पर तुच्छ व्यक्ति इतराने लगता है।

गज, गेंडा, कायर पुरुष, एकहि बार गिरन्त, छत्रिय सूर सपूत नर, गिर गिर उठत अनंत।
हाथी, गेंडा और कायर पुरुष एक बार गिर कर फिर उठ नहीं पाते। क्षत्रिय, शूर वीर और सुपुत्र गिर कर भी बार बार उठते हैं।

गदहा मरे कुम्हार का, और धोबन सती होए। किसी और के दुःख पर अनावश्यक शोक मनाना।

गंगा जी के घाट पर बामन वचन प्रमान, गंगा जी को रेत को तू चंदन कर के मान।
जाट गंगा नहाने गया तो एक पंडे ने उसे घेर लिया। हाथ में गंगाजल ले कर कुछ उलटे सीधे मन्त्र पढ़े, जाट को गंगा जी की रेत से तिलक लगाया और बोला बामन का वचन है, तू इस रेत को चंदन मान और जल्दी से इस बामन को गऊ दान कर दे। जाट उस से ज्यादा चतुर था। उस ने एक मेंढकी पकड़ी और पंडे से कहा,
गंगा जी कै घाट पर जाट वचन परमान, गंगा जी की मेंढकी तू गऊ कर के जान (जाट के वचन को प्रमाण मानो और गंगा जी की मेंढकी को गऊ मान कर ग्रहण करो)।

(गरज दीवानी गूजरी, नित्य जिमावे खीर, गरज मिटी गूजरी नटी, छाछ नहीं रे बीर)।
दूध का काम करने वाले लोग अधिकतर गुर्जर जाति के होते थे। उनकी पत्नी गूजरी कहलाती थी। जब तक गूजरी को आप से कोई काम है वह रोज खीर खिलाती है। जैसे ही उस का काम निकल गया वह छाछ देने को भी मना कर देती है।

खटिया खटमल और गाँव तुरक। खाट में खटमल और गाँव में मुसलमान परेशानी का कारण बनते हैं।

गज भर के गाजी मियाँ, नौ गज की पूंछ। बहुत अधिक तामझाम और दिखावा।

बोया न जोता, अल्ला मियाँ ने दिया पोता। बिना मेहनत करे अचानक कोई चीज़ मिल जाए तो।

मुसलमान भी हुए तो जुलाहे के घर। किसी बड़े आदमी के घर होते तो खूब गोश्त बिरयानी उड़ाते। कोई गलत काम भी किया और उस की एवज़ में भरपूर आनन्द भी नहीं उठाया।

गलमिल गलकट सुरसुर हाय हाय। मुसलमानों के चार मुख्य त्यौहारों पर कही गई कहावत। गलमिल– गले मिलने वाली मीठी ईद, गलकट– बकरा काटने वाली बकरीद, सुरसुर– पटाखे छोड़ने वाली शबेरात, हाय हाय– शोक मनाने वाली मुहर्रम।

मुसल्ला पसार, बगल में यार। मुसल्ला– नमाज पढने वाली दरी। नमाज पढ़ने जा रहे हैं और बगल में यार (प्रेमिका) को लिए हैं। ढोंगी नमाजी।

मियाँ का मैल ईद में उतरे। मुसलमानों के कम नहाने पर व्यंग।

बासी भात में अल्ला मियाँ का कौन निहोरा। (बासी भात में ठाकुर साहब का कौन निहोरा)। बासी भात खा कर किसी तरह पेट भर रहे हैं, तो इस में अल्ला मियाँ या ठाकुर साहब की क्या मेहरबानी मानें।

गाँव जले, डोम त्यौहारी मांगे। किसी का कितना भी नुकसान हो रहा हो क्षुद्र लोगों को केवल अपने स्वार्थ से मतलब होता है।

गूजर का दहेज़ क्या, बकरी या भेड़। गूजर दहेज़ में क्या देगा, भेड़ बकरी ही तो देगा।

गूजर किसके असामी, कलाल किसके मीत।
गूजर बहुत अच्छे ग्राहक नहीं होते और शराब बेचने वाले किसी के दोस्त नहीं होते।

घर की धुनियानी, धुने आग पानी। धुनिया उसे कहते हैं जो रुई धुनता है। घर में कोई रुई धुनने वाली होगी तो रुई न मिलने पर और चीजों को धुनने लगेगी।

घर में बीवी पान नरंगी, बाहर मियाँ कलुआ भंगी।
घर में बीवी खूब बन ठन के रहती हैं और बाहर पति बड़ी दीन हीन हालत में काम कर रहा है। भंगी शब्द पर बहुत से लोगों को आपत्ति हो सकती है, पर इससे इतना तो मालूम होता ही है कि उस समय सफाई सेवकों की दशा खराब थी।

चाह चमारी चूहड़ी, सब नीचन की नीच। चाह का अर्थ यहाँ लालच से है। चमारी– चर्मकार जाति की महिला, चूहड़ी– सफाईकर्मी महिला। पुराने जमाने में जब छुआछूत और सामाजिक विषमता का बोलबाला था, तब चर्मकार और सफाई कर्मियों को नीची जाति का कह कर अपमानित किया जाता था (सौभाग्य से अब ऐसा नहीं है)। उस समय की कहावत में लालच करने की वृत्ति को बहुत निम्न कोटि का बताने के लिए चमारी और चूहड़ी से उपमा दी गई है।

जहां न जाए रेलगाड़ी, वहां जाए मारवाड़ी। मारवाड़ी लोग दूर दूर तक व्यापार करते हैं।

छिप के चलें छिपक के काटें, का जानें पर पीरा, जे दुई जात कहाँ से आईं कायथ और खटकीरा।
खटकीरा– खटमल। कायस्थ की तुलना खटमल से की गई है जो छिप कर काटता है।

छत्री का शोहदा, कायस्थ का बोदा। बामन का बैल, बनिया का ऊत।।
क्षत्रिय का बेटा अगर लफंगा हो, कायस्थ का अनपढ़, ब्राह्मण का मूर्ख और बनिए का बेटा ऊत हो तो ये किसी काम के नहीं होते।

छत्री के छै बुधी, बामन के बारह। अहीर के एके बुधी, बोला तो मारूंगा।

(भोजपुरी कहावत) क्षत्रिय के छः बुद्धि होती हैं और ब्राह्मण की बारह। अहीर की एक ही बुद्धि होती है, बोलोगे तो मारूँगा।

छोड़ जाट, पराई खाट। जाटों से मालूम नहीं लोगों को क्यों दुश्मनी थी, उनका मजाक उड़ाने वाली बहुत सी बेतुकी कहावतें बनाई गई हैं। जाट से कहा जा रहा है कि दूसरे की चीज़ पर कब्ज़ा छोड़ दे।

जाट कहे शरमाय, पर लड़े न शरमाए। जाट बोलने में शर्माता है पर लड़ने में नहीं।

जाट बुढ़ापे में बिगड़ा करे। (हरयाणवी कहावत) जाट बूढ़े होने पर ज्यादा मनचले हो जाते हैं।

जाट मरा तब जानिये, जब तेरई हो जाए। (जब चालीसा होए) जाट लोगों में बड़ी कर्मठता और जिजीविषा होती है। उनकी तरक्की से जलने वाले दूसरी जातियों के लोग तरह तरह से उनका मजाक उड़ाने की कोशिश करते हैं। इस कहावत का शाब्दिक अर्थ तो यह है कि जाट का मरना आसान नहीं होता। जब उसकी तेरहवीं हो जाए तो समझो कि जाट वाकई मर गया। व्यवहार में इस कहावत का प्रयोग इस प्रकार करते हैं कि कोई भी काम तब तक पूरा हुआ मत मानो जब तक बिलकुल पक्का न हो जाए।

जात सुभाव ना छूटे, कुकुर टाँग उठा के मूते।
व्यक्ति के जन्मजात स्वभाव छूटते नहीं हैं (जिस प्रकार कुत्ता टांग उठा कर ही मूतता है)।

जोगी का बेटा खेलेगा तो साँप से।
बच्चा अपने घर परिवेश में जो देखता है वही करता है। संपेरे को जोगी भी बोलते हैं।

जंगल देख के गूजर नाचे, चंग देख बैरागी। खीर देख के बामन नाचे, तन मन होवे राजी।
गूजर जंगल देख कर खुश होता है क्योंकि उसे जानवर चराने होते हैं, बैरागी चंग नामक वाद्य यंत्र से प्रसन्न होता है और ब्राह्मण खीर देख कर।

डोम के घर ब्याह, मन आवे सो गा।
डोम लोग अपने घरों पर बहुत अश्लील गीत गाते हैं क्योंकि वहाँ कोई टोकने वाला नहीं होता।

तेलिन से न धोबिन (मोचिन) घाट, इनके मोगरी उनके लाठ। घाट– घटी हुई (कम)। तेली की स्त्री धोबिन या मोची की स्त्री से किसी प्रकार कम नहीं है। उसके पास मूसल है तो इन के पास लट्ठ। जब दो लोग इस बात पर बहस कर रहे हो कि उन में से कौन बड़ा है तो उन का मजाक उड़ाने के लिए।

थैली की चोट बनिया जाने। पूंजी का नुकसान कितना बड़ा नुकसान होता है यह बनिया ही जान सकता है। (क्योंकि उसे केवल खर्च करने के लिए ही नहीं बल्कि व्यापार करने के लिए भी पूंजी चाहिए)।

निर्जलिया एकादशी, करवा चौथ, शिवरात, इन तीनों से कठिन है, लाला की बरात।
बनियों की कंजूसी पर व्यंग्य। जिस प्रकार मनुष्य को निर्जला एकादशी, करवा चौथ और शिवरात्रि के व्रत में दिनभर कुछ खाने को नहीं मिलता, सीधे रात में ही खाने को मिलता है वैसे ही बनिया की बारात में भी कुछ नहीं मिलता।

थैली लगावे सो थैला पावे। व्यापार में पूंजी लगाओगे तभी अधिक कमा पाओगे।

थोड़ा कमावे खरचे घनो, पहला मूरख उस को गिनो।
सबसे बड़ा मूर्ख वह है जो कमाता कम है और खर्च अधिक करता है।

दर्जी का क्या सामान और क्या मुकाम। कहावत उस समय की है जब बड़ी बड़ी टेलर शॉप नहीं हुआ करती थीं और दर्जी लोग अपना सुई धागा ले कर घर घर घूम कर काम करते थे।

दर्जी की सुई, कभी रेशम में कभी टाट में। दर्जी की सुई कीमती रेशम को भी सिलती है और घटिया टाट को भी। किसी ऐसे व्यक्ति या उपकरण के लिए कहावत कही जाती है जो सभी तरह के काम करता हो।

दलाली बेशरम की, सर्राफी भरम की। दौलत करम की, बात मरम की।। दलाली का काम करने के लिए काफी बेशर्मी करनी पड़ती है, सर्राफ वही बड़ा बनता है जो बाजार में अपना भरम बना कर रखे, धन वही कमा सकता है जो कर्म करता हो, बात वही दमदार होती है जिसमें कुछ मर्म हो।

नयी घोसन, उपलों का तकिया।

घोसन– दूध का काम करने वाले घोसी की पत्नी। दूध का नया काम शुरू करने वाली स्त्री अपने काम को महत्वपूर्ण सिद्ध करने के लिए गोबर के कंडों का तकिया लगाती है।

नाई किसका काम सुधारे। हिंदू रीति–रिवाजों में चाहे विवाह हो या अंतिम संस्कार, पंडित के साथ नाई का भी विशेष महत्व होता है। बहुत से काम नाई को ही करने होते हैं। नाई को बहुत चालाक धूर्त माना गया है। इस कहावत में भी यही दर्शाया गया है।

नाई के नौ बुद्धि, ठाकुर के एक ही।

नाई बहुत चतुर (और धूर्त) होता है और ठाकुर मंदबुद्धि (व लट्ठमार)।

नाई पुराना धोबी नया। नाई पुराना और अनुभवी अच्छा होता है जबकि धोबी नया अच्छा होता है क्योंकि उस के हाथों में ताकत और काम का उत्साह अधिक होता है।

नाई, दाई, बैद, कसाई, इनका सूतक कभी न जाई।

पुरानी मान्यता के अनुसार घर में बच्चे का जन्म होने पर दस दिन तक सूतक काल होता है जिस में कोई धार्मिक कार्य नहीं करना होता है, इसी प्रकार घर में किसी की मृत्यु होने पर तेरह दिन का सूतक काल होता है। कहावत में कहा गया है कि नाई, बच्चे का जन्म कराने वाली दाई, वैद्य(डॉक्टर) और कसाई, ये सूतक के बन्धन से मुक्त हैं।

भूखा बामन सोवे, भूखा जाट रोवे। भूखा बनिया हंसे, भूखा रांगड़ कसे।

ब्राह्मण भूखा होता है तो चुपचाप सो जाता है, जाट भूखा होने पर रोता है, बनिया अजीब अजीब हरकतें करने लगता है और रांगड़ (मुस्लिम राजपूतों की एक जाति) लूटपाट के लिए कमर कस लेता है।

लुटा बनिया और पिटा ठाकुर ये राज नहीं खोलते।

बनिया कहीं से लुट कर या ठग कर आया हो और ठाकुर पिट कर आया हो तो ये किसी को बताते नहीं हैं (क्योंकि लोग इन पर हंसते हैं)।

Kapadaa
कपड़ा

शुभ आँख गई, संसार गयो। कान गयो, सुख आयो।

आँख की रोशनी चली जाना संसार का सब से बड़ा दुःख है और कान से सुनाई न पड़ना सुख है (न किसी के मुंह से अपनी बुराई सुनोगे न दुखी होगे)।

Krashi
कृषि

खुद करे तो खेती, नहीं तो बंजर हैती।

खेती खुद करने से ही कामयाब होती है। दूसरों के ऊपर छोड़ देने से खेत बंजर हो जाता है।

जो हल जोतै खेती वाकी, और नहीं तो जाकी ताकी। खेती का लाभ उसी को हो सकता है जो स्वयं खेती करे। दूसरों पर खेती छोड़ने से दूसरे लोग ही उसका लाभ उठाते हैं।

खाद पड़े तो खेत, नहीं तो कूड़ा रेत। खाद से ही खेत फलता फूलता है।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

क्वार का सा झल्ला, आया बरसा चल्ला। क्वार के महीने में बहुत हल्की सी बारिश होती है (बहुत थोड़े समय के लिए)। कोई व्यक्ति बहुत थोड़े समय के लिए आए तो मज़ाक में कहते हैं

दिन में गर्मी रात में ओस, कहे घाघ वर्षा सौ कोस।
अगर दिन में गर्मी हो और रात में ओस गिरे कहते हैं कि दूर दूर तक वर्षा की कोई संभावना नहीं है।

सावन केरे प्रथम दिन उगत न दीखे भान, चार महीना पानी बरसे जानो इसे प्रमान।
सावन के पहले दिन यदि सूर्य बादलों में छिपा रहे तो चार महीने अच्छी वर्षा होगी। (घाघ और भड्डरी की कहावतें)

रात में बोलै कागला, दिन में बोलै स्याल। तो यूँ भाखै भड्डरी, निशचौ पड़े अकाल।
भड्डरी कहते हैं कि रात में कौआ बोले और दिन में सियार बोले तो अकाल पड़ना निश्चित है। भाखे– बोले।

दिन में बादल रात में तारे, चलो कन्त कहीं करें गुजारे।
यदि चौमासे में कभी दिन में बादल छाए रहें पर रात में तारे दिखने लगें तो यह वर्षा न होने(अकाल पड़ने) के लक्षण हैं। ऐसे में किसान की स्त्री अपने पति को सुझाव दे रही है कि गुजारा करने के लिए कहीं और चलो।

खड़ी खेती, गाभिन गाय, तब जानो जब मुँह में जाय।
खेती पक कर तैयार खड़ी हो तो भी किसान बहुत खुश नहीं होता। जब फसल कट कर खलिहान में पहुँच जाए और खाने को मिल जाए तभी वह खुश होता है। इसी प्रकार गाय गर्भवती हो तो तब तक खुश नहीं होना चाहिए जब तक वह ब्याह न जाए और दूध पीने को न मिल जाए।

सावन घोड़ी, भादों गाय। माघ मास में भैंस बियाय, जी से जाय या खसमहिं खाय।
इन महीनों में प्रसव होने से ये मर सकती हैं या इनके मालिक का अनिष्ट हो सकता है।

अनाज खाओ पर बीज बचाओ। जीवित रहने के लिए अनाज खाना आवश्यक है पर बोने के लिए बीज बचाना भी जरूरी है, प्रकृति का दोहन भी करो और सरंक्षण भी।

मिरग, बान्दरा, तीतर, मोर, ये चारों खेती के चोर।
हिरन, बन्दर, तीतर और मोर ये चारों खेती को नुकसान पहुँचाते हैं।

मटका में पानी गरम, चिड़ी न्हावे धूर। चिऊंटी अंडा ले चले, तो वर्षा भरपूर।।
घाघ के अनुभव के आधार पर यदि मटके में पानी ठंडा नहीं हो रहा है, चिड़िया धूल में नहा रही है और चींटी अपना अंडा लेकर जा रही है तो भरपूर वर्षा होगी।

चौमासे में लोमड़ी जो नहिं खोदे गेह, निस्चय करके जान लो नहिं बरसेगो मेह।
चौमास आने पर यदि लोमड़ी खोद कर अपना घर नहीं बनाती तो समझ लो वर्षा नहीं होगी।

भूला फिरे किसान जो कातिक मांगे मेंह। कार्तिक की वर्षा से कोई लाभ नहीं होता।

टीले ऊपर चील बोले, गली गली में पानी डोले।
घाघ के अनुसार यदि टीले के ऊपर चील बैठ कर बोले तो समझ लो बहुत बारिश होगी।

चौमासे का ज्वर और राजा का कर। इन दोनों से मुश्किल से निजात मिलती है।

तपे जेठ तो बरखा हो भरपेट। जेठ में अधिक गरमी हो तो वर्षा अच्छी होती है।

तपे मृगशिरा जोय, तो बरखा पूरन होय। मृगशिरा नक्षत्र में अधिक गर्मी पड़े तो पूर्ण वर्षा होती है।

जो कहुं माघे बरसे जल, सब नाजों में होगा फल।

माघ के महीने में जल बरसता है तो सभी अनाजों की पैदावार अच्छी होती है। (घाघ) माघ की वर्षा को महोटे/महाउट कहते हैं।

माहे गेहूँ, जेठ गुड़, भादों मास कपास। बहू मायके, धी घरै, राखे होय बिनास।।
माघ के महीने में गेहूँ, जेठ में गुड़ और भादों में कपास घर में रखने से हानि होती है। इसी प्रकार बहू को मायके में रखने और बेटी को घर में रखने से हानि होती है।

खुर तातो, खर मातो।
बैसाख में मौसम बदलने के साथ जैसे ही गधे के खुर गरम होते हैं वैसे ही उस पर मस्ती छाने लगती है।

आए गए से पूछे बात, करे न खेती अपने हाथ। जो अपने हाथ से खेती न करे और आए गए लोगों से ही खेती का हाल पूछता रहे उसकी खेती कभी सफल नहीं हो सकती।

आगाय सो सवाय(अगाई बोवाई, सवाई लवाई)। समय से पूर्व खेती के काम करने से सवाया लाभ होता है

अब पछिताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।
खेती जब तैयार खड़ी होती है तो उसकी रखवाली करनी होती है वरना चिड़ियों का झुंड आकर फसल के दाने खा जाता है। यह कहावत ऐसे व्यक्ति के लिए कही जाती है जो आलस में समय पर जरूरी काम नहीं करता और जब काम बिगड़ जाता है तो पछताता है।

मंगलवार परै दीवारी, हँसे किसान मरे व्यापारी। यदि दीपावली मंगलवार को पड़े तो फसल अच्छी होती है।

भादों न बरसे, भरे न खेत, माता न परसे भरे न पेट।
जब तक भादों में वर्षा न हो तब तक खेत में पानी पूरा नहीं पड़ता, और जब तक माँ न खिलाए तब तक पेट नहीं भरता।

भादों की धूप में हिरन काले हो जाते हैं।
भादों की धूप बहुत तेज होती है इस बात को थोड़ा बढ़ा चढ़ाकर कहा गया है।

भादों की बरखा, एक सींग गीला एक सींग सूखा।
भादों की बारिश कहीं होती है और कहीं नहीं होती, इस बात को हास्यपूर्ण ढंग से कहा गया है।

माघ पंद्रह और पूस पचीस, चिल्ला जाड़ा दिन चालीस।
अत्यधिक ठंड (चिल्ला जाड़ा) चालीस दिन पड़ता है, पन्द्रह दिन माघ महीने के और पच्चीस दिन पूस के।

माघ मास की बादरी और क्वार की घाम। ये दोनों जो कोई सहै करै परायो काम।।
खेत में मजदूरी वही कर सकता है जो माघ की वर्षा और क्वार की धूप सहन कर ले।

जब बरखा चित्रा में होए, सगरी खेती जावे खोय।
यदि चित्रा नक्षत्र में वर्षा होती है तो खेती नष्ट हो जाती है।(घाघ की कहावतें)

जब बरसेगा उत्तरा, नाज न खावे कुत्तरा।
उत्तरा नक्षत्र में वर्षा हो तो इतना अन्न पैदा होता है कि कुत्ते भी खाते खाते थक जाएं।

माघ में बादर लाल घिरे, साँची मानो पाथर परै।
माघ में यदि लाल बादल घिर कर आ, तो निश्चित समझो कि ओला गिरेगा।(घाघ की कहावतें)

जो पुरवा पुरबाई पावे, झूरी नदिया नाव चलावे।
पूर्वा नक्षत्र में पुरवाई चले तो सूखी नदी में भी नाव चलने लगेगी, अर्थात बहुत वर्षा होगी।(घाघ की कहावतें)

पछवा चले, खेती फले। खेती के लिए पछवा हवा (पश्चिम से आने वाली शुष्क हवा) लाभदायक होती है।

पछुआ हवा उसावे जोई, घाघ कहें घुन कबहु न होई। ओसाना– अनाज को हवा में उड़ा कर भूसी को अलग करना। पछवा हवा में अनाज को ओसाया जाए तो उसमें घुन नहीं होता।(घाघ की कहावतें)

माघ का जाड़ा, जेठ की धूप, बड़े कष्ट से उपजे ऊख।
गन्ने की खेती में बहुत मेहनत करनी पड़ती है, माघ का जाड़ा और जेठ की धूप सहन करनी पड़ती है।

माघ के टूटे मरद और भादो के टूटे बरध, कभी नहीं जुड़ते। बरध– बैल। माघ में जिस आदमी का शरीर कमजोर हो गया और भादों में जिस बैल का शरीर कमजोर हो गया उनका स्वास्थ्य फिर नहीं सुधरता।

माघ जाड़ा न पूस जाड़ा, जो चले बतास तो जाड़ा।
माघ हो या पूस हो, जाड़ा तभी ज्यादा सताता है जब हवा चलती है। बतास– हवा।

पूस न बइए, पीस खइए।
पूस में गेहूँ बोने से फसल होने की सम्भावना कम है। इस से अच्छा तो उसे पीस कर खा लो। बइये– बोइये।

अंडुवा बैल, जी का जवाल। स्वतन्त्र और उच्छृंखल व्यक्ति को सांड के समान बताया गया है जिसे संभालना मुश्किल काम होता है। (अंडुवा– बिना बधियाया हुआ बैल अर्थात सांड)। सांड से खेती नहीं कराई जा सकती इस लिए बछड़े के अंडकोष नष्ट कर के उसे बैल बना दिया जाता है जोकि नपुंसक और शांत स्वभाव का होता है)।

नीला कंधा बैंगन खुरा, कभी न निकले बरधा बुरा।
जिस बैल के कंधे नीले और खुर बैंगनी हों वह निश्चित रूप से अच्छा ही होता है।(घाघ की कहावतें)

असाढ़ चूका किसान और डाल चूका बंदर।
आषाढ़ में जो किसान बुवाई करने से चूक जाता है वह पछताता ही रह जाता है (जिस प्रकार डाल से डाल पर छलांग लगाने वाला बन्दर डाल पकड़ने से चूक जाए तो पछताता है)।

असाढ़ में खाद खेत में जावै, तब भरि मूठि दाना पावै।
खाद को असाढ़ के महीने में डालने से फसलों में अच्छी पैदावार होती है।

थोथे बादर क्वार के, ज्यों रहीम घहरात, धनी पुरुष निर्धन भये, करै पाछिली बात।
थोथे बादर– बिना पानी के बादल। जिस प्रकार क्वार के महीने में बिना पानी वाले बादल गरजते हैं, उसी प्रकार धनी/सेवानिवृत लोग जब निर्धन हो जाते हैं तो अपने पिछले दिनों की बातें करते हैं।

गोबर में कीड़ा पड़ें, पपीहा मीठे बोल सुनाय, अफीम चमड़ा गीले होंय, वर्षा हो संशय न कोय। अर्थ स्पष्ट है।

आतुर खेती, आतुर भोजन, आतुर कीजे बेटी ब्याह।
खेती, भोजन और बेटी का ब्याह, इन तीनों कामों में शीघ्रता करनी चाहिए।

आदमी फूले भात खाकर, खेत फूले खाद खाकर। जिस प्रकार मनुष्य अच्छा भोजन कर के स्वस्थ होता है, उसी प्रकार खेत उपयुक्त खाद लगाने से अच्छी उपज देता है।

अधिक खाद औ गहरी फाल, ढो ढो नाज होय बेहाल। खाद अधिक देने और गहरा जोतने से फसल अच्छी होती है। इतनी अधिक कि किसान अनाज ढो ढो के थक जाए।

अगली खेती आगे आगे, पिछली खेती भागे भागे। समय से की गई खेती हमेशा लाभ देती है। समय निकल जाने पर बोया बीज भाग्य पर निर्भर होता है। भागे– भाग्य से।

अगले पानी पिछले कीच। जो पहले पानी भरने आता है उसे पानी मिलता है, बाद में आने वाले को कीचड़ मिलती है। तात्पर्य है कि यदि कुछ पाना चाहते हो तो आलस्य मत करो।

अगसर खेती अगसर मार, कहें घाघ तें कबहुँ न हार। जो पहले खेती करता है और जो लड़ाई में आगे बढ़ कर मारता है वह कभी नहीं हारता। असगर– आगे बढ़ कर।

अगहन में मुसवौ के सात जोरू। (भोजपुरी कहावत) मुसवा– मूसा, चूहा। अगहन में धान कटने के कारण इतना अनाज होता है कि चूहा भी सात बीबियाँ रख सकता है।

अति का फूला सैंजना, डाल पात से जाए। सैजना/सहजन जिसमें अत्यधिक फूल और फलियाँ लगती है और उसके बाद पतझड़ हो जाता है। कहावत का अर्थ है कि धन या पद मिलने पर अहंकार नहीं करना चाहिए।

अति पित आदमी, सोए निद्रा घोर, अनपढ़िया आतम कही, मेघ आवे घनघोर। अत्यधिक पित्त प्रकृति वाला आदमी यदि दिन में भी घोर निद्रा में सोए तो अनपढ़(किन्तु अनुभव से भरपूर) आतम कहते हैं कि घनघोर वर्षा होगी।

मंगनी का बैल, चांदनी रात, जोत भाई सारी रात। (मांगे का बैल, मशक्कत से जोतो) । दूसरे की चीज को लोग बेरहमी से प्रयोग करते हैं।

मंगनी के बैल के दांत नहीं देखे जाते बैल। अच्छे गुण वाला है या नहीं इसकी पहचान उसके दांत देख कर की जाती है। अब अगर आप किसी से बैल मांग कर ला रहे हैं तो उसके दांत थोड़े ही गिनेगे। मांगी हुई वस्तु में गुण दोष नहीं देखे जाते।

खेत को खोवे गेली, साधु को खोवे चेली।

गेली– खेत में से हो कर जाने वाला रास्ता। खेत अगर छोटा हो और उस में से भी रास्ता निकाल दिया जाए तो खेत में बचेगा ही क्या। कि चेली के मोह में पड़ जाने से साधु की साख धूमिल हो जाती है।

खेत खाय गदहा, मार खाय जुलहा।

गधा यदि किसी का खेत चरे तो उस को पालने वाले जुलाहे को मार पड़ती है। अपने से सम्बन्धित किसी व्यक्ति की गलती का दंड स्वयम् को भुगतना पड़े।

खेत खाय पड़िया, भैंस का मुँह झकझोरा जाय। बच्चों की गलती की सजा माँ बाप को भुगतनी पडती है।

खेत बिगाड़े खरतुआ और सभा बिगाड़े दूत।

दूत से अर्थ यहाँ चुगलखोर है। खरतुआ– खरपतवार जो खेत में अपने आप उगती है।

खेत बिगाड़े सौभना, गांव बिगाड़े बामना।

सौभना– बन ठन के घूमने वाला। इसका अर्थ है कि जो व्यक्ति अपने कपड़ों पर ज्यादा ध्यान देता है वह व्यक्ति खेत को बिगाड़ देता है। कहावत की दूसरी उक्ति है कि ब्राह्मण गांव को बिगाड़ता है। यह उक्ति सम्पूर्ण ब्राह्मण वर्ग के लिए न हो कर केवल लालची पंडितों को लक्ष्य कर के कही गई है।

खेत भला न झील का, घर अच्छा नहिं सील का।

झील के किनारे का खेत अच्छा नहीं होता क्योंकि झील में पानी बढ़ने से उसके डूबने का डर रहता है। जिस घर में सीलन हो वह घर भी अच्छा नहीं होता।

खेत में तरकारी को बघार नहीं लगता। हर कार्य के लिए स्थान अलग अलग उपयुक्त होते हैं।

खेत में बुरी नाली और घर में बुरी साली। खेत में नाली का होना नुकसान की बात है और घर में साली का स्थायी रूप से रहना अच्छा नहीं है।

खेत रखे बाड़ को, बाड़ रखे खेत को। ये दोनों एक दूसरे की रक्षा करते हैं व एक दूसरे के पूरक हैं।

खेतिहर गये घरा, दाएँ बाएँ हरा।
हर– हल। खेत का मालिक घर गया तो मजदूर हल छोड़ कर दाएँ बाएँ हो गए।

खेती उत्तम काज है, इहि सम और न कोय। सब को खाबै को मिले, खेती कीजे सोय।।
खेती सबसे अच्छा काम है जिससे अपना निर्वाह तो होता ही है, दूसरे प्राणियों को भी खाने को मिलता है।

खेती कर आलस करे, भीख मांग सुस्ताय। सत्यानास की क्या कहें, अठ्यानास हो जाए।
खेती करने वाला यदि आलस करे और भीख मांगने वाला यदि सुस्ताने बैठ जाए तो इन का विनाश होना तय है। अठ्यानास– सत्यानाश से भी बड़ा नुकसान।(व्यन्ग– सत्या को सात मानकर अठ्या को आठ कहा)

खेती कर कर हम मरे, बहुरे के कोठे भरे।
किसान प्राण पण से खेती करता है और बदहाल रहता है। साहूकार और व्यापारी अपना घर भरते हैं।

खेती करे न बनिजे जाय, विद्या के बल बैठा खाय। बनिज (वणिज)– व्यापार। विद्वान व्यक्ति खेती या व्यापार करे बिना अपने ज्ञान के बल पर पैसा कमाता है।

खेती करे सांझ घर सोवे, काटे चोर हाथ धरि रोवे।
खेती करने वाले को खेत की रखवाली करनी पड़ती है। अगर नहीं करेगा तो चोर काट के ले जाएंगे। कहावत का अर्थ सभी व्यापारों पर लागू होता है।

खेती करै वणिक को धावै, ऐसा डूबै थाह न पावै।
खेती करने वाला यदि सूदखोर से उधार लेता है तो बहुत परेशानी में पड़ता है। वणिक– बनिया।

खेती खसम सेती। खेती/व्यापार में लाभ तभी होता है जब खसम/मालिक स्वयं उसकी देखरेख करे।

खेती जो कर हल हांकें, वह खेती कुछ नहीं जो सांझ सवेरे झांकें।
जो किसान लग कर अपने हाथ से खेती करते हैं उन्हीं की खेती सफल होती है, जो सुबह शाम खेत का चक्कर लगा आएं उनकी खेती सफल नहीं होती।

खेती तो थोरी करे, मेहनत करे सिवाय, राम चहें बा मनुस को टोटो कबहुं न आए।
खेती यदि थोड़ी भी हो तो भी मेहनत करने वाले व्यक्ति को धन की कमी नहीं होती।

खेती धन की नास, जो धनी न होवे पास, खेती धन की आस, धनी जो होवे पास।
खेती करने वाले का वहीं रह कर खेती करना आवश्यक है। धनी/धणी–स्वामी।

खेती धान के नास, जब खेले गोसइयां तास। जब किसान ताश खेलता रहता है तो उसकी खेती स्वाभाविक रुप से नष्ट हो जाती है। गोसाईं– गोस्वामी, मालिक।

खेती बिनती पत्री और खुजावन खाज, घोड़ा आप संवारिये जो प्रिय चाहो राज।
खेती, पाती, बीनती, परमेसर को जाप, पर हाथां नहिं कीजिये, करिए आपहिं आप।
खेती, पानी, बीनती (अर्ज़ी) औ घोड़े की तंग, अपने हाथ संभारिये लाख लोग हों संग।

खेती, अर्जी, चिट्ठी, खुजली, घोड़े की देखभाल, घोड़े की रास संभालना, ईश्वर की भक्ति, खेत में पानी देना जैसे कुछ कार्य अपने हाथ से करने पर ही सफल होते हैं।

खेती रहिके परदेस मां खाय, तेखर जनम अकारथ जाय।
अपने खेत होते हुए भी पैसों के लिए परदेश जाता है तब उसका जन्म ही निरर्थक है।

खेती राज रजाए, खेती भीख मंगाए। फसल अच्छी हो जाए तो किसान राजा हो जाता है, चौपट हो जाए तो भीख मांगने की नौबत आ जाती है।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

खेती हो चुकी, हल खूँटी ऊपर। काम ख़त्म हो गया अब औजार उठा कर रख दो।

खेती, बेटी, गाभिन गाय, जो ना देखे उसकी जाय। खेती, बेटी और गाभिन गाय की देख–रेख करनी पड़ती है, अगर इन पर नजर नहीं रखी गई तो ये हाथ से निकल जाएंगी।

गहिर न जोते, बोवे धान, सो घर कुठला भरे किसान।(घाघ)
धान की बुआई के लिए खेत को गहरा नहीं जोतना होता है।

गुरु शुक्र की बादरी, रहे शनीचर छाए। कहे घाघ सुन घाघनी, बिन बरसे नहिं जाए।।
बृहस्पति से शनिवार तक यदि बादल छाए रहें तो वर्षा अवश्य होती है।

गेंवड़े खेती हम करी, कर धोबन से हेत, अपनी करी का से कहें, चरो गधन ने खेत।
गाँव के पास के हिस्से को गेंवड़ा कहते हैं। वहाँ के खेत को गाँव के आवारा पशु चर जाते हैं। ऊपर से धोबन से प्रेम कर लिया तो उस के गधे ने भी खेत चर लिया। अपनी गलतियों से कोई नुकसान उठाए तो यह कहावत कही जाती है।

गोबर, मैला, नीम की खली, या से खेती दूनी फली।
जब कृत्रिम खाद का रिवाज़ नहीं था तो गोबर, मल और नीम की खली की खाद ही लगाई जाती थी। कहावत में कहा गया है कि इन से खेती दोगुनी हो जाती है। जैविक खेती

गोबर, राखी, पाती सड़े, फिर खेती में दाना पड़े।(घाघ) गोबर, राख और पत्तियों को सड़ा कर उनकी खाद बना कर खेत में डालो, उस के बाद बीज बोओ। जैविक खेती

छोड़े खाद जोत गहराई, फिर खेती का मज़ा दिखाई। जैविक खेती
खेत को गहरा जोत कर उस में खाद डालनी चाहिए तभी खेती का मजा आता है।

छोटे सींग औ छोटी पूंछ, ऐसा बरधा लो बेपूछ। बरधा– बैल। अच्छे बैल की पहचान बताई गई है।

धन के तेरह, मकर पचीस, दिन जाड़े दो कम चालीस। चिल्ला जाड़ा अड़तीस दिन का होता है।

धन के पन्द्रा मकर पचीस। जाड़ा परै दिना चालीस। राशि के हिसाब से चिल्ला बताया गया है कि धन राशि के पन्द्रह दिन और मकर राशि के पच्चीस दिन बहुत जाड़ा पड़ता है।

बटिया खेती सांट सगाई, जा में नफा कौन ने पाई। खेती को बटाई पे करने पर नफा नहीं मिलती और सांटे की सगाई (जिस घर में लड़की दी जाए उसी घर की लड़की को बहू बना कर अपने घर में लाया जाए) में दहेज़ आदि नहीं मिलता।

लहटी गाय गुलेंदे खाय, दौड़ दौड़ महुआ तले जाय। गुलेंदा– महुआ का फल। जिस गाय को गुलेंदे खाने की लत लग जाती है वह दौड़ दौड़ कर महुआ के पेड़ तक जाती है। जिस चीज़ का शौक लग जाए उस के लिए इंसान दौड़ भाग करता है।

सन के डंठल खेत छिटावे, तिनते लाभ चौगुनो पावे। जैविक खेती हरी खाद खेत में सन के डंठल छिटकाने से खेती बहुत अच्छी होती है।

साझे की खेती गदहे खाएं। साझे की खेती में कोई रखवाली करना नहीं चाहता इसलिए आवारा जानवर जानवर खेत खा जाते हैं।

Lok Visvas Manyta

लेखनी, पुस्तक, नारी न दो पराए हाथ । ये उसी के हो जायेगे।

लोक कहावतें व मुहावरे **Folk ProverbSayings Idioms**

सठ सेवक, नृप कृपन, कुनारी, कपटी मित्र, शत्रु सम चारी।
धूर्त नौकर, कंजूस राजा, चरित्रहीन स्त्री और कपटी मित्र ये चारों शत्रु के समान हैं।

भाई, भतीजा, भांजा, भाट, भांड, भुइंहार, इतने भ को छोड़ के फेरि करो व्यापार।
(भइअन छओ भकार से, सदा रहो होसियार)।
भ अक्षर से शुरू होने वाले इन सब लोगों के साथ व्यापार नहीं करना चाहिए। ये छः लोग कभी भी धोखा दे सकते हैं।

गेंवड़े खेती, छप्पर सांप। भाई भयकरन, बादी बाप।। गाँव से लगा खेत, छप्पर में सांप, डराने वाला भाई और मुकदमेबाज बाप ये अच्छे नहीं होते।

लोक विश्वास/मान्यता

अपना पाद सुगंध से भरा। अपने अंदर कोई दुर्गुण भी है तो भी उस को गुण बताया जाता है।

कपड़ा पैरै तीन बार, बुध–बृहस्पत–शुक्रवार

मरे को मारे शाह मदार। (दुबले मारे शाह मदार) पीर और शाह भी दुर्बल को ही सताते हैं।

फूटे लड्डू में सबका हिस्सा। लड्डू जब तक बन्धा हुआ होता है तब तक एक ही आदमी के हिस्से में आता है, पर अगर फूट जाए तो लूट मच जाती है। एकता में ही शक्ति है।

मीत बनाए न बनें , ये बैरी, सिंह और नाग। जैसे कभी न हो सकें, एक ठौर जल आग।।
प्रयास करने पर भी, शत्रु, सिंह और सांप मित्र नहीं बन सकते, जैसे आग और पानी एक साथ नहीं रह सकते।

मरने के बाद बाबा को घी पिलाने से क्या लाभ।
जो लोग जीवित माता पिता की सेवा नहीं करते और उनके मरणोपरांत कर्मकांड करते हैं।(व्यन्ग– जीवित माता पिता को सालों तक घी खिलाना है, मरने के बाद बाबा को एक बार घी पिलाने से लाभ ही लाभ)

मंगनी के सतुआ, सास के पिंडा।
मंगनी/मांगे गए सत्तू से सास का पिंडदान कर रहे है। पहली बात तो यह है कि सास का पिंडदान आप कर ही क्यों रहे हैं, साले को (यानि उन के बेटे को) करना चाहि,। दूसरी बात आप के पास पैसा नहीं है तो माँग कर क्यों कर रहे हैं। अपनी सामर्थ्य न होने पर भी किसी अनावश्यक कार्य में टांग अड़ाने की मूर्खता करना।

मगहर मरे सो गदहा होय (नरक में पड़े)।
लोक विश्वास है कि काशी में जो मरता है वह स्वर्ग जाता है, काशी के पास मगहर नामक स्थान में जो मरता है वह नर्क में जाता है।

अकडी नजर अकड़ी मकड़ी दूधमदार, नज़र उतर गई पल्ले पार। बच्चे की नजर उतारने के लिए

आँख, नाक, मोती, करम, ढोल, बोल अरु नार, इनके फूटे न भला, ढाल तोप तलवार।
आँख, नाक, मोती, कर्म(भाग्य के लिए प्रयोग किया गया है), ढोल, वचन, नारी, ढाल, तोप और तलवार, इन दसों का फूटना (खंडित होना) अच्छा नहीं होता।

खैर, खून, खांसी, खुसी, बैर, प्रीत, मदपानय रहिमन दाबे न दबें, जानत सकल जहान।
कत्थे का दाग, बहता हुआ खून, खांसी, खुशी, वैर, प्रेम और शराब का नशा, ये दबाने से नहीं दबते (छिपाने से नहीं छिपते), सारा संसार इन्हें देख लेता है (जान जाता है)।

राम नाम ले सो धक्का पावे, चूतड़ हिलावे सो टक्का पावे।

लोक कहावतें व मुहावरे **Folk ProverbSayings Idioms**

भगवान का भजन करने वाला तो धक्के खा रहा है और फूहड़ नाचने वाला पैसा कमा रहा है।

मौके का घूँसा, तलवार से बढ़ कर। सटीक मौके पर दी गई छोटी चोट भी बड़ा काम कर देती है।

खुदा का मारा हराम, अपना मारा हलाल। मुसलमान लोग अपने आप से मरे(खुदा के मारे) हुए जानवर का मांस नहीं खाते बल्कि खुद के मारे हुए जानवर का मांस ही खाते हैं

खोटा नारियल होली के लिए या पूजा के लिए।
खोटे नारियल को लोग होली में जलने वाली वस्तुओं में डाल देते हैं या पूजा में चढ़ा देते हैं।

खोदे चूहा और सोवे सांप।
चूहा बड़े परिश्रम से बिल खोदता है और सांप उस पर कब्जा कर लेता है। यही समाज का नियम है।

गंगा की राह में पीर के गीत? गंगा नहाने जाएं तो गंगा के गीत गाए, पीर के नहीं

गधे गुड़ हगने लगें तो गन्ने कौन पेरे।
आसानी से कोई चीज़ मिल जाए तो कोई मेहनत क्यों करेगा इस बात को मजेदार ढंग से कहा गया है।

घर में साला भीत में आला, आज नहीं तो कल दीवाला
दीवार में आला होने से दीवार कमज़ोर होती है और घर में साले के रहने से घर कमजोर होता है। महाभारत का शकुनि सबसे बड़ा उदाहरण है।

छुरी, छड़ी, छतरी, छलो, सदा राखिए संग।
छलो– छल्ला। ये चारों चीजें संकट में काम आती हैं इसलिए साथ रखना चाहिए।

दिये का प्रकाश धरती पर, दिए का प्रकाश स्वर्ग तक।
दीये/दीपक का प्रकाश धरती पर ही फैलता है जबकि दिए/दान का प्रकाश स्वर्ग तक फैलता है।

न मिली तो त्यागी, मिल गई तो वैरागी। स्त्री नहीं मिली तो त्यागी बन गए, मिल गई तो वैरागी बन गए। (वैरागी– वैष्णवों का एक सम्प्रदाय है जिसमें स्त्री रख सकते हैं)।

नंगे को लोटा मिल्यो, बार बार हगन गयो। नंगे को लोटा मिल गया (जो उसके लिए बहुत बड़ी चीज़ है) तो वह दूसरों को लोटा दिखाने के लिए बार बार दिशा मैदान (खुले में शौच करने) जा रहा है। तुच्छ मानसिकता वाले व्यक्ति को छोटी सी चीज़ मिल जाए तो वह बहुत दिखावा करता है।

नंगे बादशाह से भी न्यारे। (नंगे लुच्चे सब से ऊँचे)। बेशर्म आदमी सब से ऊपर है।

नई बहू का दुलार नौ दिन। किसी भी नए काम का उत्साह थोड़े दिन ही रहता है। फिर सब उस के अभ्यस्त हो जाते हैं और उस में कमियाँ भी दिखने लगती हैं।

नई बहू के नए चाव। किसी भी नए काम को करने में लोगों में अधिक उत्साह होता है। जब घर में नयी बहू आती है तब घर के लोग तरह तरह से उसका लाड़ करते हैं।

नसकट पनही, बतकट जोय, जो पहलौठी बिटिया होय। तातरि कृषि, बौरहा भाई, घाघ कहें दुःख कहाँ समाय।
घाघ ने पाँच दुःख महा दुःख बताए हैं– 1 जूता (पनही) छोटा हो जो पैर की नस को काटता हो, 2 स्त्री (जोय, जोरू) जो पति की हर बात काटती हो, 3 पहली सन्तान यदि बेटी हो (अब इन बातों का महत्व कम हो गया है लेकिन पहले पुत्र होना अत्यधिक आवश्यक मानते थे), 4 खेती के लिए बहुत थोड़ी (तातरि) जमीन और 5 बौरहा भाई। बौरहा का अर्थ पागल भी होता है और गूंगा बहरा भी।

ना बारे की माँ मरे, ना बूढ़े की जोय। बिना मा का बच्चाँ और बिना पत्नी के बूढ़ा बेसहारा हो जाता है।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

पग पवित्र तीरथ गवन, कर पवित्र कछु दान, मुख पवित्र तब होत है, भज ले जब भगवान।
पैर तभी पवित्र होते हैं जब तीर्थ करने जाते हैं, हाथ दान देने से पवित्र होते हैं और मुख तब पवित्र होता है जब आप भगवान का नाम लेते हैं।

पीठ पीछे की छींक, संका ते मत झींक। पीठ के पीछे कोई छींके तो यह अपशकुन नहीं माना जाता।

पीठ पर मैल जम ही जाती है। शाब्दिक अर्थ तो स्पष्ट है, भावार्थ यह है कि जो स्थान हमारी देख रेख और कार्य क्षेत्र से दूर हो वहाँ गंदगी इकट्ठी हो जाती है।

पूरब का बरधा, दक्खिन का चीर। पच्छिम का घोड़ा, उत्तर का नीर।।
दशहरे की पूजा में बनियों के प्रतिष्ठानों में बही खाते बदले जाते हैं और उस दिन का मुख्य वस्तुओं का भाव लिखा जाता है। इस के साथ क्या चीज़ कहाँ की अच्छी होती है यह भी लिखा जाता है। उसी क्रम में उपरोक्त कहावत लिखी जाती है।

पेट नरम, पैर गरम, सर ठंडा। जो आवे वैद तो मारो डंडा।।
पुराने जमाने में जब बहुत थोड़ी सी ही बीमारियां हुआ करती थी तो लोग यह मानते थे कि सर गर्म होना बुखार का लक्षण है, पेट का कड़ा होना या फूलना पेट की बीमारी का लक्षण है और पैर ठंडे होना किसी गंभीर बीमारी का लक्षण है। अगर किसी का पेट नरम है, पैर गर्म हैं और सर ठंडा है तो उसे कोई बीमारी नहीं है। ऐसे में यदि वैद्य देखने आए तो उसे डंडा मारकर भगा दो। इस कहावत से दो बात समझ में आती हैं एक तो यह कि रोजमर्रा में होने वाली छोटी मोटी बीमारियों के यही तीन मुख्य लक्षण होते थे और दूसरी यह कि उस जमाने में भी ऐसे वैद्य होते होंगे जो झूठी मूठी बीमारी बताकर लोगों को बेवकूफ बनाते होंगे।

प्रीत करी थी नीच से, पल्ले आई कीच। सीस काट आगे धरा, अंत नीच का नीच।।
नीच व्यक्ति से प्रेम करने पर मुश्किल ही सामने आती है। चाहे कोई अपना सर काट कर सामने रख दे, नीच व्यक्ति अपनी नीचता नहीं छोड़ता।

बच्चों के पैर और बुड्ढों के मुँह खुजलाते हैं। बच्चों के पैर खुजलाते हैं अर्थात बच्चे एक जगह बैठते नहीं हैं, बुड्ढों के मुँह खुजलाते हैं मतलब बुड्ढे लोग चुप नहीं बैठते।

बच्चों से बोलूं नहीं, जवान मेरो भैया। बुड्ढन को छोडूँ नहीं चाहें ओढ़ें दस रजैयाँ (चाहें करें दय्या मैया)। पहेली
उत्तर– जाड़े का मौसम

बाड़ी बारह, हाट अठारह, घर बैठे चौबीस।
खेत से कोई चीज़ बारह रूपये में मिलती है तो बाज़ार में अठारह की और घर बैठे मंगाना चाहो चौबीस की पड़ती है। कहावत में जो अनुपात बताया गया है वास्तविकता में उस से भी बहुत अधिक अंतर होता है। सहजिविता खेती जैविक

बाप मारे, पूत साखी दे। साखी– साक्षी, गवाही। पिता ने कोई अपराध किया हो और पुत्र को गवाही के लिए बुलाया जाए तो न्याय कैसे होगा।

बारह बरस का कोढ़ी, एक ही इतवार पाक। कुछ लोग (विशेषकर ईसाई) मानते हैं कि किसी एक पवित्र इतवार को कुछ चमत्कारों द्वारा कुष्ठ रोग को ठीक किया जा सकता है। कहावत में कहा गया है कि बहुत पुराना कुष्ठ रोगी है जिसे कई बार चमत्कारिक इलाज की जरूरत है, लेकिन एक ही इतवार ऐसा पड़ रहा है। आवश्यकताएँ बहुत अधिक हों और साधन सीमित हों।

बालू जैसी भुरभुरी, धौली जैसी धूप। मीठी जैसी कुछ नहीं, जैसी मीठी चूप।।
चूप– मौन, धौली– श्वेत, धवल। मौन रहना बहुत बड़ा गुण है (क्योंकि इससे सब झगड़े शांत हो जाते हैं)। इस को इस प्रकार भी कहते हैं– सब से मीठी मौन।

भगवान मुझे अपनों से बचाए शत्रुओं से मैं अपनी रक्षा आप कर लूँगा।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

शत्रुओं से अधिक खतरा उन लोगों से है जो अपना होने का दिखावा करते हैं और मौका पाते ही पीठ में छुरा भोंक देते हैं।

राग, रसायन, नृत्य शास्त्र, नटबाजी, वैद्यंग;
अश्वारोहण, व्याकरण ज्ञान, जाने ज्योतिष अंग;
धनुष वाण, रथ हांकना, चितचोरी, ब्रह्मज्ञान;
जल तैरना, धीरज वचन, चौदह विद्या निधान।
जो मनुष्य इन चौदह विद्याओं में निष्णात हो वह पुरुषोत्तम माना जाता है।

राजा का धन तीन खाएँ, घोड़ा, रोड़ा और दंत निपोड़ा। घोड़ा– फ़ौज, रोड़ा– ईंट, पत्थर, बिल्डिंग (महल, किले आदि) और दंत निपोड़ा– दांत निपोरने वाला,चापलूस। इन्हीं तीनों पर राजा धन लुटाता है।

राजा बांधे दल, बैद बांधे मल। राजा लोगों के दल/दस्तों को बाँध कर (संगठित कर के) सेना का गठन करता है और वैद्य दवाओं द्वारा मल को बाँध कर दस्तों को रोकने का काम करता है। द्विअर्थी

रात को झाड़ू देनी मनहूस है। पुराने लोग कहते हैं कि रात को झाड़ू नहीं देनी चाहिए, इससे लक्ष्मी घर से चली जाती है। इस प्रकार की पुरानी बातों के पीछे अक्सर कोई तर्क छिपा होता है। दिए की मद्धिम रोशनी में ईंटों के फर्श पर झाड़ू लगाने में इस बात का खतरा था कि यदि कोई बहुमूल्य वस्तु जमीन पर गिर गई होगी तो दिखाई नहीं देगी और कूड़े के साथ चली जाएगी।

शंका डायन, मनसा भूत। भूत प्रेत मन की उपज होते हैं। मनसा का अर्थ इच्छा भी होता है। कहावत का अर्थ यह भी हो सकता है कि शंकाएं और इच्छाएँ, मनुष्य के शत्रु हैं।

शुक मैना राखें सबै, काक न राखे कोय। कैद होत है गुनन से, गुन बिन कैद न होय।
गुणों से ही कैद होता है, तोता मैना को सब कैद में पालते हैं, कौवे को कोई नहीं पालता।

सौ खोटों का वह सरदार, जिसकी छाती एक न बार।
जिस पुरुष की छाती पर एक भी बाल न हो उसे बहुत धूर्त माना जाता है। (लोक विश्वास)

सौ में फुली, सहस में काना। सवा लाख में एंचकताना, एंचकताना करे पुकार।
मैं मानी कैरा से हार, कैरा बुद्धि बिनासी, करे बाप की हांसी,
जिनकी नइयाँ छतियन बार, उनसे कैरा मानी हार।
फुली– जिसकी आँख में फुल्ली की बीमारी हो, एन्चकताना– भेंगा (टेपंखा), कैरा– कंजा (भूरी आँख वाला)। लोक विश्वास है कि उपरोक्त सभी प्रकार के लोग धूर्त होते हैं। सौ लोगों में एक की आँख में फुल्ली होती है, हजार में एक काना होता है और सवा लाख में एक एन्चकताना। कैरा– कंजा आदमी एन्चकताने से भी अधिक धूर्त होता है और जिसकी छाती पर बाल न हों उस से कंजा भी हार मान लेता है।

Manuhar
मनुहार

चिंता ऐसी डाकिनी, काट के जिउ को खाय। बैद बिचारा क्या करे, कितनी दवा लगाय।।
चिंता बहुत बुरी बीमारी है, मनुष्य को घुला देती है, इसकी कोई दवा भी नहीं है

साधु को दासी, चोर को खांसी, प्रेम विनास हांसी। उसकी बुध्दि विनासी, खाय जो रोटी बासी।।
दासी/शिष्या/स्त्री साधु के विनाश का कारण बनती है (साधु उस के मोह में फंस कर पतित हो जाता है), खांसी चोर का विनाश करती है (खांसने पर चोर पकड़ा जाता है), किसी की हंसी उड़ाने से प्रेम का विनाश होता है और बासी रोटी खाने से बुद्धि का विनाश होता है।

सात हाथ हाथी से रहिए, पांच हाथ सिंगहारे से। बीस हाथ नारी से रहिए, तीस हाथ मतवारे से।

हाथी से सात हाथ दूर रहें, सींग वाले जानवर से पांच हाथ, स्त्री से बीस हाथ और पागल या नशेड़ी से तीस हाथ दूर रहना चाहिए।

रिश्ता कीजे जानकर, और पानी पीजे छानकर।
शादी ब्याह का रिश्ता करने से पहले पूरी छानबीन कर लेनी चाहिए और पानी हमेशा छान कर पीना चाहिए।

पीठ पीछे की छींक, संका ते मत झींक। पीठ के पीछे कोई छींके तो यह अपशकुन नहीं माना जाता।

सम्मुख छींक लड़ाई भासैं, छींक पाछिली सुख अभिलासैं।
छींक दाहिनी धन को नासैं, वाम छींक सुख सदा प्रकासैं।।
किसी के सामने छींक आ जाए तो लड़ाई होती है, पीठ पीछे छींक आए तो अच्छा शकुन मानते हैं, दाहिनी ओर कोई छींक दे तो धन का नाश होता है और कोई बायीं ओर छींके तो शुभ होता है।

समधी चाहें दान दहेज़, लड़का चाहे जोय। सभी बराती चाहें केवल अच्छी खातिर होय।।
संसार में हर व्यक्तिको केवल अपना ही हित सूझता है।

शादी ढाई मन की एक मन– समधी का मन दान दहेज़, दूसरा मन लड़का चाहे जोय, आधा मन सभी बराती चाहें केवल अच्छी खातिर होय।

बात बिगारे तीन, अगर मगर लेकिन। शंका और संशय से बनते काम बिगड़ जाते हैं।

समधियाने और पखाने।
लोगों का मानना है कि पखाने, बेटे या बेटी की ससुराल घर के पास नहीं होनी चाहिए।

विद्या ले मर जाय पर मूरख को नहिं देय। सारे गुन जब जान ले, अंत बैर कर लेय।
विद्या ले कर चाहे मर जाओ पर मूर्ख को मत दो, वह सारी विद्या सीखने के बाद आप को ही मात देने की कोशिश करेगा।

मनुहार से बूढ़े नहीं ब्याहे जाते। बूढ़े आदमी से कोई युवा लड़की मान मनुहार से शादी नहीं कर लेती है, उस के लिए साम दाम दंड भेद प्रयोग करना पड़ता है।

मर पड़ कर तो खसम किया, और वह भी हिजड़ा निकला। किसी तरह तो शादी की और पति हिजड़ा निकला। बहुत मुश्किल से कोई काम हुआ हो और उस में भी धोखा हो जा, तो।

मुंह सुपारी, पेट, पिटारी। (मुंह सुई, पेट, कुई)। मुँह छोटा पर पेट बड़ा।
जो आदमी देखने में छोटा हो पर खाता बहुत हो। कोई हाकिम या बाबू बातें मीठी करता हो पर रिश्वत/रिश्वत/भेंट बहुत मांगता हो।

मुआ घोड़ा भी कहीं घास खाता है। मरा हुआ घोड़ा घास नहीं खाता। रिटायर्ड रिश्वत/रिश्वत/भेंट खोर हाकिम अफसरों पर भी व्यंग।

खाएगा तो हगेगा भी। कर्म का फल अवश्य मिलेगा।

गधा घूरा देख कर ही रेंके। मूर्ख व्यक्ति निकृष्ट वातावरण में ही प्रसन्न होता है।

गेंवड़े आई बरात, बहू को लगी हगास। गेंवड़ा– गाँव का बाहर का हिस्सा। गाँव के बाहर बरात आ गई है और बहू को शौच जाना है (बात उस समय की है जब शौच के लिए गाँव के बाहर जाना होता था)। जरूरी काम के समय अगर कोई आदमी विकट समस्या ले कर बैठ जाए तो।
(शिकार समय कुतिया हगासी)। हगास– शौच जाने की इच्छा।

बड़ा मरे बड़ाई को, छोटा मरे लाड़ को। वयस्क लोग जीवन में कुछ बनने के लिए संघर्ष कर रहे होते हैं। बच्चों को इस से कोई मतलब नहीं होता उन्हें केवल लाड़ प्यार ही चाहिए।

बड़ा रोवे बड़ाई को, छोटा रोवे पेट को। बड़ा आदमी अपना बड़प्पन सिद्ध करने लिए परेशान रहता है और छोटा आदमी पेट भरने के लिए।

Miya Bivi

मियां बीवी

जहां ढेर मउगी, तहँ मरद उपास। (भोजपुरी कहावत) जिस आदमी की कई पत्नियाँ होती हैं उसे भूखा रहना पड़ता है। (क्योंकि सभी एक दूसरे पर काम टालती हैं)। ढेर– बहुत सारी, मउगी– पत्नी, उपास– उपवास

पहाड़ का पानी, पहाड़ की जवानी, पहाड़ के काम नहीं आते। पहाड़ का पानी नीचे को बह जाता है और पहाड़ी युवक काम की तलाश में मैदानी इलाकों में चले जाते हैं। बहुपत्नि प्रथा का जन्म, औरत क्या करे।

अपने मियाँ दर दरबार, अपने मियाँ चूल्हे भाड़। एक आदमी क्या क्या करे। उसी से दरबार जाने को कह रहे हो, उसी को चूल्हा फूँकने को भी कह रहे हो।

मियाँ घर नहीं, बीवी को डर नहीं। पति बाहर गया हो तो पत्नियाँ आज़ाद हो जाती हैं।
सैयां गए परदेस तो अब डर काहे का। पत्नियां पतियों से डरती थीं।
बीवी घर नहीं मियाँ को डर नहीं अब कुछ लोग इस कहावत को इस तरह कहते हैं।

मियाँ नाक काटने को फिरें, बीवी कहे नथ गढ़ा दो। मियाँ इतने गुस्से में हैं कि बीवी की नाक काटने पर उतारू हैं और बीवी कह रही है कि मेरे लिए नाक की नथ बनवा दो। बिना वक्त की नजाकत देखे कोई बात कहना।

मियाँ फिरें लाल गुलाल, बीबी के हैं बुरे हवाल।
पति सजधज के छैला बने घूमते हों और पत्नी घर के कामों में ही पिसती रहती हो।

जमीं जोरू जोर की, जोर हटया और गयी। जायदाद और स्त्री बलवान के पास ही ठहर सकती है।

मियाँ बीवी राजी, तो क्या करेगा काजी।
मुगल शासन काल में शहर में काजी की एक पोस्ट हुआ करती थी जो उस समय का मजिस्ट्रेट होता था। शादी करवाना, तलाक करवाना, झगड़े निपटाना आदि उसके काम हुआ करते थे। जब मियां बीवी आपस में राजी हो तो काजी का क्या काम। जब किसी झगड़े में शामिल दो लोग आपस में सुलह कर ले तो किसी न्यायाधीश या मध्यस्थ की क्या आवश्यकता।

मैके के महुए मीठे। मायके की हर वस्तु स्त्रियों को प्रिय लगती है।

मियाँ भए गोर जोग, बीवी लाए घर योग। मियाँ बहुत बूढ़े हो गए हैं (गोर– कब्र में पैर लटकाए बैठे), और जवान बीबी लाये हैं। कोई अधिक आयु का व्यक्ति कम आयु की स्त्री से विवाह करे तो।

मियाँ रिसाने मुर्गी मारी। मियाँ जी को बहुत गुस्सा आया, और तो किसी का कुछ नहीं बिगाड़ पाए, मुर्गी मार दी। कमजोर पर गुस्सा निकालना।

मियाँ रोते क्यूँ हो, क्या करें सूरत ही ऐसी है। कुछ लोग शक्ल से ऐसे लगते हैं जैसे अभी रो पड़ेंगे। ऐसे ही लोगों के लिए कहावत।

मेहरी जस बैरी न मेहरी जस मीत। पत्नी से बड़ा प्रिय कोई नहीं हो सकता, और अगर वह दुश्मनी पर उतर आ, तो उस से बड़ा शत्रु भी कोई नहीं हो सकता।

मेहरी भतार का झगरा, बीच में बोले सो लबरा। लबरा– झूठ बोलने वाला, मेहरी भतार– पति पत्नी। पति पत्नी में झगड़ा हो रहा तो बीच में नहीं बोलना चाहि,। पति पत्नी फिर एक हो जाते हैं, बेचारा बीच में बोलने वाला झूठा सिद्ध हो जाता है।

कोई खींचे लांग लंगोटी, कोई खींचे मूंछड़ियाँ। कोठे चढ़ कर देत बांग, कोऊ मत करियो दो जनियाँ।
किसी व्यक्ति की दो पत्नियाँ हैं। वह छत पर चढ़ कर लोगों को समझा रहा है कि कोई दो बीबियाँ मत रखना। कोठा– छत

खाविंद राज बुलंद राज, पूत राज दूत राज।
पति के राज में स्त्री को जितना सुख मिलता है उतना पुत्र के राज में नहीं मिलता।

खसम का खाए, भाई का गाए। पति बेचारा सारी सुख सुविधाएं मुहैया करा रहा है लेकिन गुणगान भाई का ही करेंगी। उन स्त्रियों के लिए जो हमेशा अपने मायके की ही तारीफ़ करती हैं।

खसम किया सुख सोने को, कि पाटी लग के रोने को।
ससुराल में जो लड़की सुखी नहीं है उसका कथन।

खसम देवर दोनों एक ही सास के पूत, यह हुआ या वह हुआ।
पति के मरने पर स्त्री को देवर से विवाह करने के लिए प्रेरित करने का प्रयास।

खसम मरे का गम नहीं, घरवाली का सपना सच होना चाहिए।
एक स्त्री को यह गलतफहमी थी कि उस के सपने अवश्य सच्चे होते हैं। एक बार उस ने सपना देखा कि उस के पति की मृत्यु हो गई है। जागने पर उसने अपने पति को जीवित पाया तो वह बहुत दुखी हुई। लोगों ने कहा कि तुम्हें तो खुश होना चाहिए, तो वह बोली पति को चाहे कुछ भी हो मेरा सपना सच होना चाहिये। कितना भी नुकसान हो, अपनी मूर्खतापूर्ण सोच से चिपके रहना।

खसम मरे तो मरे सौतन विधवा होनी चाहिए। बहुत नीच प्रकृति के लोग हर हाल में दूसरे का बुरा चाहते हैं। चाहे उस में अपना कितना बड़ा नुकसान क्यों न हो जाए।

खसम वाली रांड। ऐसी स्त्री जिसका पति उसकी कोई कद्र न करता हो।

खसम ही मारे तो किसके आगे पुकारे। अगर कोई स्त्री पर अत्याचार करता है तो वह सहायता के लिए अपने पति को पुकारती है, अगर पति ही उस पर अत्याचार करे तो वह किससे सहायता मांगे।

राजा या हाकिम ही अत्याचारी हो तो जनता किस की शरण में जाए।

पांच रुपया शंकर और पच्चीस रूपये नंदी को। उलटी बात। कोई बड़े हाकिम अफसर को कम रिश्वत/रिश्वत/भेंट दे और उसके मातहत को बहुत अधिक तो यह कहावत कही जाएगी।

बड़न को बड़ो पेट। बड़े आदमियों का पेट भी बड़ा होता है। जो जितना बड़ा हाकिम होगा वह उतनी ही बड़ी रिश्वत/रिश्वत/भेंट मांगेगा।

रोटी खाते भौंकते नहीं बनता। कुत्ता जब रोटी खा रहा होता है तो भौंक नहीं पाता। कोई हाकिम रिश्वत/रिश्वत/भेंट ले रहा होता है तो गुर्रा नहीं पाता।

बड़े आदमी की एक बात, बड़े घोड़े की एक लात।
बड़े आदमी की एक ही बात और बड़े घोड़े की एक ही लात काफी होती है ।

बड़े आदमी ने साग खाया तो कहा सादा मिजाज़ है, गरीब ने साग खाया तो कहा कंगाल है।

नेताजी खद्दर पहनते हैं तो उनकी महानता मानी जाती है, गरीब आदमी पहनता है तो उसका मजाक उड़ाया जाता है।

बड़ी असामी, बड़ी फरमाइश।
1 बड़े लोगों की फरमाइशें भी बड़ी होती हैं। 2 हाकिम बड़ी असामी से बड़ी रिश्वत/रिश्वत/भेंट मांगता है।

मापा, कनिया और पटवारी, रिश्वत/रिश्वत/भेंट लिए बिन करें न यारी। (मापा– भूमि नापने वाला अमीन, कनिया– कानूनगो)। ये सभी सरकारी कर्मचारी बिना रिश्वत/रिश्वत या भेंट लिए काम नहीं करते। हाकिम

रिश्वत/रिश्वत/भेंट के चार भेद, नज़राना, शुक्राना, मेहनताना और जबराना।
रिश्वत/रिश्वत/भेंट चार प्रकार की होती है। 1 होली दीवाली हाकिम को भेंट दे आओ यह नज़राना, 2 काम कराने के बाद अपने मन से कुछ भेंट दे आओ यह शुक्राना, 3 काम कराने के बाद काम के हिसाब से पैसा दो यह मेहनताना और 4 हाकिम या बाबू ये कहे कि तू रिश्वत/रिश्वत/भेंट नहीं देगा तो काम नहीं करूंगा तो यह जबराना।

रिश्वत/रिश्वत/भेंट लेता पकड़ा गया, रिश्वत/रिश्वत/भेंट दे कर छूट गया। रिश्वत/रिश्वत/भेंट की महिमा न्यारी है। जो रिश्वत/रिश्वत/भेंट लेते हुए रंगे हाथ पकड़ा गया हो वह भी हाकिम को रिश्वत/रिश्वत/भेंट ही दे कर छूटता है।

मुआ घोड़ा भी कहीं घास खाता है। मरा हुआ घोड़ा घास नहीं खाता।
पितरों को श्राद्ध करने पर व्यंग्य। रिटायर्ड रिश्वत/रिश्वत/भेंट खोर हाकिम अफसरों पर भी व्यंग्य।

वह दिन गए जब भैंस पकौड़े हगती थी। वह दिन गए जब मुफ्त की कमाई आया करती थी। रिश्वत/रिश्वत/भेंट खोर हाकिम के रिटायर होने के बाद।

गाँठ का पैसा, साथ की जोरू, वक्त पर यही काम आते हैं। पैसा वही काम आता है जो अपने पास हो (उधार में बंटा हुआ न हो) और पत्नी वही काम आती है जो साथ रहती हो।

गाडर पाली ऊन को, बैठी चरे कपास, बहू लाया काम को, बैठी करे फरमास।
उपरोक्त कहावत में यह बात जोड़ दी गई है कि बहू लाए थे यह सोच कर कि कुछ काम धाम करेगी, पर वह बैठ कर फरमाइशें कर रही है।

घर में चाकी, घर में चूल्हा, पर घर पीसे जाय, पड़ोसन से लगी बतियाने, आटा कूकर खाय।
जो लोग घर में साधन होते हुए भी दूसरों के यहाँ चक्कर लगाते है और बातें करने में समय गंवाते हैं, उन का घर बर्बाद हो जाता है।

जोरू खसम की लड़ाई, दूध की मलाई। पति पत्नी की लड़ाई में दूसरे लोग मजा लेते हैं।

जोरू चिकनी, मियाँ मजूर। जहाँ पत्नी बहुत बन ठन कर रहती हो और पति बेचारा काम में पिसता रहता हो।

जोरू टटोले गठरी, माँ टटोले अंतड़ी।
पत्नी इस बात की चिंता करती है कि आदमी क्या कमा कर लाया है जबकि माँ इस बात की चिंता करती है कि बेटे ने कुछ खाया है कि नहीं।

जरा सा खावे बहुत बतावे वह है बहू सुघड़ेली, ज्यादा खावे कम बतलावे वह बहुतहि बिगड़ेली।
जो बहू सुघड़ होती है वह कम खाती है और कहती है कि उसने बहुत खा लिया है, जो बहू बिगडैल होती है वह अधिक खाती है और कहती है कि उसे कुछ नहीं मिला।

दबी आग और दबी बहू।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

जो लोग घर की बहू को दबा कर रखते हैं उन्हें सीख दी गई है कि दबी हुई बहू दबी हुई आग के समान खतरनाक है जो कि कभी भी विकराल रूप धारण कर सकती है।

दुलहिन नहीं देखी तो देख उसका भाई, बाघ नहीं देखा तो देख ले बिलाई।
दुल्हन के भाई को देखने से दुल्हन कैसी होगी इसका अनुमान लगाया जा सकता है। इसी तरह बिल्ली को देखने से बाघ कैसा होगा इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

दे दुआ समधियाने को, नहिं फिरती दाने दाने को।
लड़के की ससुराल से मिले माल पर कोई औरत घमंड कर रही है तो दूसरी उसे आइना दिखा रही है।

देखो खेल खुदाय का क्या क्या पलटे रंग, खानजादा खेती करे, तेली चढ़े तुरंग।
एक नवाब ने तेली की रूपवती लड़की से शादी कर ली तो तेली जाति के लोगों की महल में बहुत पूछ हो गई और नवाब के अपने खानदानी खेती कर के पेट पालने पर मजबूर हो गए।

नीक लगे ससुरार की गारी। 1 विवाह और प्रसव आदि शुभ अवसरों पर ससुराल पक्ष द्वारा गाई जाने वाली गालियाँ भी अच्छी लगती हैं। 2 ससुराल भक्त दामादों पर व्यंग्य।

पति तो पूजे देव को, भूतन पूजे जोय। एकै घर में दो मता, कुसल कहाँ से होय।
पति देवता की पूजा करता है और पत्नी भूतों की। जब पति पत्नी दोनों के मत और विश्वास एक दूसरे से एकदम उल्टे हों तो उन में नहीं निभ सकती।

पतिबरता भूखी मरे, पेड़े खाए छिनार। पतिव्रता स्त्री भूखी मरती है और चरित्रहीन स्त्रियों को पेड़े खाने को मिलते हैं। ईमानदार आदमी को रोटी मिलना मुश्किल है और धूर्त लोग मजे मार रहे हैं।

पिया गए परदेश, अब डर काहे का। पति बाहर गए हों तो स्त्रियाँ निरंकुश हो जाती हैं। यह पुरानी कहावत है, अब स्त्रियाँ मैके जाती हैं तो पति निरंकुश हो जाते हैं।

बहन मरी, तो जीजा किसके। बेटी मरी जमाई चोर।। जीजा से रिश्ता बहन के कारण ही होता है। बहन की मृत्यु हो जाए तो रिश्ते का आधार ही क्या रहा।

रंडुआ गया सगाई को, खुद को लाभ या भाई को। विधुर आदमी (विशेषकर अधिक आयु का विधुर) शादी कर रहा है। इसका लाभ उसे अधिक होगा या उसके छोटे भाई को? बात सामाजिक मर्यादा के विरुद्ध है लेकिन कहावत में यह सीख दी गई है कि अधिक आयु के व्यक्ति को कम आयु की कन्या की मजबूरी का फायदा उठा कर उस से विवाह नहीं करना चाहिए।

रांड, सांड, सीढ़ी, सन्यासी, इनसे बचे तो देखे काशी।
काशी में बहुत सी विधवा स्त्रियाँ स्थान स्थान से आ कर रहती हैं और आम तौर पर भिक्षा मांग कर गुजारा करती हैं, वहाँ की तंग गलियों में सांड भी खूब घूमते हैं, काशी के घाटों की सीढ़ियाँ खतरनाक रूप से टूटी फूटी और फिसलन भरी हैं जिनसे आसानी से कोई दुर्घटना का शिकार हो सकता है और काशी में सन्यासी भी बहुत हैं जिनमें से अधिकतर भिक्षा मांगते हैं। इन सब से बचे तो काशी घूमें।

priytam

प्रियतम

नारी तो हैं सीपियां इनका मोल न तोल। न जाने किस कोख में छिपा रत्न अनमोल।।
नारी का सम्मान करने के जो बहुत से कारण गिनाए गए हैं उनमे से एक यह भी है कि नारियाँ ही उत्तम श्रेणी के पुरुषों को जन्म देती हैं।

जब साजन की होए लुगाई, तोड़े कोट और फांदे खाई।
प्रेम में व्यक्ति किला तोड़ सकता है और खाई फांद सकता है।

जहां मेरो सैयां, वहां मेरो गइयां। मेरा गाँव वहीं है जहां मेरा पति रहता है। सुहागिन स्त्रियों का कथन।

घर हीना देना, पर वर हीना मत देना। लड़की अपने माता पिता से कहती है कि एक बार को मुझे कमजोर घर में दे देना, पर निखट्टू वर को मत दे देना।

खड़ी आई, लेटी जाऊँगी। स्त्री का ससुराल वालों से कथन। सुहागिन स्त्रियों का कथन।

चिड़ा चिड़ी की क्या लड़ाई, चल चिड़े मैं तेरे पीछे आई।
चिड़िया व चिड़े की कैसी लड़ाई, पति–पत्नी के बीच का मनमुटाव क्षणिक होता है।

आई थी बिल्ली, पूंछ थी गीली। सास और बहू पास पास लेटी थीं। सास ने कहा, जरा देख बाहर वर्षा तो नहीं हो रही। बहू ने कहा अभी बिल्ली आई थी उसकी पूंछ गीली थी इसका मतलब वर्षा हो रही है। सास ने कहा जरा दीपक बुझा दे, बहू ने कहा आँखें बंद कर लो अंधेरा हो जाएगा। सास ने कहा जरा किवाड़ बंद कर दे, बहू ने कहा, दो काम मैंने कर दिए अब एक आप भी कर लो।

आई बहू आयो काम, गई बहू गयो काम। बहू के आते ही सारे काम दिखाई देने लगते हैं (बहू से कराने के लिए) और बहू के जाते ही काम दिखाई पड़ना बंद हो जाते हैं। संस्कृत में कहावत है यावत् गृहणी तावत् कार्यं।

खुदा लड़ने की रात दे, बिछड़ने का दिन न दे। पति पत्नी, दोस्त या रिश्तेदार आपस में थोड़ा लड़ लेते हैं पर बिलकुल बिछड़ना नहीं चाहते।

क्या सासू जी अटको मटको, क्या मटकाओ कूल्हा। डोली पर से जब उतरूंगी, जुदा करूंगी चूल्हा।
जो महिलाएं बेटे की शादी में बहुत नाच कूद रही हों उन को सावधान किया गया है।

मन मोती औ दूध रस, दोनों एक सुभाय। फाटे पे जुड़ते नहीं कोटिन करो उपाय।।
मन रूपी मोती और दूध का स्वभाव एक सा होता है, ये एक बार फट जाय तो फिर नहीं जुड़ते।

आई बहू, जन्मा पूत, दोहरी खुशी। बहू घर में आई और पहली बार में ही पुत्र को जन्म दिया

खूब दुनिया को आजमा देखा। जिसको देखा तो बेवफा देखा।।
ईमानदारी और कृतज्ञता बहुत कम लोगों में मिलती है।

क्वारी को अरमान, ब्याही परेशान। कुंआरी लड़की अपने विवाह को लेकर तरह तरह के सपने देख रही है, जबकि विवाहिता स्त्री गृहस्थी की मुसीबतों से परेशान है।

खूबसूरती गहनों की मोहताज नहीं। जो वास्तव में सुन्दर है उसको सुन्दर दिखने के लिए आभूषणों की आवश्यकता नहीं होती।

Murkh
मूरख

खर, उल्लू औ मूरख नर, सदा सुखी इस घरती पर।
गधा, उल्लू और मूर्ख नर, इस धरती पर सदा सुखी हैं क्योंकि इन की कोई महत्वाकांक्षाएं नहीं होतीं।

अपनी अपनी तान में गदहा भी मस्तान में। मूर्ख लोग अक्सर आत्म मुग्धता के शिकार होते हैं।

अपनी नाक़ कटे तो कटे, दूसरे का सगुन तो बिगड़े। उन नीच प्रकृति के लोगों के लिए जो दूसरों को हानि पहुंचाने के लिए अपना नुकसान भी कर सकते हैं।

मद पिए, जात लखाय।
दारु पी कर आदमी अपना भेद खोल देता है। कोई व्यक्ति सम्भ्रांत लोगों के बीच रहता है और लोग उसे कुलीन समझते हैं। एक दिन वह सब के बीच बैठ कर शराब पी लेता है और नशे में उगल देता है कि वह किसी नीचे कुल का है या आपराधिक इतिहास वाला है।

मरन चली तो बदसगुनी हो गई। कोई स्त्री मरने के लिए जाने का नाटक कर रही है कि बिल्ली रास्ता काट जाती है। इस पर वह कहती है कि अपशकुन हो गया, अब मैं नहीं जाऊँगी। झूठ मूठ का नाटक करने वाली महिलाओं के लिए।

मरना भला बिदेस में, जहां न अपना कोय। माटी खाए जनावरा, उनका उत्सव होय।।
साधु प्रवृत्ति के व्यक्ति का कथन– मरना विदेश में अच्छा है जहाँ कोई जानने वाला न हो, पशु पक्षी शरीर को खा लें, उनका भी भला हो जाए।

मूसे ने पाई खाकी कत्तर, तो वो थानेदार बन बैठा।
ओछी बुद्धि के आदमी को छोटी सी चीज़ मिल जाए तो अपने आप को बहुत बड़ा समझने लगता है।

मूरख को दियो पान, वो लगो रोटी संग खान।
मूर्ख व्यक्ति को पान खाने को दिया तो वह उसे सब्जी की तरह से रोटी के साथ खाने लगा। कोई व्यक्ति मूर्खतावश किसी दी हुई चीज़ का गलत प्रयोग करे तो उस का मजाक उड़ाने के लिए।

मूरख मिले मौन हो जईयो, ऊसर बीज न बईयो जी। जिस प्रकार बंजर जमीन में बीज नहीं बोना चाहि, उसी प्रकार मूर्ख व्यक्ति को ज्ञान की बात समझाने का प्रयास नहीं करना चाहि,।

मूस मोटइहें लोढ़ा हुइहें, न हाथी न घोड़ा हुइहें। चूहा कितना भी मोटा क्यों न हो जाय, हाथी या घोड़ा नहीं बन सकता। कोई ओछा आदमी धन या अधिकार पा कर महान नहीं बन सकता।

तू मेरे घूँघट की रख, मैं तेरी मूंछों की रक्खूँ। पत्नी का पति से कथन– तुम मेरी स्त्री सुलभ लज्जा और मर्यादा का ध्यान रखो, मैं तुम्हारे पुरुषत्व का मान रखूँगी।

तूने की रामजनी, मैंने किया रामजना। रामजनी– वैश्या। वेश्यागामी पति से परेशान कोई स्त्री उस से कह रही है कि तू वैश्या के यहाँ जाता है तो जा, मैं ने भी एक यार पाल लिया है।

तेरह बरस की तिरिया, पन्द्रह बरस का पुरख। अक्ल आई तो आई नहीं तो रहा जरख।
स्त्री में यदि तेरह वर्ष की आयु तक और पुरुष में पंद्रह वर्ष की आयु तक अक्ल न आये तो उसे जरख– लकडबग्घा, जानवर समझ लेना चाहिए। ।

निपट कठिन हठ मोसे कीन्हीं रे सैयां। किसी चाहने वाले ने कोई बहुत कठिन शर्त रख दी है।

सोना लेने पिय गए, सूना कर गए देस। सोना मिला न पिय मिले, चांदी हो गए केस।
पति पैसा कमाने विदेश चले गए। बेचारी पत्नी को न पैसा मिला, न पति मिले, प्रतीक्षा में बाल सफ़ेद हो गए। व्यापार के सिलसिले में जो, लोग लम्बे समय तक बाहर रहते हैं उन के लिए।

Nirbal

निर्बल

निर्बल को दैव भी सतावे। कमजोर व्यक्ति को विधाता भी सताता है।

दिल्ली के बांके, जूती में सौ सौ टाँके। दिल्ली वालों का मज़ाक उड़ाने के लिए कहा गया है। अपने आप को बड़ा भारी अफलातून समझते हैं और जूते में मार तमाम टांके लगे हुए हैं।

मकोड़ा कहे, मां गुड़ की भेली उठा लाऊं। मा कहे, के अपनी कमर तो देख।।
अपनी सामर्थ्य देखे बिना कोई काम करने की योजना बनाने वालों के लिए कहावत है।

अपनी अपनी तान में गदहा भी मस्तान में। मूर्ख लोग अक्सर आत्म मुग्धता के शिकार होते हैं।

अपनी घानी पिर जाए, फिर चाहे तेली के बैल को शेर खा जाए।
निपट स्वार्थ। अपना काम निकल जाए, फिर चाहे कोई मरे या जिए।

अपनी चाल में गधा भी मस्ताना। 1 ईश्वर ने आत्म मुग्धता का अधिकार सब को दे रखा है।
2 अधिक इठला कर चलने वालों का मजाक उड़ाने के लिए।

अपनी नाक़ कटे तो कटे, दूसरे का सगुन तो बिगड़े। उन नीच प्रकृति के लोगों के लिए जो दूसरों को हानि पहुंचाने के लिए अपना नुकसान भी कर सकते हैं।

अपने पूत कुआँरे फिरें, पड़ोसी के फेरे।
अपने लड़कों की शादी नहीं हो रही है, पड़ोसियों के सम्बन्ध कराते घूम रहे है। उन लोगों के लिए कहा गया है जो अपने घर की समस्याएं सुलझा नहीं पाते और परोपकारी बने फिरते हैं।

पेट में आंत न मुंह में दांत। अत्यधिक बुढ़ापा, जरावस्था।

रूठे बाबा, दाढ़ी हाथ।
बूढ़ा आदमी नाराज होता है तो अपनी दाढ़ी पकड़ता है। इस को इस तरह भी कह सकते हैं कि बूढ़े आदमी की घर में कोई पूछ नहीं है। वह रूठेगा भी तो अपनी ही दाढ़ी नोचेगा।

मंगती और छुआ छूत करे। मांगने वाले को यह अधिकार नहीं होता कि वह छुआछूत करे।

मंगते से माँगना, जैसे बुढ़िया से सगाई।
भिखारी से भीख माँगना और बूढ़ी औरत से विवाह करना एक समान हैं।

मैला कपड़ा, पतली देह, कुत्ता काटे कौन संदेह। गरीब, दुर्बल को व गाँव वालों को दुष्ट हाकिम, सरकारी कर्मचारी रिश्वत/रिश्वत/भेंट को परेशान करते हैं।

खिचड़ी खाते पाहुंचा उतरा। बहुत नाज़ुक व्यक्ति का मज़ाक उड़ाने के लिए। पाहुंचा– कलाई

गरीबी तेरे तीन नाम, लुच्चा, गुंडा, बेईमान। अमीरी तेरे तीन नाम परसा, परसी, परसराम।
गरीब को सब लुच्चा, लफंगा और बेईमान कहते हैं जबकि वही अगर अमीर हो जाए तो उस से इज्ज़त से बात करने लगते हैं। गरीब को परसा कहते थे, उस पर थोड़ा पैसा आया तो परसी भाई कहने लगे और वह सम्पन्न हो गया तो परशुराम जी कहने लगे।

चने चिरौंजी हो गए, गेहूँ हो गए दाख। घर में गहने तीन हैं, चरखा, पीढ़ी, खाट।।
अत्यधिक गरीबी। चने और गेहूँ मिलना इतने मुश्किल हो गए जैसे चिरौंजी और किशमिश। घर में जो मूल्यवान वस्तुएं बची हैं वे हैं– चरखा, बैठने का पीढ़ा और खाट।

चमार के मनाने से डांगर नहीं मरते। डांगर– गाय, भैंस, बकरी आदि। चमार के मनाने से पशु नहीं मरते। अर्थात किसी के चाहने से दूसरे का अनिष्ट नहीं हो जाता। (कहावत उस समय की है जब चर्मकार

बन्धुओं का जीवन अत्यंत दयनीय था। उन बेचारों की जीविका केवल मरे हुए जानवरों पर ही निर्भर थी। आधुनिक भारत में अब सब के लिए समान अवसर उपलब्ध हैं)

चमरिया को चाची कह दिया तो चौके में चली आई।
किसी निम्न कुल की स्त्री को कुछ सम्मान दे दिया तो वह ज्यादा सर चढ़ गई। (कहावतें तत्कालीन समाज का दर्पण होती हैं। इस कहावत में उस समय व्याप्त छुआछूत और जात पांत का सटीक चित्रण है। यह कितना भी आपत्तिजनक और निन्दनीय क्यों न हो, उस समय की सच्चाई यही है)।

चमार चमड़े का यार। जिसका जो काम होता है उसको उसी से सम्बन्धित चीजों में रूचि होती है। (चर्मकार को चमड़े में, लोहार को लोहे में, मिस्त्री को ईंट गारे में)।

तेरा यार मर गया, कौन सी गली का। वेश्याओं के बहुत सारे ग्राहक होते हैं। सभी अपने आप को उसका खास दोस्त समझते हैं। उनकी नासमझी पर क्या कहें।

वकीलों का हाथ पराई जेब में।
वकील हर समय अपने मुवक्किलों की जेब से पैसा निकालने की फिराक में रहते हैं।

सुखे सिहुला, दुखे दिनाइ, करम फूटे तो फटे बिबाई।
सिहुला– छीप (एक प्रकार का फंगल इन्फेक्शन जिस में खुजली नहिं होती, केवल हल्के रंग के छोटे छोटे गोल चकत्ते बन जाते हैं), दिनाई– दाद। जिन को सिहुला होता है उन्हें कोई कष्ट नहीं होता, जिन्हें दाद होता है उन्हें खुजली के कारण कुछ कष्ट (दुःख) होता है पर जिनके पैर में बिबाई फट जाएँ उन्हें बहुत अधिक कष्ट होता है।

सूखे कुएं से घड़ा नहीं भरता।
जिस के पास स्वयं कुछ न हो वह किसी को कैसे कुछ दे सकता है।

सूखो भोजन, कुलरिनी, औ कुलच्छनी नार। पाँव पन्हैया है नहीं, नरकों के फल चार।
कुलरिनी– जिसको बाप दादों का कर्ज उतारना हो। यह चार चीजें धरती पर ही नरक भोगने की निशानी हैं– रूखा सूखा भोजन, बाप दादाओं की कर्जदारी, चरित्रहीन पत्नी और बिना जूते के पैर।

Rajniti
राजनीति

चूहों की मौत बिल्ली का खेल। अहंकारी, अत्याचारी, राजनेता व अमीर प्रजा लोग मन बहलाते हैं और गरीब की जान पर बन आती है।

अरे बिजूका खेत के काहे अपजस लेत। आप न खावे खेत को और न खाने देत।।
बिजूका– काकभगोड़ा। खेत में खड़े पुतले से कहा जा रहा है कि तू क्यों चिड़ियों की बद्दुआ ले रहा है, न खुद खाता है, न ही उन्हें खाने देता है। ईमानदार कर्मचारी से भी भ्रष्ट हाकिम सहकर्मी ऐसा ही बोलते हैं। राजनीति

न अंधे को न्योता देते, न दो जने आते। अंधे को बुलाओगे तो अंधा खुद तो आएगा ही, किसी को साथ में ले कर भी आएगा। ऐसा कोई काम करो ही क्यों? जिसमें उम्मीद से अधिक खर्च हो।

गढ़ों और मठों के बंटवारे नहीं होते। बंटवारे से राजसत्ता और धर्मसत्ता कमजोर होती है। जिस प्रकार वारिसों के बीच संपत्ति का बंटवारा होता है उस प्रकार से राज्य और मठ का बंटवारा न कर के किसी एक ही व्यक्ति को उत्तराधिकारी बनाया जाता है।

हम चरावें दिल्ली, हमें चरावे गाँव की बिल्ली। हम इतने होशियार हैं कि दिल्ली वालों को उल्लू बना लेते हैं और ये गाँव की छोरी हमें बेवकूफ बना रही है।

खाना घर में, भौंकना सड़क पे। (खाना मन्दिर में, भौंकना मस्जिद में)। जो आजीविका दे रहा हो उसका काम न कर के दूसरे का काम करना।

मार पीछे पुकार होती रहे। मौके पर आगे बढ़ कर मार लो, उसके बाद चीख पुकार होती रहे।

मारि के टरि जाए, खाय के परि जाए। कहीं मार पीट करनी पड़े तो मारने के बाद के वहाँ से भाग लेना श्रेयस्कर है और भोजन कर के आराम करना अच्छा है।

मेढ़ा जब पीछे हटे, बैरी जब मीठा बोले। मेढ़ा जब पीछे हटे तो समझ लो कि टक्कर मारने वाला है, शत्रु जब मीठा बोले तो समझ लो कि नुकसान पहुँचाने वाला है।

खाई दाल तबेले की, अक्कल होवे धेले की।
तबेला माने घोड़ों के बाँधने का स्थान (अस्तबल)। घोड़े को जब तबेला में रहने की आदत पड़ जाती है तो उस का दिमाग खराब हो जाता है। कहावत का अर्थ है कि सरकारी नौकरी लगते ही हाकिम आदमी के दिमाग में सुरूर आ जाता है। रिश्वत की आस।

कौवा कोसे ढोर मरें, तो रोज़ कोसे। रोज़ मारे, रोज़ खाए।
कौए के कोसने से अगर ढोर (गाय भैंस आदि) मरने लगें तो कौआ रोज कोस कोस कर उन्हें मार कर खाएगा। अन्धविश्वासी लोगों को सीख दी गई है।

कौवों की बरात में बड़े कौए की पूछ। निकृष्ट लोगों के यहाँ कोई आयोजन होता है तो सब से निकृष्ट आदमी की विशेष पूछ होती है।

पढ़े तोता पढ़े मैना, कहीं सिपाही का पूत भी पढ़ा है।
एक बार को तोता और मैना पढ़ सकते हैं पर सिपाही का बेटा नहीं पढ़ के देता (वह रिश्वत/रिश्वत/भेंट की कमाई से बिगड़ जाता है और अपने पिता की ताकत के नशे में चूर रहता है)।

खाए हुए को खिलाना आसान। 1 भरे पेट पर आदमी कम खाएगा। 2 जिस के विषय में पता हो कि वह रिश्वत/रिश्वत/भेंट खोर है उस को रिश्वत/रिश्वत/भेंट खिलाना आसान है।

खाएं भीम, हगें शकुनि। काम कोई और करे, फल किसी और को मिले

खाया पिया अंग लगेगा, दान धर्म संग चलेगा। धन पड़ा–पड़ा जंग लगेगा।।
आदमी को अधिक धन संग्रह के लालच में नहीं पड़ना चाहिए। अच्छा खाओगे तो शरीर स्वस्थ होगा, दान करोगे तो पुन्य मिलेगा जो कि परलोक में साथ जाएगा। इकठ्ठा किया हुआ पैसा केवल जंग खाएगा।

मारा चोर, उपासा पाहुन, लौटता नहीं। मार खाया हुआ चोर और भूखे लौटाया हुआ अतिथि दोबारा नहीं आते। उपासा– उपवास कराया हुआ।

मालिक मालिक एक से। जैसे मालिक लोग मिल कर नौकरों की बेबकूफियों की बातें करते हैं वैसे ही नौकर भी जब आपस में मिलते हैं तो अपने मालिकों की बेबकूफियों और ज्यादतियों की चर्चा करते हैं।

गई सोभा दरबार की सब बीरबल के संग। बीरबल से ही अकबर के दरबार की शोभा थी। बीरबल की मृत्यु के बाद अकबर के दरबार में वह बात नहीं रही।

गाय तैरी, भैंस तैरी, बकरी बिचारी डूब मरी।
बड़ी आपदाओं को बड़े लोग तो झेल लेते हैं पर छोटे बेचारे मटियामेट हो जाते हैं। तैरी– तैरना

गुरु, बैद अरु जोतसी, देव, मंत्रि औ राज। इन्हें भेंट बिन जो मिले, होए न पूरन काज।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

गुरु, वैद्य, ज्योतिषी, देवता, मंत्री और राजा, इनसे जो भी बिना भेंट(रिश्वत/रिश्वत/भेंट) लिए मिलता है उसका कार्य पूर्ण नहीं हो सकता।

घर का कुआँ है तो क्या डूब कर मरोगे।
घर में कोई सुविधा उपलब्ध है तो उसका मूर्खतापूर्ण दुरूपयोग नहीं करना चाहिए।

घर का बामन बैल बराबर। घर में कोई विद्वान व्यक्ति हो तो उसकी कद्र नहीं होती।

घर का लड़का चाकी चाटे, ओझा जी को सीधा।
घर के लोग भूखों मर रहे हैं और झाड़ फूंक करने वालों पर धन बर्बाद किया जा रहा है

घर के चोर के खोज कैसे मिलें। खोज– पैरों के निशान। कहीं पर चोरी होती है तो पैरों के निशान देख कर यह पता लगाया जाता है कि बाहर से कौन आया होगा। घर के किसी आदमी ने चोरी की हो तो पैरों के निशान से कोई सहायता नहीं मिलेगी।

घर बैठे आधा भला। घर बैठे थोड़ा लाभ भी मिल जाए तो वह बाहर भटक कर मिलने वाले अधिक लाभ से अच्छा है।

चार लठा के चौधरी पांच लठा के पंच। जिनके घर में छह लठा, वो अंच गिनें न पंच।।
जिस घर के चार सदस्य लठैत हों वह गाँव का चौधरी बन जाता है, जहाँ पांच लाठी चलाने वाले हों वह पंच, जहाँ छह हों वह किसी को कुछ नहीं गिनता।

चोर को कहे घुसो और कुत्ते को कहे भूँसो। ऐसे बहरूपिये नेताओं के लिए जो अपराधियों से सांठ गांठ करते हैं और पुलिस प्रशासन को उनसे निपटने के लिए निर्देश देते हैं।

जब कुर्सी अफसर पर सवार तब उल्टी गंगा बहे।
जब अफसर पर पद का अहंकार हावी हो जाता है तो वह सारी मर्यादाएँ भूल जाता है।

ज्यादा पढ़े तो घर सों गए, थोड़ा पढ़े सो हर सों गए।
हर– हल। ज्यादा पढ़ लिख कर बच्चे बाहर नौकरी करने चले जाते हैं याने घर से जाते हैं और थोड़ा बहुत पढ़ जाएँ तो हल चलाने में शर्म महसूस करने लगते हैं।

ज्यादा मेहनत से गधा हो जाता है। इतना अधिक परिश्रम नहीं करना चाहिए कि आदमी गधे से भी गया गुजरा हो जाए।

ज्वर, याचक और पाहुना, करजा मांगनहार। लंघन तीन कराए दो, फेर न आवें द्वार।
कहावत में यह सुझाव दिया गया है कि कर्ज़ मांगने वाले, भीख मांगने वाले और मेहमान को तीन चार बार टरका दो तो वह फिर नहीं आएगा। लंघन कराना– भूखा रखना। पहले के लोग मानते थे कि भूखा रहने से ही बुखार उतरता है।

झाड़ को जेरी, गंवार को लठा। कोदों की रोटी को, भैंस का मठा।
झाड़ से निबटने को जेली की जरूरत होती है, मूर्ख व्यक्ति से निबटने को लट्ठ और कोदों की रोटी पचाने के लिए भैंस के दूध का मट्ठा जरूरी होता है। जेरी– झाड़ियाँ आदि हटाने का औजार।

टका धर्मः टका कर्मः टका देवो महेश्वरः, टका कर्ता टका हर्ता टका मोक्ष विधायका।
टका– रुपया पैसा। पैसे की ही सारी महिमा है।

थोथे बांस कड़ाकड़ बाजें। ठोस बांस को पटकने पर आवाज नहीं होती, पर खोखला बांस को पटकने पर जोर की आवाज होती है। कहावत में यह समझाया गया है कि अल्पज्ञानी व्यक्ति बहुत बोलता है।

टट्टू मारे घोड़ा काँपे (ताजी मारे तुर्की काँपे)। कौआ मार खेत में लटकाना

किसी एक को सजा मिले तो दूसरों के मन में भी डर बैठ जाता है।

दुष्ट नारि और मित्र शठ, परै जानिए जाय। बसे सर्प घर बीच ही, जाने कब उठ खाय।।
दुष्ट नारी और कपटी मित्र को घर में नहीं बसाना चाहिए। इनको घर में रखना सांप पालने के बराबर है।

देने के लिए दीवालिया और लेने के लिए शाह। जब उधार वापस करने की बात आती है तो अपने को दीवालिया बताते हैं और जब किसी से उधार लेना होता है तो अपने को बहुत बड़ा आदमी बताते हैं।

धन का धन गया, मीत का मीत गया। (धन का धन गया, मीत की प्रीत गयी)।
दोस्ती और रिश्तेदारी में पैसा उधार देने में यह खतरा हमेशा रहता है कि पैसा भी वापस न मिले और पैसा वापस मांगने पर सम्बन्ध भी खराब हो जाएँ।

धनवंती के कॉंटा लगा, दौड़े लोग हजार। निर्धन गिरा पहाड़ से, कोइ न करे विचार।।
(धनवंती के कांटा लगा पूछे सब कोय। निर्धन गिरा पहाड़ से पूछे ना जोय।।)। धनवान को जरा सा भी कष्ट हो तो सब पूछने आते हैं, गरीब को कितना भी बड़ा कष्ट हो, कोई नहीं पूछता। (घर की जोरू भी नहीं पूछती)।

धाकड़ चोर, सेंध में गावे।
आमतौर पर चोर सेंध लगा कर जल्दी से चोरी कर के भाग जाते हैं। परन्तु जो चोर आत्म विश्वास से भरा होता है उसे कोई जल्दी नहीं होती। कोई हाकिम सरकारी कर्मचारी बिना किसी से डरे घर जा कर रिश्वत/रिश्वत/भेंट मांगे और धौंस दिखाए तो भी यह कहावत कहते हैं।

वो ही पूत पटेलों में और वो ही गोबर चुगवा में। सरकारी मुलाजिम है

धान पान पनिआए, बाभन खूब खिलाए। कायथ घूस दिलाए, नान्ह जात लतिआए।।
धान और पान के पौधे खूब पानी देने से खुश होते हैं (तेजी से बढ़ते हैं), ब्राह्मण खूब खिलाने से, कायस्थ हाकिम सरकारी कर्मचारी को घूस देने से और छोटी जात के लोग लात खा कर खुश रहते हैं। यह एक कडवा सच है कि सामंत शाही व्यवस्था में तथाकथित उच्च जाति के लोग वंचितों पर बहुत अत्याचार करते थे।

खाए सिपाही नाम कप्तान का।
अधीनस्थ कर्मचारी रिश्वत/रिश्वत/भेंट लेते हैं तो भी हाकिम की बदनामी होती है।

हाकिम की अगाडी और घोड़े की पिछाडी, छिनरे की छाया, सबसे बचो।
मर्द की अगाड़ी और घोड़े की पिछाड़ी।
हाकिम के सामने खड़े रहोगे तो कुछ न कुछ काम बताता रहेगा। एक तो काम में पिसना पड़ेगा, ऊपर से अगर काम कुछ गड़बड़ हो गया तो नाराजगी अलग। इसलिए उसके सामने ही मत पड़ो। बात को और अधिक वजन देने के लिए घोड़ी की पिछाड़ी का उदाहरण साथ में जोड़ दिया गया। घोड़े के पीछे खड़े होने में दुलत्ती खाने का डर है। कुछ महिलाएं इस कहावत को इस तरह बोलती हैं– मर्द की अगाड़ी और घोड़े की पिछाड़ी से बचना चाहिए। कुछ लोग इस को और बढ़ा कर बोलते हैं– हाकिम की अगाड़ी, घोड़े की पिछाड़ी, छिनरे की छाया, सबसे बचो। छिनरा– चरित्रहीन व्यक्ति।

हाकिम के तीन, अधिनों के नौ।
रिश्वत/रिश्वत/भेंट के तीन हिस्से हाकिम तक पहुँचते हैं, नौ हिस्से अधीनस्थ लोग खा जाते हैं।

नए नए हाकिम, नई नई बातें। नया नवाब, आसमान पर दिमाग।।
नए हाकिम अपने को तुर्रम खां समझते हैं। नए हाकिम अपनी ऐंठ में नए कायदे लागू करने की कोशिश करते हैं और बरसों से वहाँ जमे लोग उनका मजाक उड़ाते हैं।

नकटा बूचा और हाकिम, सबसे ऊँचा।
नंग बड़े परमेश्वर से

बूचा माने कान कटा कुत्ता (जो काफी मनहूस माना जाता है)। और अगर वह नकटा भी हो तो क्या कहने। कुल मिला कर यहाँ नकटा बूचा का अर्थ महा निर्लज्ज और मनहूस आदमी से है। इस प्रकार के हाकिम आदमी से सब डरते हैं।

मार गुसैंया तेरी आस।
जब राजा हाकिम और जमींदार जैसे लोग गरीब पर अत्याचार करते हैं तो वह भी ऐसा ही बोलता है। हमारे ऊपर जब भी कोई कष्ट आए हमें ईश्वर से यही कहना चाहिए। गुसैंया– स्वामी, मालिक

नखरे दिखावे मुर्गी (लाड़ में आवे कुकड़ी), बल बल जावे कौवा।
कुछ फूहड़ लडकियाँ जो अपने को अधिक सुन्दर समझती हैं, नखरे दिखाती हैं और छिछोरे लड़के उन नखरों पर बलिहारी जाते हैं, इस प्रकार के जोड़ों का मजाक उड़ाने के लिए। वर्तमान में रील बनाने वाले

नागों के ब्याह में गोहरे बराती। दुष्टों के आयोजन में दुष्ट ही शामिल होते हैं।

नामरदी तो खुदा की देन है, मार मार तो कर।
किसी कायर पुरुष को उलाहना दी जा रही है कि खुदा ने तुझे नामर्द (कायर) बनाया है, तू आगे बढ़ कर मार नहीं सकता तो मार मार चिल्ला तो सकता है।

नौ पुरबिया तेरह चौके (नौ कनौजिया तेरह चूल्हे)। पुरबिया/ कनौजिया लोगों में एकता नहीं होती।

नौ नकटों में एक नाक वाला भी नकटा। अयोग्य व्यक्तियों के बीच रहने से योग्य आदमी भी अयोग्य बन जाता है।

नौकर का चाकर, चाकर का कूकुर(चूतड़) और कूकुर की पूंछ का बाल
बड़े हाकिमों के महकमे के जो छोटे से छोटे कर्मचारी भी अपने को तुर्रमखां समझने लगते हैं, साहब एक नौकर हैं। साहब के नौकर के नौकर और उस के कुत्ते जितनी तुम्हारी औकात है, अपने को ज्यादा मत समझो। जो लोग इस के इसके आगे बोलते हैं– और कूकुर की पूंछ का बाल। कहीं कहीं इस कहावत में चाकर का कूकुर के स्थान पर चाकर का चूतड़ बोला जाता है।

नौकरी ताड़ की छांव। ताड़ के पेड़ की छाया बहुत थोड़ी और अपर्याप्त होती है। इसी प्रकार नौकरी की कमाई अपर्याप्त होती है (पहले के समय में नौकरी में बहुत कम वेतन मिलता था)। रिश्वत/रिश्वत/भेंट लेने वाले कर्मचारी रिश्वत/रिश्वत/भेंट को सही ठहराने के लिए भी ऐसा कहते हैं।

नौकरी में सात खाविंद रिझाने पड़ते हैं। बहुत सी स्त्रियों को यह शिकायत होती है कि उन्हें अपने पति को खुश रखने के लिए बहुत यत्न करने पड़ते हैं।

हिमायती/हाकिम की गधी, हाथी को लात मारे।
जिस कर्मचारी का हाकिम पक्ष लेता है वह निरंकुश हो जाता है।

न्याव को और भाव को, कोउ भरोसा नाहिं।
राजा के न्याय और बाजार के भाव के विषय में कोई अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

पंसेरी वाली भी दुह लेता है और पाव वाली भी।
जो भ्रष्ट हाकिम अमीर गरीब सब से रिश्वत/रिश्वत/भेंट ले लेता हो। पंसेरी वाली– पांच सेर दूध देने वाली गाय, पाँव वाली– पाँव भर दूध देने वाली गाय।

परखना हो किसी को तो उस के यार देख लो। यदि किसी व्यक्ति की सच्चाई जाननी हो तो यह मालूम करो कि उसके मित्र किस बौद्धिक और सामाजिक स्तर के हैं।

पहले मार, पीछे संवार। मौका मिलने पर पहले ठुकाई कर दो और बाद में बात को संभाल लो।

पेट घुसे तो भेद मिले। किसी से मित्रता बढ़ा कर और अंतरंगता स्थापित कर के ही उस के मन का भेद लिया जा सकता है।

फूहड़ का माल, सराह सराह खाइए। मूर्ख व्यक्ति की तारीफ़ करते जाइए और उसका माल खाते जाइए

बिगड़ी लड़ाई सिपाहियों के सिर। हारी हुई लड़ाई का ठीकरा सिपाहियों के सर फोड़ा जाता है। कोई पार्टी चुनाव हारती है तो कार्यकर्ताओं पर दोष डालती है।

बीच की उँगली बड़ी होती है। किसी भी विवाद के निवारण में बीच का मार्ग सबसे अच्छा होता है।

लाठी हाथ में तो सब साथ में। जिस के पास शक्ति है उस का सब समर्थन करते हैं।

शेर का झूठा, गीदड़ खाय। नेताओं और बड़े आदमियों के चमचों पर व्यंग्य।

शेर की आँख स्यार पहचाने। नेता का मूड चमचा पहचाने।

Shistachar

शिष्टाचार

चारण मत कर चतुर्भज, नाई कीजे नाथ। आधी गद्दी बैठवों, माथा ऊपर हाथ।
हे चतुर्भूज (भगवान विष्णु), मुझे चारण मत बनाना, नाई बनाना क्योंकि नाई राजा के पास गद्दी पर बैठता है और राजा के मस्तक पर हाथ रखता है।

अनजान पानी में न उतरो। जिस पानी की गहराई न मालूम हो उस में नहीं उतरना चाहिए। जिस काम के खतरे न मालूम हों उस को नहीं करना चाहिए।

बुढ़िया मरे का गम नहीं, पर जम घर देख गए।
बुढ़िया मर गई इस बात का गम नहीं है पर इस बात की चिंता है कि यमदूत घर देख गए (अब दोबारा जल्दी न आ धमकें)।

रानी जी राग गावें, तो सौ जनी सिर हिलावें। रानी कोई भी काम करें तो उसकी तारीफ़ करनी पड़ती है।

अरे जौहरी बावले सुन मेरे दो बोल। बिन गाहक मत खोल तू गठरी रतन अमोल।
जौहरी को सीख दी जा रही है कि तू बिना उपयुक्त ग्राहक के अपने अमूल्य रत्नों की गठरी मत खोल। अगर कोई मूर्खों के बीच में ज्ञान बांटने की कोशिश कर रहा हो तब भी ऐसा कहा जाता है

अल्कस नींद मर्द को मारे, नार को मारे हांसी। अधिक ब्याज बनिए को मारे, चोर को मारे खांसी।।
पुरुष को आलस्य, स्त्री को हंसी मज़ाक, बनिये को अधिक ब्याज, (क्योंकि उसे न लौटा पाने से रकम डूब जाती है) और चोर को खांसी मार देती है।

आँखों के आगे नाक, तो सूझे क्या ख़ाक। 1 विवेक के आगे जब व्यक्ति का अहम आ जाता है तो उसे कुछ भला बुरा नहीं दीखता। 2 जब कोई चीज़ सामने रखी हो और आप उसे ढूँढ़ न पा रहे हों।

हरामजादे से खुदा भी डरता है। बेशर्म आदमी से भगवान भी डरते हैं। (नंग बड़े परमेश्वर से)।

जबर की जोय महतारी लागे, निबल की जोय मोरी साली।
बलवान की पत्नी माँ लगती है और निर्बल की पत्नी साली। कमजोर को सब दबाते हैं।

मट्ठा मांगन चली, और मलैया पीछे लुकाई।
मलैया– छोटी मटकी, लुकाई– छिपाई। माँगने भी जा रही हैं और शर्म भी आ रही है।

मान का पान भला, न अपमान का लड्डू।
व्यक्ति का सम्मान सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। सम्मान के साथ मिलने वाला पान, अपमान हो कर मिलने वाले लड्डू से बेहतर है।

मान का माहुर, न अपमान का लड्डू। माहुर– विष। अपमान सह कर लड्डू खाने की अपेक्षा सम्मान सहित जहर पीना श्रेयस्कर है।

जहाँ चार गगरी तहाँ लड़बे करी। जहाँ चार पनिहारिनें होंगी वहाँ आपस में लड़ाई तो होगी ही। स्त्रियों की लड़ने की आदत

मान मनाई खीर न खाई, झूठी पातर चाटन आई।
सम्मान के साथ परोसी गई खीर नहीं खाई और अब झूठी पत्तल चाटने आई हो। जो व्यक्ति उचित समय पर मिलने वाले सम्मान को ठुकरा दे और फिर घटिया काम कर के अपनी बेइज्जती कराए।

मन मन भावे, मूढ़ी हिलावे। कोई काम करने का या कुछ खाने का आपका अंदर से बहुत मन कर रहा है पर ऊपर से आप मना कर रहे हैं।

मन मन भावे मूढ़ हिलावे, साजन से कहियो मोहे लेने को आवे।
कहीं–कहीं पूरी कहावत इस प्रकार कही जाती है।

मना करने वाले की खिचड़ी में ही घी डाला जाता है। जो मना करता है उसी का अधिक आतिथ्य किया जाता है।

मुंह देख कर तिलक। जैसी आदमी की हैसियत होती है वैसा ही उसका सत्कार होता है।

मुंह पर मुमानी, पीठ पीछे सूअर खानी। सामने मुमानी (मुसलमानों में मामी को मुमानी कहते हैं) कह कर प्यार जता रहे हैं और पीठ पीछे सूअर खाने वाली कह रहे हैं (मुसलमानों में सूअर खाना हराम है इसलिए किसी को सूअर खाने वाली कहना बहुत बड़ी गाली है)।

बढ़ें तो अमीर, घटें तो फकीर, मरें तो पीर।
मुसलमानों के विषय में अन्य धर्म वालों का व्यंग्य– वे तरक्की करते हैं तो अमीर बन जाते हैं, नुकसान हो जाए तो फकीर बनने का नाटक कर के मौज करते हैं और मर जाएं तो पीर बन कर अपनी पूजा करवाते हैं। मतलब हर परिस्थिति का लाभ उठाते हैं।

मुहर्रम की पैदाइश। मनहूस आदमी।

मुरव्वत में मातियन गाभिन हो गई। मातियन– नाइन। एक नाई काफी लम्बे समय के लिए परदेस गया। लौट के आया तो देखा कि पत्नी गर्भवती है। उसने पूछा कि यह कैसे हुआ। तो नाइन बोली कि वह संकोच में मना नहीं कर पाई इसलिए किसी ने उस का गलत फायदा उठा लिया।

मुफलिस से माँगना हराम है। गरीब से कुछ नहीं माँगना चाहिए।

मुफलिसी सब बहार खोती है, मर्द का ऐतबार खोती है।
1 बहार आती है तो गरीब को उससे क्या लाभ।
2 गरीब आदमी पर कोई विश्वास भी नहीं करता। मुफलिसी– गरीबी।

ख़ास ख़ास को टोपली, बाकी को लंगोट।

कुछ चुने हुए लोगों को टोपी दी गयी परन्तु शेष लोगों को लंगोट ही मिला। कुछ विशेष चयनित लोगों का तो सम्मान किया गया परन्तु शेष लोगों को जैसे–तैसे ही निपटा दिया गया। मुफलिसी को लंगोट

गन्ने से गंडेरी मीठी, गुड़ से मीठा राला। भाई से भतीजा प्यारा, सब से प्यारा साला।।
रिश्तों की मिठास को प्रकट करने वाली कहावत।

गुरु कहै सो करो, करे सो न करो। गुरु के उपदेशों का पालन करो, गुरु जो करते हैं उसकी नकल मत करो। (गुरु में कोई गलत आदत भी हो सकती है)।

गोद मोल का छोरा, निहाल किसको करे। गोद लिया हुआ या मोल लिया हुआ बेटा किसी को सुख नहीं दे सकता। जब वह बड़ा होता है तो लोग उसे बता देते हैं कि वह गोद लिया हुआ है इसलिए उस के मन में उतना प्रेम नहीं आ सकता।

गोद लड़ायो छोकरो, चढ़ा कचहरी जाट। पीहर लड़ाई पद्मिनी, तीनों बारहबाट।।
गोद लिया बेटा, कचहरी के चक्कर लगाने वाला जाट और मैके से लड़ कर आई स्त्री इन तीनों का भविष्य अच्छा नहीं होता।

घी कबीरा खा गया, छाछ पाई संसार।
ज्ञान का घी कबीर ने चख लिया, दुनिया को बची हुई छाछ ही मिली है।

घाघरे का चीलर, पालते बने न निकालते बने।
घाघरे में चीलर लग जाए तो सब के सामने निकाल भी नहीं सकती और न निकाले तो वह काटता रहेगा। कोई संबन्धी यदि नीचता पर उतारू हो जाए तो इसे कहा जाता है।

घायल दुश्मनों में, साँस ले तो मरे साँस न ले तो मरे।
घायल व्यक्ति दुश्मनों के बीच में सांस रोक के पड़ा है, अगर सांस लेगा तो दुश्मन समझ जाएंगे कि वह जिन्दा है और उसे मार डालेंगे। अगर सांस नहीं लेगा तब भी मर जाएगा। बहुत बड़ी दुविधा में फंसे व्यक्ति के लिए।

चोर और सांप दबने पर चोट करते हैं। अर्थ तो स्पष्ट है, लेकिन जो सीख इस में द्वारा दी गई है वह याद रखने योग्य है। चोर व सांप को पकड़ते समय भी और पकड़ने के बाद सावधान रहना चाहिए।

जाइए दुःख में पहले, सुख में पीछे।
किसी की यहां कोई दुःख का अवसर हो उस में फौरन जाना चाहिए चाहें सुख के प्रसंग में बाद में चले जाएं।

तेरी मेरी बोली में बस इतना ही फरक। तू तो कहे फ़रिश्ता, मैं कहूँ था जरख।।
जरख– लकड़बग्घा। किसी मुसलमान की कब्र खोद कर लकडबग्घा उस की लाश को ले गया। एक जाट ने यह देख लिया। उसने जब मुसलमान के घरवालों को यह बात बताई तो वे बोले कि वह तो लकड़बग्घा नहीं फ़रिश्ता था।

तोला के पेट में घुंघची।
घुंघची– रत्ती (एक तोले में 96 रत्ती होती हैं)। अर्थ है कि बड़ी चीज़ में छोटी चीज़ समा जाती है।

थोड़ा करें गाज़ी मियाँ, ज्यादा गाएं डफाली। डफाली– डफली बजा कर गाने वाले, भाट/कवि/इतिहसकार। राजा, साधु, महात्मा लोग थोड़ा सा भी कुछ करते हैं तो उनके प्रशंसक/डफाली, भाट/कवि/इतिहसकार बहुत बढ़ा चढ़ा कर बताते है।

दूर जमाई फूल बराबर गावँ जमाई आदो। घर जमाई गधे बराबर, जितना चाहे लादो।
जो दामाद दूर रहता है वह फूल के समान प्रिय होता है, जो उसी गाँव में रहे वह कुछ कुछ प्रिय और सम्माननीय होता है, पर जो ससुराल में रहे वह गधे के समान लादा जाता है।

दूर देस से साजन आया, ऊंची मैंड़ी पलंग बिछाया। खाय पीय कर रहिया सोय, लेना एक न देना दोय।
1 ऐसे व्यक्ति के लिए जिसे अपनी पत्नी से कोई आसक्ति न हो।
2 किसी विशिष्ट अतिथि के लिए अच्छा प्रबन्ध करो और वह कोई तवज्जो न दे।

दूल्हा ढाई दिन का बादशाह। ढाई दिन की बादशाहत का मुहावरा अलिफ़ लैला के एक किस्से से आया है जिसमें किसी गरीब आदमी को ढाई दिन के लिए बादशाह बना दिया गया था। दूल्हे की शान भी केवल ढाई दिन की होती है, बारात लौटने के बाद उसे कोई नहीं पूछता।

देस चाकरी, परदेस भीख। अपने शहर या गाँव में व्यक्ति लज्जा के कारण भीख नहीं मांग सकता, इसलिए नौकरी ही कर सकता है। लेकिन परदेस में (जहाँ उसे कोई जानता न हो) भीख मांग सकता है।

नए चिकनियाँ, अंडी का फुलेल। कहावत उन के लिए है जिन्हें नया नया फैशन का शौक चढ़ा हो लेकिन शऊर न हो। ऐसे कोई साहब अंडी के तेल को इत्र समझ कर लगा रहे हैं।

नानक नन्हा हो रहो, जैसे नन्ही दूब। बड़े पेड़ गिर जाइ हैं, दूब खूब की खूब। गुरु नानक देव कहते हैं कि व्यक्ति को विनम्र और छोटा बन कर रहना चाहिए। जब आंधी आती है तब बड़े पेड़ गिर जाते हैं लेकिन दूब पर कोई असर नहीं होता।

Swarth

स्वार्थ

अपना हाथ जगन्नाथ। जिनके पास अपने हाथ से काम करने का हुनर है वे सबसे अधिक भाग्यशाली हैं। संपत्ति छीनी जा सकती है पर हाथ का हुनर हमेशा आपके पास रहता है।

अपना ही माल जाए, आप ही चोर कहलाए। जिस का नुकसान हुआ हो उसी को चोर साबित करने की कोशिश की जाए तो ऐसा कहते हैं। भारत की पुलिस अक्सर ऐसे कारनामे करती है।

अपनी घानी पिर जाए, फिर चाहे तेली के बैल को शेर खा जाए। निपट स्वार्थ। अपना काम निकल जाए, फिर चाहे कोई मरे या जिए।

अपनी हैसियत से अतिथि का सत्कार करो, अतिथि की हैसियत से नहीं। यदि हमारे घर कोई ऐसा अतिथि आता है जो हमसे बहुत अधिक सम्पन्न है तो हमें उसके सत्कार में झूठे दिखावे के लिए अपनी हैसियत से अधिक खर्च नहीं करना चाहिए और यदि कोई छोटा व्यक्ति आए तो उस का भी भली प्रकार सत्कार करना चाहिए (छोटा आदमी समझ कर टरका नहीं देना चाहिए)।

अपने से बचे तो और को दें। (अपने से बचे तो बाप को दे)। स्वार्थी लोगों के लिए कहा गया है।

मिलन लगे दूध भात, बिसर गए माई बाप। जब व्यक्ति को सब सुख सुविधाएं मिलने लगती हैं तो वह माँ बाप को भूल जाता है।

मीठी छुरी, जहर की भरी। जो लोग बोलते तो मीठा हैं पर उन के मन में कपट होता है, उन के लिए।

मीठी मीठी बात से बनते बिगड़े काम। मीठी बोली से बिगड़ी हुई बात बन जाती है।

लदनिये ही लादे जाते हैं। जो अधिक काम करते हैं उन पर ही काम लादा जाता है।

मीठे के लिए जूठा खाए। अल्पकालिक लाभ के लिए जो गलत काम करे उस के लिए कहा गया है (विशेषकर वैश्यागामियों के लिए)।

चढ़े कचेहरी, बिके मेहरी। जो कचहरी के चक्कर में पड़ेगा उसका घर बार बिक जाएगा। मेहरी– स्त्री।

चित्त लगा भोजन में, कवित्त को कहवें।
मन तो भोजन में लगा है और कविता सुनाने को कहा जा रहा है।

नींद न जाने टूटी खाट, प्यास न जाने धोबी घाट।
भूख न जाने कच्चा भात, प्रीत न जाने जात कुजात।।
पहले के जमाने में समाज में यह नियम था कि विवाह सम्बन्ध अपनी जाति वालों से ही करना चाहिए। उस समय दूसरी जाति में विवाह करना (विशेषकर नीची जाति में) बहुत आपत्तिजनक माना जाता था। तब यह कहावत बनाई गई कि प्यार करने वाले ऊंची नीची जाति नहीं देखते। इस कथन को अधिक प्रभावी और मनोरंजक बनाने के लिए अन्य तीन बातें भी जोड़ दी गईं कि नींद आ रही हो आदमी टूटी खाट नहीं देखता, प्यास लगी हो तो धोबीघाट का गंदा पानी भी पी लेता है और भूख लगी हो तो कच्चा भात भी खा लेता है।

भांग मांगे भूगड़ा, सुल्फा मांगे घी, दारू मांगे खूंसड़ा, खुसी आवे तो पी।
भूंगड़ा– भुने चने। भांग की तरंग मसाले दार भुने चने खाने से कम होती है और सुल्फे की खुश्की घी से, दारू पी के जो दिमाग फिरता है वह जूते लगने से ठीक होता है, जिसको जिसमें ख़ुशी हो वही पियो।

चाकर से कूकुर भला, जो सोये अपनी नींद। पहले के लोग नौकरी को बुरा समझते थे क्योंकि उस में किसी की गुलामी करनी पड़ती है। कहते थे कि नौकर से तो कुत्ता अधिक आजाद है।

चातुर की चेरी भली, मूरख की नार से।
कोई काम कराना हो तो बुद्धिमान व्यक्ति की नौकरानी से कहना बेहतर है बामुकाबले मूर्ख की स्त्री के।

चाबी /रिश्वत लागे ही ताला खुले। सही युक्ति से ही कोई कठिन काम पूरा किया जा सकता है।

जाका ऊंचा बैठना, जाका खेत निचान, ताका बैरी क्या करे, जाका मीत दिवान।
जिस का बड़े लोगों में उठना बैठना हो, खेत नीची जगह पर हो और मंत्री या कोतवाल जिसके मित्र हों उसका कोई क्या बिगाड़ सकता है।

जाट कहे सुन जाटनी, तोको इसी गाँव में रहना, ऊँट बिलाई लै गई तो हांजी हांजी कहना।
जाट अपनी पत्नी को समझा रहा है की तुझे इसी गाँव में रहना है। कोई प्रभावशाली आदमी अगर यह कहे कि बिल्ली ऊँट को उठा ले गई, तो भी उसकी हाँ में हाँ मिलाना। जिस समाज में आप रह रहे हैं वहाँ की बहुत सी गलत बातें न चाहते हुए भी स्वीकारनी पड़ती हैं।

जिनके बड़े बिछाई खाट, उनका कुनबा बारह बाट।
जिस खानदान में बड़े लोग खाट बिछा कर बैठ जाएं अर्थात कुछ काम न करें, उसका सत्यानाश होना तय है।

जिन्ने न पी गांजे की कली, उस लड़के से लड़की भली।
नशा करने वाले मूर्ख लोग अपने को बड़ा मर्द समझते हैं, उनके अनुसार नशा न करने वाले लोग नामर्द होते हैं।

जिस घर सौंफ महकनी, उस घर जीरा कौन लिवाल। जिस घर सास मटकनी, उस घर बहू को कौन हवाल।
बेटे की शादी हो जाए और बहू घर में आ जाए उस के बाद भी कुछ औरतें बहुत चटक मटक से रहती हैं, उन्हीं के ऊपर व्यंग्य। लिवाल– लेने वाला।

जोगी जोगी लड़े खप्परों की हानि, जोगियों की लड़ाई में खप्पर फूटते हैं।
खप्पर– मिट्टी का बना भिक्षा मांगने का पात्र, खोपड़ी को भी खप्पर कहते हैं। कहावत का अर्थ है कि यदि किसी संगठन या परिवार के सदस्य आपस में लड़ते हैं तो घर और व्यापार की हानि होती है।

जुत जुत मरें बैलवा, बैठे खाएं तुरंग।

बैल बिचारे हल जोत जोत कर जान देते हैं और घोड़े बैठे बैठे खाते हैं। मेहनतकश लोग मेहनत करते हैं और धनी लोग व हाकिम लोग उसका लाभ उठाते हैं।

बकरा / हाकिम मुटाय, तब लकड़ी खाय।
बकरा ज्यादा मोटा हो जाता है तो लड़ाका हो जाता है, इसलिए पिटता है। रिश्वत / रिश्वत / भेंट

लीद ही खाए तो हाथी की खाए जिससे पेट तो भरे।
रिश्वत / रिश्वत / भेंट ही खानी है तो किसी बड़े मामले में खाओ जिससे पेट तो भरे।

शेर चूहों का शिकार नहीं करते बड़े हाकिम छोटी रिश्वत / रिश्वत / भेंट नहीं खाते।

जो खड़े मूते, उसे छींटों का क्या डर।
जान बूझ कर गलत काम करने वाले को उसके दुष्परिणामों की चिंता नहीं होती।

जो गंवार पिंगल पढ़े, तीन वस्तु से हीन, बोली, चाली, बैठकी, लीन्ह विधाता छीन।
गंवार यदि पढ़ लिख भी जाए तो भी उसकी बोली और चाल ढाल संभ्रान्त लोगों जैसी नहीं हो सकती। पिंगल का अर्थ है– छंद शास्त्र।

टूटी की बूटी नहीं, नहीं काल की टाल। रिश्ते टूट जाए तो फिर जुड़ नहीं सकते (इसलिए कभी किसी से सम्बन्ध तोड़ने नहीं चाहिए) और मृत्यु को कोई टाल नहीं सकता। बूटी– दवा।

ढपोर शंख। ढपोर शंख की कथा कही जाती है कि उस से कोई एक चीज़ मांगो तो वह कहता था कि मैं तुम्हें दो दूँगा, पर देता कुछ नहीं था। आजकल के बहुत से नेता भी ऐसे ही हैं। (देना लेना कुछ नहीं हामी भरूं करोड़)।

तड़के का मेंह और सांझ का बटेऊ टला नहीं करते। सुबह सुबह जो बादल घिर कर आता है वह बरसता जरूर है (टलता नहीं है)। जो अतिथि शाम को घर आता है वह टिकता जरूर है (टलता नहीं है)।

ताड़ पेड़ के नीचे दूध भी पिए तो लोग समझें कि ताड़ी पिए है। बुरी संगत में रह कर अच्छा काम भी करोगे तो लोग गलत ही समझेंगे।

तिल गुड़ भोजन तुरक मिताई, गेंवड़े खेती गाँव सगाई। पहले सुख पीछे दुखदाई, मतकर भाई मतकर भाई।
तिल गुड़ से बनी मिठाई, मुसलमान की दोस्ती, गाँव के पास खेती और अपने ही गाँव में सगाई यह सब शुरू में अच्छे लगते हैं पर बाद में कष्ट देते हैं।

तिसरी पीढ़ी सुधरे या तिसरी पीढ़ी बिगड़े।
जो आज निर्धन है उस की तीसरी पीढ़ी धनवान हो सकती है, और जो आज सम्पन्न है उस की तीसरी पीढ़ी निर्धन हो सकती है। ऐसा इसलिए होता है कि निर्धन परिवार में अधिकतर बच्चे विनम्र और परिश्रमी होते हैं, जबकि धनी के बच्चे आलसी और नकचढ़े।

तीन बुलाए तेरह आए, दे दाल में पानी। किसी ने घर में दावत आयोजित की। जितने लोग बुलाए थे उससे बहुत अधिक लोग आ गए। खाना कम पड़ने की नौबत आ गई। तो बेचारे ने दाल में पानी मिलाकर उसे पतला किया। तब से यह कहावत बन गई। किसी भी कार्य में यदि अनुमान से बहुत अधिक खर्च होने की नौबत आने लगे तो जुगाड़ करनी पड़ती है। ऐसे में यह कहावत प्रयोग की जाती है।

तीसरे दिन मुरदा भी हलाल है। मुसलमान अपने आप मरे हुए जानवर को खाना हराम मानते हैं। लेकिन अगर कोई मुसलमान तीन दिन से भूखा हो तो मरे हुए जानवर को खाना भी हलाल (धर्म सम्मत) मान लिया जाता है। आशय है आपातकाल में धर्म अधर्म नहीं देखा जाता।

तुम्हारे मरे देस पाक, हमारे मरे देस ख़ाक।

आज कल के नेता एक दूसरे के लिए ऐसा कहते हैं, तुम मरोगे तो देश में से गंदगी कम होगी और हम मर गए तो देश बर्बाद हो जाएगा।

तुरक की यारी, तूम्बे की तरकारी, अंत खारी की खारी।
तुर्क से दोस्ती करोगे तो शुरू में चाहे ठीक लगे पर बाद में पछताना पड़ेगा। इसी प्रकार तूम्बे की सब्जी खाने के बाद कड़वी लगती है। तुरक– तुर्क, तुर्की (ज्नतामल) के लोगों को तुर्क कहा जाता है। मुग़ल लोग तुर्की से नहीं आये थे लेकिन आम बोल चाल की भाषा में उन्हें भी तुर्क कहा जाता था। तरकारी– सब्जी।

तुरक, ततैया, तोतरा जे सब किसके मीत। भीर परत मुख मोड़ लें, राखें नाहीं प्रीत।।
तुर्क, ततैया और तोता ये किसी के मित्र नहीं होते। संकट के समय मुँह मोड़ लेते हैं

थका ऊँट सराय ताकता। जब ऊँट थका हुआ होता है तो वह सराय की ओर ताकता है (कि कब मालिक सराय में पहुँचे और कब उसे विश्राम मिले)।

थके का सहारा, तम्बाकू बिचारा।
तम्बाखू का सेवन करने वाले अपने को सही ठहराने के लिए ऐसे बोलते हैं।

दम भाई, सगे भाई। और भाई घसर पसर।। नशा करने वालों में बड़ा तगड़ा भाईचारा होता है।

दमी यार किसके, दम लगाया खिसके।
गांजा, सुल्फा, चरस और स्मैक आदि पीने वाले नशेड़ी लोगों को दमी (दम लगाने वाला) कहा जाता है। जहाँ कहीं नशे के अड्डे होते हैं वहाँ ये लोग पहुँच जाते हैं और दम लगा कर वहाँ से खिसक लेते हैं। कहावत स्वार्थी लोगों के लिए कही गई है जो अपना स्वार्थ पूरा होते ही वहाँ से निकल लेते हैं।

दमड़ी की हंडिया गई सो गई, कुत्ते की जात तो पहचानी गई।
कोई सज्जन अच्छी नस्ल का समझ कर एक महंगा कुत्ता खरीद कर लाए। एक दिन मौका मिलते ही कुत्ता आंगन में रखी हंडिया ले कर भाग गया। वह सज्जन इस घटना से उदास हो कर बैठे थे तो किसी सयाने ने उन्हें इस तरह से समझाया। आपका कोई दोस्त, रिश्तेदार या नौकर धोखा दे तब भी यह कहावत कही जाती है।

दाग लगाए लँगोटिया यार। जिगरी दोस्त आपकी बहुत बदनामी कर सकता है (क्योंकि वह आपके सब राज जानता है)।

दाता कहने से बनिया गुड़ देता है। यदि किसी से कोई काम निकालना हो तो उसकी प्रशंसा करनी चाहिए। बनिए से कहोगे कि भाई आप बड़े दानी दाता हो तो वह खुश हो कर गुड़ दे देगा।

दाद खाज अरु सेउआ बड़भागी के होंय, पड़े खुजावें खाट पर बड़ी अनंदी होय।
दाद, खाज और राज, बड़भागी को ही मिलते हैं। जो बेचारे दाद, खाज और खुजली से परेशान हों उन का मजाक उड़ाने के लिए यह कहावत कही गई है (कि वे बड़े भाग्यवान हैं जो खाट पर पड़े खुजाने का आनंद ले रहे हैं)। कोई खुजली से मरा जा रहा हो तो उस के जले पर नमक छिड़कने के लिए। दाद और खाज की तुलना राज्य मिलने से की गई है।

दावत में सबसे पहले पहुँचो और लड़ाई में सबसे बाद।
दावत में पहले पहुँचने का फायदा यह है कि सबसे बढ़िया और ताज़ा माल खाने को मिलता है, जहाँ लड़ाई हो रही हो वहाँ बाद में इसलिए पहुँचो कि तब तक खतरा टल चुका होता है।

दुधारू भी उतना खाय, जितना खाय बाँझ। घर व समाज के लिए जो उपयोगी व्यक्ति है उस पर जितना खर्च होता है उतना ही खर्च निठल्ले (अनुपयोगी) व्यक्ति पर भी होता है।

दुनिया मुर्दापरस्त है। दुनिया मरे हुए लोगों की ही प्रशंसा करती है।

दुबला जेठ देवर बराबर।

परिवार का कोई बड़ा बूढ़ा व्यक्ति यदि साधन सम्पन्न न हो तो उस की कोई इज्जत नहीं होती। जेठ यदि गरीब है तो उससे देवर जैसा व्यवहार किया जाता है।

दुरंगी छोड़ दे एक रंग हो जा, सरासर मोम हो या संग हो जा।
मोम– मोम की तरह मुलायम, संग– पत्थर (पत्थर की तरह सख्त)। दो तरह का व्यक्तित्व मत पालो, या विनम्र बनो या सख्त। इस को इस प्रकार भी कहते हैं– दो रंगी छोड़ दे एक रंग हो जा, या किनारे हो ले या संग हो जा।

दई दई का करत है, दई दई सो कबूल।
दई– दैव, दई– दिया है। दैव– दैव क्यों चिल्लाते हो। दैव (ईश्वर) ने जो दिया है उसे स्वीकार करो। इस दोहे की पहली पंक्ति इस प्रकार है– दीरघ सांस न लेय दुख, सुख साई न भूल।

नाम क्या शकरपारा, रोटी कितनी खाई दस बारा,
पानी कितना पिया मटका सारा,
काम कितना करोगे, मैं तो लड़का बेचारा।
छोटे और पेटू लोगों के लिए जो खाते बहुत हैं पर काम कुछ नहीं करना चाहते।

निखट्टू भाई, नित उठ कर हलुआ मांगे। जो कोई काम नहीं करते वे अधिक सुविधाएं मांगते हैं।

बाघन मारी बकरी और कुत्ते हड्डी खाएँ।
1 शक्तिशाली लोग कोई उद्यम करते हैं तो समाज के कमजोर लोगों को भी उस का लाभ मिलता है।
2 बड़े अपराधी बड़े अपराध करते हैं और छोटे अपराधी उनके साए में फलते फूलते हैं।

बैद्य, धनी, राजा, नदी, अरु पंडित नहिं होय, जहाँ पाँच ये न हुए, वहाँ बसो न कोय।
किसी भी समाज के अस्तित्व के लिए ये पांच आवश्यक हैं, जहाँ ये न हों वहाँ जीवन जीना कठिन है।

माँ मर गई तो मर गई, खीर तो खाली। नीच और स्वार्थी व्यक्ति। माँ मरने का दुःख नहीं है, मृत्युभोज में खीर खाने को मिल रही है, इस बात से खुश हैं।

कातिक कुतिया, माह बिलाई, चैत में चिड़िया, सदा लुगाई

बामन कुत्ता नाउ, जात देख गुर्राउ

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सन्दर्भ सौजन्य साभार
बुन्देली कहावत कोष कृष्णानन्द गुप्त